पटल बाबू : एक संस्मरण

ठाकुर श्रीनाथसिंह, भूतपूर्व सम्पादक "सरस्वती"

स्वर्गीय पटल बाबू का स्मरण करते ही मानस-पटल पर एक ऐसी मानव-मूर्ति खचित हो उठती है, जो प्रत्यक्ष जगत् से परे की वस्तु प्रतीत होती है। अपने जीवन के सर्वोत्तम १७ वर्ष मैंने उनकी सेवा में व्यतीत किए हैं और इस दीर्घ काल में एक क्षण भी ऐसा नहीं आया, जब मुझे इस अनुभव से वंचित होना पड़ा हो कि मैं उस विशाल वृक्ष की शाखाओं में एक फूल के सदृश खिला हूँ, जिसके मूल में पटल बाबू ने अपने महान् व्यक्तित्व को मिला दिया है। जीवन के रंगमंच पर स्वयं अभिनेता के रूप में उतरने के बजाय वे आड़ में रहकर उसका सफलतापूर्वक संचालन करने में ही अधिक सुख का अनुभव करते थे। अपने निज के लिए उन्हें मान या प्रसिद्धि की जरा भी इच्छा न थी; परन्तु अपने सहयोगियों और सहायकों को वे उन्नति के शिखर पर चढ़ते हुए देखना चाहते थे और इसके लिए जो कुछ भी कर सकते थे, करने को तैयार रहते थे।

आज जब उनके आकस्मिक स्वर्गवास के कारण व्यथा से बोझिल मन लेकर मैं उनके संस्मरण लिखने बैठा हूँ, मेरे सामने वे सत्रहों वर्ष रंगीन चित्रपट की भाँति अंकित हो-हो उठते हैं। ओफ! वे दिन कितने सुन्दर थे!

उनके व्यक्तिगत परिचय का सौभाग्य पहले-पहल मुझे अगस्त सन् १९२७ में प्राप्त हुआ, जब उन्होंने मुझे 'बालसखा' का सम्पादक नियुक्त किया। उस समय उनके मुख से जो शब्द निकले थे, आज भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं। उन्होंने कहा था—"बालसखा को तुम बनाओगे, तो 'बालसखा' तुम्हें बनावेगा।" उनके इस एक वाक्य से मुझे इतनी प्रेरणा मिली कि मैं जी-जान से 'बालसखा' के सम्पादन-कार्य में जुट गया।

पंजाब टेक्स्ट बुक कमेटी 'बालसखा' की १००० प्रतियाँ खरीदती थी। परन्तु मैंने जब 'बालसखा' में राष्ट्रीय कविताएँ और नेताओं के चरित छापने प्रारम्भ किए, तो उसने आश्वासन माँगा कि 'बालसखा' में आगे ऐसी रचनाएँ नहीं छापी जायँगी। पटल बाबू के कमरे में इस सम्बन्ध में आदेश लेने जब मैं पहुँचा, तो देखा कि उनका चेहरा गम्भीर है। मैं डरा कि मुझसे कोई भारी भूल हुई है; पर तुरन्त ही उन्होंने मुझे निश्चिन्त कर दिया। बोले—"तुम्हारा कोई दोष नहीं है, प्रत्येक भारतीय को अब निर्णय करना पड़ेगा कि वह क्या करे, क्या न करे।"

पटल बाबू पंजाब टेक्स्ट बुक कमेटी को यह आश्वासन न दे सके कि 'बालसखा' में आगे राष्ट्रीय कविताएँ और नेताओं की जीवनियाँ नहीं छपेंगी। परिणाम यह हुआ कि पंजाब टेक्स्ट बुक कमेटी ने 'बालसखा' लेना बन्द कर दिया। फिर तो हम बिलकुल निश्चिन्त हो गए और 'बालसखा' के राष्ट्रीय रूप को स्वयं पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इतना पसन्द किया कि उसे अपनी पुत्री इन्दिरा नेहरू के नाम जारी करने की आज्ञा दी और स्वीजरलैंड से लौटने पर इसमें बच्चों के मनोरंजन के कई लेख लिखे।

'बालसखा' का काम मैं प्रायः एक सप्ताह में समाप्त कर देता था और पटल बाबू से और काम माँगता था। इससे वे बहुत प्रसन्न होते

थे और उनके पास जो भी साहित्यिक फुटकर काम होता था, मुझे बुलाकर दे देते थे। इस तरह मैं उनके निजी पत्र-व्यवहार से लेकर पाठ्य पुस्तकों के निर्माण करने तक के कामों में योग देने के लिए बुलाया जाने लगा और उनके अधिकाधिक सम्पर्क में आता गया। एक समय तो ऐसा आया, जब इंडियन प्रेस से प्रकाशित होनेवाले प्रत्येक पत्र-पत्रिका पर सम्पादक के रूप में मेरा नाम छपने लगा, मुझे एक हिन्दी स्टेनोग्राफर और टाइपिस्ट दिया गया, जिससे मैं तेजी से सब काम कर सकूँ। पटल बाबू मुझे लम्बी यात्रा में अपने साथ ले जाने लगे, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेने के लिए मुझे भेजने लगे और एक बार तो मुझे एक महीने की छुट्टी और काफी रुपया देकर कलकत्ता भेजा कि मैं वहाँ रहकर बँगला और अँगरेजी के लेखकों तथा पत्रकारों से सम्पर्क स्थापित करूँ और पत्रकारिता के विषय में अपना ज्ञान और अनुभव बढ़ाऊँ।

मैं नहीं कह सकता कि मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को इतना आदर और स्नेह उन्होंने क्यों प्रदान किया। पर शायद उनका यह स्वभाव ही था। प्रत्येक व्यक्ति की, जो साहित्य-सेवा करने का अवसर चाहता था, वे सहायता करने को तैयार रहते थे।

किसी-न-किसी काम में लगे रहना उन्हें बहुत पसन्द था। रात-दिन में लगभग १६ घंटे काम करना उनके लिए मामूली बात थी। उनकी मेज पर कागज-पत्र सदैव बिखरे रहते थे और प्रायः वे अकेले अधिक रात तक काम में व्यस्त देखे जाते थे। उनमें संगठन, व्यवस्था और दूसरों से काम लेने की अद्भुत शक्ति थी। गँवार से वे ठेठ देहाती की तरह देहाती भाषा में बातें करते थे। उनकी स्मरण-शक्ति अद्भुत थी। प्रेस के किस कर्मचारी को क्या काम सौंपा गया है, उन्हें याद रहता था और वे उसको याद दिलाते रहते थे।

यों तो वे एक महान् और सफल उद्योगपति थे, परन्तु वास्तव में उनका जीवन एक श्रमिक का जीवन था। घड़ी की सुई के समान वे अपना सब काम नियमित रूप से करते थे। सुबह से शाम तक उनके पास मिलने के लिए आनेवालों का ताँता लगा रहता था, जब जो चाहे उनके पास सीधा पहुँच सकता था। किसी को कोई रोक न थी, पर मिलने आनेवालों के कारण उनके काम में बाधा न पड़ती थी। वे उनसे हँसते-बोलते भी जाते थे और अपना काम भी करते जाते थे।

उनके जीवन-पथ में कोई घटनाएँ न थीं, उनके जीवन-नाटक में कोई पट-परिवर्तन न था। जिस प्रकार मंदिर में देवता या शरीर में प्राण रहता है, उसी प्रकार वे अपने विविध व्यावसायिक कार्य-केन्द्रों में व्याप्त थे। रचनात्मक कार्य ही उनके जीवन का ध्येय था, वही आनन्द। एक मिनट भी वे व्यर्थ नहीं जाने देते थे।

अच्छी पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं को खरीदना और पढ़ना उनका एकमात्र मनोरंजन था। दिन भर के काम के बाद, वे चाहे जितना थके हों, बिना कुछ पढ़े सोते नहीं थे। कभी-कभी तो वे सोने से पहले ३-४ घंटा पढ़ते थे। यही कारण था कि चौबीसों घंटे अपने व्यापारिक कार्यों में डूबे रहने पर भी वे उन प्रोफेसरों, लेखकों या सम्पादकों से, जिनका काम ही अध्ययन है, प्रत्येक विषय पर अधिकारी विद्वान् की भाँति बातें कर सकते थे।

वे ऐसे व्यापारी न थे, जो अपने व्यापार के

पीछे जीवन के उच्च सिद्धान्तों को गँवा बैठते हैं। प्रत्येक कार्य में वे अपने राष्ट्रीय दृष्टिकोण को नहीं छोड़ते थे। बड़ी से बड़ी आर्थिक हानि उन्हें सह्य थी, परन्तु राष्ट्रीय चेतना का अनादर उन्हें कदापि सह्य नहीं था। अपने प्रकाशनों में किसी ऐसे सरकारी दबाव को, जिससे राष्ट्रीयता को ठेस पहुँचे, वे पसन्द नहीं करते थे। पंजाब टेक्स्ट बुक कमेटी ने जब पंडित जवाहरलाल नेहरू का जीवन-चरित छापने के कारण 'बालसखा' खरीदना बन्द कर देने की धमकी दी, तब उन्होंने उसकी परवा नहीं की। 'सरस्वती' का स्वराज्य अंक प्रकाशित करने के कारण उत्तरप्रदेशीय अँगरेजी सरकार के शिक्षा-विभाग ने इंडियन प्रेस की पाठ्य पुस्तकें अस्वीकृत कर दीं, तब इससे भी वे विचलित नहीं हुए। कई एक राजनैतिक क्रान्तिकारी इंडियन प्रेस में नियमित वैतनिक कर्मचारी के रूप में आश्रय पाए हुए थे। उनमें श्री जितेन्द्रनाथ सान्याल, जो लाहौर षड्यन्त्र केस में सरदार भगतसिंह के साथ गिरफ्तार हुए थे और श्री विद्याभास्कर प्रमुख थे। स्थानीय अधिकारियों ने बहुत चाहा कि ये व्यक्ति पृथक् कर दिए जायँ, पर पटल बाबू ने उनकी एक नहीं सुनी। इंडियन प्रेस के फाटक के सामने इन व्यक्तियों की देखभाल के लिए बराबर सी० आई० डी० का आदमी बैठा रहता था। इंडियन प्रेस के पास ही कम्पनी बाग में जब श्री चन्द्रशेखर 'आजाद' पुलिस की गोली से मारे गए और उसके बाद पुलिसवाले उनके आफिस में कहीं को टेलीफोन करने के लिए आये, तब पटल बाबू ने उन्हें अपना टेलीफोन इस्तेमाल नहीं करने दिया।

पटल बाबू बहुत ही उदार थे। मत-स्वातंत्र्य का पूर्ण आदर करते थे। अपने प्रेस के कर्मचारियों से केवल इसलिए कि वे उनसे भिन्न मत रखते हों, वे कभी नाराज न होते थे। अपने पत्र-सम्पादकों को वे अपने से भिन्न राय रखने और उसे निर्भीकतापूर्वक प्रकट करने की पूर्ण छूट देते थे। आज जबकि बीती बातें एक-एक करके मेरे सामने आ रही हैं, मुझे लगता है कि मैंने उन्हें काफी तंग किया था। मैंने उनके प्रेस में कर्मचारियों की यूनियन बनाई, उन्हें उनके विरुद्ध संगठित किया और उनसे लड़ने को उभारा। प्रेस के आँगन में इन यूनियनों की बैठकें करवाईं, जिनमें स्व० श्रीमती कमला नेहरू, श्रीमती सुचिता कृपलानी, श्रीमती प्रभा बनर्जी, डाक्टर जेड अहमद आदि को भाषण देने को बुलवाया, प्रेस में हड़तालें करवाईं। इतना ही नहीं, 'सरस्वती' और 'देशदूत' के सम्पादक के रूप में मैंने उनके और उनके अत्यन्त प्रिय मित्रों के मत के विरुद्ध कटु से कटु लेख प्रकाशित किए। परन्तु उन्होंने किसी बात का कभी बुरा नहीं माना। जब कोई शिकायत करता, वे यही कहते—"अच्छा, मैं श्रीनाथसिंह को समझा दूंगा।" और वे मुझे बुलाकर घंटों उपदेश देते और जब मैं उनसे विवाद करने लगता, कहते—"अच्छा, बाबा, जाओ, तुम्हारे जी में जो आवे, करो।"

एक बार 'सरस्वती' में छपे एक लेख के कारण 'सरस्वती' पर एक प्रतिष्ठित पुरुष की ओर से मानहानि का मुकदमा चलाने की नोटिस आई। पटल बाबू ने मुझे बुलाया। मैंने समझा, आज बहुत डाँटेंगे। मुझे कुछ डरा-सा देखा, तो मुसकराए। बोले—"घबराओ मत, मेरी रक्षा का हाथ तुम्हारे ऊपर से कभी नहीं हटेगा।" आज जब उनकी इन बातों का स्मरण करता हूँ, तो हृदय रो उठता है।

मेरे ऊपर 'सरस्वती' के एक सम्पादक और

थे, श्रद्धेय पंडित देवीदत्त शुक्ल। उन्हें मैं अपने पूज्य गुरु के समान मानता था। मेरे उनके बीच में अगर कोई मतभेद होता था, तो केवल इतना ही कि मेरे लेखों को कुछ और तीक्ष्ण होना चाहिए था और निश्चय ही जब वे संशोधन करते थे, उन्हें और भी तीक्ष्ण बना देते थे। इससे अनेक प्रभावशाली लोग, जो पटल बाबू के मित्र थे और उन लेखों की चपेट में आ जाते थे, बहुत घबरा उठते थे और पटल बाबू से कहते थे—"इन सम्पादकों को हटाओ।"

पटल बाबू सब सुनते, पर हम लोगों से उनका जिक्र तक न करते। क्रमशः इन यूनीवर्सिटी के प्रोफेसरों और अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों ने हमारे विरुद्ध उनका कान इतना भरा कि वे हमसे उन लेखों में से एक के लिए जवाब-तलब करने को तैयार हो गए।

हम लोग बुलाए गए। पटल बाबू ने पंडित वेंकटेशनारायण तिवारी लिखित "हरि-औध का बुढ़भस" शीर्षक लेख दिखाकर कहा—"एक वयोवृद्ध साहित्यकार के विरुद्ध ऐसा लेख छापना कदापि उचित नहीं है। इसके लिए आप लोग 'सरस्वती' में खेद प्रकट कीजिए और 'हरिऔध' से माफी माँगिए।" हम लोगों ने लेख छापने के अपने तर्क उपस्थित किए। कहा—"सत्याग्रही देवियों को इन्होंने इस कविता की 'नायिका' बना डाला, यह बुढ़भस नहीं तो क्या है?"—"कुछ भी हो", पटल बाबू ने कहा—"मैं उन लोगों से वादा कर चुका हूँ—अतएव या तो खेद प्रकट करना होगा या मैं 'सरस्वती' का प्रकाशन बन्द कर दूँगा।" वे गम्भीर हो गए। हम लोग अपने कमरे में चले आये। अब क्या हो? हम भारी संकट में पड़े। हमने सोचा, यदि हम किसी प्रकार धूनी बाबू को अपने पक्ष में कर लें, तो अब भी हमारी रक्षा हो सकती है। हम जानते थे कि अब धूनी बाबू ही एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो पटल बाबू के निर्णय के विरुद्ध हमारी रक्षा कर सकते हैं।

धूनी बाबू औघड़दानी शंकर की भाँति भावना-प्रधान व्यक्ति हैं। शरण में आये की रक्षा के लिए तैयार हो जाना उनका स्वभाव है। सो हम लोग उनके कमरे में जाकर मन मलीन कर चुपचाप खड़े हो गए।

"क्या बात है?" उन्होंने मृदु स्वर से पूछा। हमने कहा—"यूनीवर्सिटी के सारे प्रोफेसर हमारे पीछे पड़े हैं। जो कुछ भी हम 'सरस्वती' में छापते हैं, उसी की पटल बाबू से शिकायत करते हैं। अब कहते हैं, माफी माँगो।"

"माफी?" धूनी बाबू ने जरा उग्र होकर कहा—"हमारे सम्पादक माफी कभी नहीं माँग सकते।"

हम लोग यह वरदान पाकर अपने कमरे में वापस चले आये।

फिर पटल बाबू ने उन प्रोफेसरों को कैसे शान्त किया, हम नहीं जानते।

छोटे भाई धूनी बाबू के प्रति पटल बाबू के हृदय में इतना स्नेह था कि उसकी मिसाल नहीं मिलती। उन्हें मामूली बुखार भी आ जाता था, तो पटल बाबू चिन्तित हो उठते थे। चाहे जितनी हानि हो, चाहे जो बने-बिगड़े, धूनी बाबू का मान वे रखते थे। उनके इस भ्रातृस्नेह को, प्रेस के हम प्रायः सभी कर्मचारी जानते थे और संकट के समय इससे पूरा लाभ उठाते थे।

पटल बाबू कान के कच्चे नहीं थे। कोई किसी की उनसे लाख शिकायत करे, वे ध्यान न देते थे। परन्तु वे शीलवान् बहुत थे और किसी के

आग्रह को वश चलते अस्वीकार न करते थे। अपने इसी शील के कारण वे बहुत ही लोकप्रिय थे। हर कोई उन्हें अपना मित्र समझता था।

कभी-कभी मुझसे वे अपने सेक्रेटरी का भी काम लेते थे। अपने मित्रों और विरोधियों के पत्र वे मुझे पढ़ने को देते थे और उनका उत्तर मुझसे लिखवाते थे। इन पत्रों को जब मैं पढ़ता था और पटल बाबू के उत्तरों पर जब विचार करता था, तब मैं दंग रह जाता था। उच्च विचार, तर्क-माधुर्य, सत्य और शील सभी कुछ उनके उत्तरों में उमड़ता चला आता था। कड़ी से कड़ी बात का उत्तर वे मृदु से मृदु वाक्यों में दिलाते थे।

एक बार स्वर्गीय लाला लाजपतराय ने गुस्से से भरा एक पत्र उन्हें लिखा था। लालाजी की पुस्तक "दुःखी भारत" जो लगभग ६०० पृष्ठों की थी और जिसका मैं ही, पटल बाबू की आज्ञा से, हिन्दी अनुवाद कर रहा था, इंडियन प्रेस ने एक महीने के अन्दर छापकर प्रकाशित कर देने का वादा किया था। १५ दिन बीत गए थे और पुस्तक की कम्पोजिंग भी न शुरू हुई थी। लालाजी को विश्वास नहीं रह गया था कि पुस्तक समय पर निकल सकेगी। इसी से उन्होंने कड़ा पत्र लिखा था। पटल बाबू ने उत्तर दिया था—"इसका हमें खेद है कि इससे पहले आपके निकट हमें अपनी कार्यक्षमता प्रमाणित करने का अवसर नहीं मिला, नहीं तो आपको इतनी चिन्ता न होती।" इस उत्तर की लालाजी ने बहुत प्रशंसा की और जब ठीक तिथि पर उनके हाथ में पुस्तक पहुँच गई, तब तो वे बहुत ही प्रसन्न हुए।

पटल बाबू अपने व्यवसाय को इस तरह विकसित करना चाहते थे कि वह राष्ट्रीय नव-निर्माण में सहायक हो। केवल धनोपार्जन उनका ध्येय न था। प्रेस-संचालक और प्रकाशक के नाते वे ऐसी योजनाएँ बनाते रहते थे, जिससे जनता को अच्छी से अच्छी पुस्तकें कम-से-कम मूल्य में मिल सकें। इसी लिए उन्होंने जर्मनी से पुस्तकें छापनेवाली रोटरी मशीन मँगाई थी, जो उत्तरप्रदेश में पहली थी। इस मशीन को खरीदने वे स्वयं जर्मनी गये थे और इसी सिल-सिले में उन्होंने योरप की यात्रा की थी।

हमारी प्रार्थना पर उन्होंने तत्कालीन योरप पर बहुत ही रोचक लेखमाला लिखी थी। अपने साथ वे बहुत से चित्र लाए थे, जिनमें से अधिकांश उक्त लेखमाला के साथ 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए थे। वे लेख उन्होंने अँगरेजी में लिखे थे, जिनका हिन्दी अनुवाद करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। उन लेखों का अनुवाद करते समय मुझे लगता कि मैं भी पटल बाबू के साथ योरप की सैर कर रहा हूँ।

जब कभी वे अनुवाद मैं उन्हें दिखाने ले जाता वे मुझे और भी बहुत सी दिलचस्प बातें बताते, जो उन लेखों में न होती थीं। इन्हीं बातों के सिलसिले में उन्होंने हिटलर से अपनी भेंट की भी कहानी सुनाई थी। जर्मनी के जिस कार-खाने से उन्होंने उक्त मशीन खरीदी थी, उसी के स्वामी ने हिटलर से उनकी भेंट कराई थी।

सन् १९४० में मैंने पटल बाबू से 'दीदी' नाम की अपनी निजी पत्रिका प्रकाशित करने की अनुमति माँगी, जो उन्होंने सहर्ष दे दी। उन्होंने 'दीदी' को चार वर्ष तक इंडियन प्रेस में मौजूद अच्छे से अच्छे ब्लाक मुफ्त दिए और एक पृष्ठ का विज्ञापन भी दिया। भेंट होने पर वे 'दीदी' के विषय में बराबर पूछते और बहु-मूल्य सलाहें देते। चार वर्ष बाद जब 'दीदी'

स्वावलम्बिनी हो गई, मैंने उनसे इंडियन प्रेस से पृथक् होने की अनुमति माँगी और उन्होंने मुझे आशीर्वाद तथा शुभ कामनाओं के साथ विदा किया।

इसके वर्षों बाद जब मैं अपने निजी कामों में व्यस्त हो गया था और उन्हें सर्वथा भूल गया था, एक दिन क्या देखता हूँ कि पटल बाबू एक साहित्यिक मित्र के साथ मेरे छोटे-से घर के द्वार पर आकर खड़े हैं और वे साहित्यिक मित्र पुकार रहे हैं––"श्रीनाथसिंह, पटल बाबू!" मैं घबराया हुआ दौड़ा कि क्या बात है। मैंने उनका अभिवादन किया और कहना चाहता था, पर कह न सका कि मेरा बड़ा सौभाग्य है, जो आप मेरे घर पर पधारे।

पटल बाबू ने कहा––"कोई खास बात नहीं है। इधर से जा रहा था। मालूम हुआ कि यह तुम्हारा घर है, तो रुक गया।"

वही सहज मुसकान थी, वही स्नेहभरी गम्भीर मुख-मुद्रा। पर स्वास्थ्य वह न रह गया था। शरीर बहुत ही दुर्बल हो उठा था। यह उनके स्वर्गवासी होने के लगभग दो साल पहले की घटना है। मैंने 'सरस्वती' आदि के बारे में पूछा तो बोले––"मैं सोचता हूँ कि किसी पत्र के ठीक संचालन के लिए यह आवश्यक है कि उसका संपादक और स्वामी एक ही व्यक्ति हो।"

मुझे लगा कि मैंने उन्हें जो बहुत तंग किया था, उसी का यह मृदु उलाहना था। मैंने कोई प्रतिवाद नहीं किया और बहुत दूर तक उनके पीछे-पीछे चलकर उस स्थान तक गया, जहाँ वे वास्तव में जाने के लिए उस मार्ग से निकले थे।

उनके जैसे महान् पुरुष के निकट सम्पर्क में रहकर काम करने का मुझे जो अवसर मिला, उसे मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूँ। यद्यपि उनका क्षणभंगुर शरीर इस जगत् में नहीं है; परन्तु जो उनके सम्पर्क में आ चुके हैं, उनके स्मृति-पट पर वे आज भी अमर हैं और मेरा तो यह हाल है कि सामने जब कभी कोई संकट उपस्थित होता है, उनका स्मरण करता हूँ, तो उससे लड़ने का बल आ जाता है। वे अपने आपमें पूर्ण थे और उस सूर्य के समान थे, जिससे अनेक चन्द्रमा और ग्रहमण्डल प्रकाशित होते रहते थे।

स्वर्गीय श्री हरिकेशव घोष

योरप—जैसा कि मैंने उसे देखा

लेखक : श्री हरिकेशव घोष

[इंडियन प्रेस के प्रधान व्यवस्थापक स्वर्गीय श्री हरिकेशव घोष (पटल बाबू), जिनकी पुण्य स्मृति में 'सरस्वती' का प्रस्तुत श्रद्धांजलि अङ्क प्रकाशित किया जा रहा है, न केवल हिन्दी को विकासोन्मुख करने में प्रयत्नशील रहते थे, प्रत्युत स्वयं लेख भी लिखते थे।

सन् १९३५ में बाबू साहब ने जो योरप-यात्रा की थी, उसका आँखों देखा वर्णन उसी वर्ष की 'सरस्वती' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। वह लेख-माला तथा उसी सिलसिले में लिखे गए दो अन्य लेख आज भी 'सरस्वती' के पाठकों के लिए रोचक और उपादेय हैं, जिन्हें हम श्रद्धांजलि अङ्क के प्रारम्भ में ही दे रहे हैं। इन लेखों में पटल बाबू की लेखन-शैली, रुचि-वैचित्र्य और 'सरस्वती' के प्रति उनकी आत्मीयता की मनोरम झाँकी ओतप्रोत है।

—सम्पादक]

१—जहाज पर

योरप की यह मेरी पहली यात्रा है। गत पन्द्रह वर्षों में मुझे छुट्टी मनाने का अवसर बिलकुल नहीं मिला। पिछले वर्ष से मैं छुट्टी का आनन्द लेने एवं व्यवसाय और आनन्द को एक में मिलाने की बात सोच रहा था। गत नवम्बर मास में यह अवसर आया, जबकि एक प्रमुख जर्मन-निर्माता ने मुझे एक 'रोटरी प्रिंटिंग मशीन' देने को कहा। मुझे एक विशेष प्रकार की मशीन मँगानी थी ताकि बहुत बड़े पैमाने पर पुस्तकें, विशेषकर मासिक पत्रिकाएँ छापने में सुविधा हो। हमारी 'सरस्वती' दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय होती जा रही थी और मैं मित्रों और पाठकों का कृतज्ञ हूँ कि हमें अब इसे बहुत बड़े पैमाने पर छापने की आवश्यकता प्रतीत हुई है। यह स्पष्ट था कि यदि हम अपने पाठकों को अधिक पाठ्य-सामग्री, अधिक चित्र दे सकें और वार्षिक मूल्य में कुछ कमी कर दें, तो इस पत्रिका को इँगलैंड या योरप की सुव्यवस्थित पत्रिकाओं के समकक्ष ला सकेंगे। दुःख की बात है कि यद्यपि भारतवर्ष की सम्पूर्ण जन-संख्या का दो-तिहाई भाग हिन्दी-भाषी है, तथापि अभी तक ऐसी कोई पत्रिका नहीं है, जो वास्तव में हिन्दी की प्रतिनिधि पत्रिका कही जाय। हिन्दी-पत्रिकाओं की ग्राहक-संख्या अत्यन्त कम है, कदाचित् ही किसी की ६००० से अधिक हो। ऐसी दशा में शीघ्र से शीघ्र एक ऐसी पत्रिका की आवश्यकता है, जिसके द्वारा मध्य-वर्ग के ऊँचे और नीचे दर्जे के लोगों में हिन्दी-साहित्य के प्रचार का उद्देश्य सिद्ध हो सके।

मैंने सोचा कि यदि अमरीकन ढंग पर पत्रिका निकाली जाय, जहाँ कि मूल्य बहुत कम रक्खा जाता है—करीब-करीब उसका आधा, जो कि हम भारतवर्ष में देते हैं, तो हम हिन्दी-भाषी जनता के एक बड़े भाग तक पहुँच सकेंगे। अभी हम वैसा नहीं कर सकते, क्योंकि प्रकाशन की वर्तमान पद्धति अधिक व्यय-साध्य है।

इस प्रकार अपनी पत्रिका और स्टैंडर्ड साहित्य को बहुत बड़े पैमाने पर छापने की आवश्यकता

से प्रेरित होकर मैंने रोटरी प्रिंटिंग मशीन का आर्डर दिया। योरप जाने और वहाँ प्रचलित विभिन्न कार्य-प्रणालियों के देखने का इसे मैंने अच्छा अवसर समझा। २३ मई से पहले मैं रवाना नहीं हो सका, यद्यपि इसमें सन्देह था कि समुद्र शान्त मिलेगा। मुझे समुद्र-यात्रा, समुद्री बीमारी और उनसे सम्बन्ध रखनेवाली समस्त परेशानियों का सदैव बड़ा भय रहा है। परन्तु मैं अपनी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं कर सकता था, क्योंकि मुझे प्रेस और अपनी शुगर कम्पनी के बहुत-से महत्वपूर्ण मामलों को साफ करना था। मेरे बहुत-से मित्रों ने १० मई को रवाना होने की सलाह दी, परन्तु मैं वैसा नहीं कर सका। कभी-कभी मुझे बड़ी निराशा होती थी, क्योंकि यात्रा से पूर्व मुझे जो कार्य करने बाकी थे, उनका अन्त ही न मिलता था। खैर, मैंने यथासम्भव उन्हें समाप्त किया और 'एस० एस० कोंटेरेसो' नामक जहाज से यात्रा करने के लिए लिखा-पढ़ी की। मेरे कलकत्ता के मित्रों ने, जिनके सुपुर्द मैंने यह काम किया था, देरी कर दी। इससे जहाज में मुझे अनुकूल स्थान न मिल सका। अन्तिम घड़ी में मुझे एक 'बर्थ' मिली, जो ऊपर के डेक के नीचे थी। यह बंद और अँधेरी जगह थी। खैर, अब मैं कर ही क्या सकता था? मुझे इसी से संतोष करना पड़ा।

हमारे बहुत-से पाठक जहाजी यात्रा के आराम और तकलीफ से परिचित होंगे, इसलिए मैं विस्तार के साथ उसका वर्णन न करूँगा। यात्री-जहाज के विषय में साधारण तौर पर हमारी जो धारणाएँ होती हैं, उनसे वह भिन्न होता है। यहाँ मैं पाठकों को यह बता देना चाहता हूँ कि तकलीफों के सम्बन्ध में हमारा भय बहुत अतिशयोक्तिपूर्ण होता है। मैंने इटालियन लाइन लायड ट्रिस्टिनो के जहाज से यात्रा की और जहाज पर चढ़ने से पूर्व हमारे मन में भय की जो आशंकाएँ रहती हैं, उनका मुझे कोई सबूत नहीं मिला। जहाज के कर्मचारी बड़े ही विनम्र होते हैं और वे यात्रियों की सहायता करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं। भोजन बहुत अच्छा और स्वादिष्ट मिलता है। कई प्रकार का भारतीय भोजन भी वे देते हैं और यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि व्यक्तिगत माँगों का वे कितना ध्यान रखते हैं। कोई भी शाकाहारी अपनी रुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार का भोजन प्राप्त कर सकता है। फल सुरक्षित रूप में और यथेष्ट मात्रा में मिलते हैं।

आमतौर से सब यात्री-जहाजों में चार दर्जे होते हैं। पहला दर्जा, दूसरा दर्जा, दूसरा इकानॉमिक दर्जा और डेक। हमारे जहाज के पहले दर्जे में बहुत-से भारतीय थे, जिनमें श्रीयुत घनश्यामदास बिड़ला और सर चिमनलाल शीतलवाद मुख्य थे। इकानॉमिक दर्जे में लाहौर की मिसेज दत्त थीं। ये भारतवर्ष की कुछ छात्राओं को योरप के शिक्षा-सम्बन्धी वातावरण से परिचित कराने के लिए वहाँ अपने साथ ले जा रही थीं। जहाज खूब भरा था।

इस प्रकार की यात्रा में एक ऐसा भव्य अवसर मिलता है, जो अन्यत्र सम्भव नहीं होता। भूमण्डल के विभिन्न भागों के लोगों का एक कासमोपालिटन समूह दस अच्छे दिन एक साथ व्यतीत करने के लिए एकत्र कर दिया जाता है। वे साथ-साथ खाते हैं, साथ-साथ खेलते हैं, साथ-साथ टहलते हैं और अपने-अपने जीवन के दृष्टिकोणों के सम्बन्ध में परस्पर विचार-विनिमय करते हैं। विभिन्न स्वभावों और विचित्र रुचियों के लोग परस्पर एक दूसरे को करीब

से देखते हैं और अपने देश और अपने रहन-सहन की मर्यादा का परिचय देते हैं। कदाचित् शरीर-विज्ञान की दृष्टि से मनुष्य के अध्ययन के लिए इन कुछ दिनों के उदाहरणों से बढ़कर उदाहरण नहीं मिल सकते, जब हम यहाँ चीनियों, जापानियों, जावावासियों, इटालियनों, फिलिपाइनवालों और भूमण्डल के कोने-कोने के लोगों से मैत्री-सूत्र में आबद्ध होते हैं।

यह मेरी प्रथम समुद्र-यात्रा थी, इसलिए मुझमें पास-पड़ोस के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने का विशेष भाव पैदा हुआ। मैंने यह निश्चय किया कि मैं बहुत-से लोगों का परिचय प्राप्त करूँगा। इस यात्रा से मुझे दूसरे देशों की स्थिति—राजनैतिक और आर्थिक दोनों—के जानने का यथेष्ट अवसर मिला। चीन के एक प्रधान व्यापारी से, जो चीन की वर्तमान स्थिति समझाने के लिए लेबर कान्फ्रेंस में भाग लेने जनेवा जा रहे हैं, मेरी घनिष्ठतापूर्ण बातें हुईं। यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि चीनी व्यापारी कितनी सतर्कता के साथ पाश्चात्य तरीकों का अनुसरण कर रहे हैं। कोड़ियों चीनी नवयुवक काहिल चीन को व्यावसायिक रूप देने के निश्चित उद्देश से शिक्षा ग्रहण करने के लिए दूसरे देशों को गये हैं। वस्त्र, चीनी, इनेमिलिंग, काँच और मिट्टी के बर्तनों आदि के अब वहाँ तमाम कारखाने खुल गए हैं। यह सच है कि बड़े पैमाने पर इन चीजों का निर्माण करने में वे जापान से बहुत पीछे हैं, जैसा कि मेरे चीनी मित्र ने स्वीकार किया; पर अपने तरीकों में सुधार करते हुए वे क्रमशः आगे बढ़ रहे हैं। बहुत-से नवयुवक व्यवसाय को प्रभावित करनेवाली समस्याओं का अध्ययन करने के लिए जर्मनी और अमरीका गये हैं। अमरीका और जर्मनी के साथ उन्होंने अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कर लिए हैं और अपने व्यवसाय में उन्नति करने के लिए इन देशों से वे समुचित सलाह पाते रहते हैं। पाश्चात्य वेश-भूषा और रहन-सहन को वे शीघ्रता के साथ अपनाते जा रहे हैं। जापान को वे भय के भाव से देखते हैं और वे जानते हैं कि वे शीघ्रता के साथ जापानी तरीकों का अनुसरण करके ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

हम भारतीय विदेश जानेवाले अनेक भारतीय विद्यार्थियों के अनुभवों से लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं। इसका एक बड़ा सजातीय कारण यह है कि हम अपने विद्यार्थियों को पारिभाषिक तरीकों के अध्ययन करने के लिए बहुत थोड़ा समय देते हैं। तीन वर्ष का कोर्स काफी नहीं होना चाहिए। हमारे नवयुवकों को व्यवसाय और उत्पादन में प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न पारिभाषिक तरीकों का अध्ययन और अभ्यास करने के लिए योरप में लगभग दस वर्ष दत्तचित्त होकर रहना चाहिए ताकि वे प्रत्येक व्यवसाय में वह पारिभाषिक दक्षता और ज्ञान प्राप्त करलें, जो उन्हें अपने पूर्ण पारिभाषिक ज्ञान के द्वारा दूसरे देशों से प्रतिद्वन्द्विता करने में समर्थ बनाए।

मेरे मित्र जावा-निवासी मिस्टर इस्सर ने मुझसे जावा के सामाजिक और आर्थिक जीवन का बड़ा दिलचस्प वर्णन किया। उन्होंने अच्छी डच-सरकार के सम्बन्ध में अपनी इस टिप्पणी पर जोर दिया कि वहाँ वर्णगत भेदभाव नहीं है। वे एम्सटर्डम जा रहे हैं। वहाँ वे अपने परिवार को छोड़ देंगे और तब अटलांटिक पार करके दक्षिणी अमरीका में अपने पिता से मिलने जायँगे। मैंने उनसे एम्सटर्डम में मिलने का वादा किया। वे बहुत अच्छे और प्रसन्नचित्त अधेड़ पुरुष हैं। वे सदैव मुसकराते हुए मिलते और

सवेरे ऊपरी डेक पर टहलते समय हर किसी से, जो मिलता, परिचय प्राप्त करने को तैयार रहते।

ये दस दिन पहाड़ हो जाते हैं। यद्यपि समय काटने के लिए आनन्द-विनोद की यथेष्ट सामग्री रहती है, तथापि उन आनन्दों में लिप्त होना बहुतों के स्वभाव के अनुकूल नहीं होता—विशेषकर उनके, जो शान्तिमय आनन्द पसन्द करते हैं। सौभाग्य से इस जहाज का पुस्तकालय सज्जित है और समय व्यतीत करने के लिए यहाँ नई से नई पुस्तकें प्राप्त हो सकती हैं। सिनेमा, नृत्य और शिकार का भी प्रबन्ध है।

पहले यह आस्ट्रिया का जहाज था। परन्तु जब इटलीवालों ने ट्रीस्ट पर अधिकार किया, तब युद्ध के बाद से यह भी उनके अधिकार में आ गया। समस्त महत्त्वपूर्ण बन्दरों पर ठहरता हुआ यह शंघाई से ट्रीस्ट तक जाता-आता है। मेरे मित्र इस्सर बड़े निपुण फोटोग्राफर हैं। उन्होंने कृपापूर्वक कुछ फोटो मुझे भी दिए, जो उन्होंने मार्ग में लिये थे। वे यहाँ छापे जाते हैं।

एक बड़े यात्री-जहाज का सुन्दर प्रबंध देखकर हम सब आश्चर्यचकित हैं। भारतीय इटालियन लाइन को बहुत पसन्द करते हैं, क्योंकि इसके जहाजों में भोजन अति उत्तम और विभिन्न प्रकार का मिलता है। संसार के विभिन्न भागों के फल, योरप, अमरीका और भारत की खाद्य-सामग्री और आठ विभिन्न देशों के रसोइए इसके जहाज में यात्रियों की सेवा करने के लिए उपस्थित हैं। इस जहाज में ५०० मुसाफिर और लगभग ३५० नाविक हैं। सब मिलाकर ९०० आदमी हैं, जिन्हें प्रतिदिन चार बार नियत समय पर भोजन मिलता है। कोई भी फल, जितने आप चाहें, मिल सकता है। जहाज-भाण्डार अक्षय्य प्रतीत होता है। इस जहाज में एक बड़ा तापहारी कमरा है, जिसमें सब प्रकार के फल, मांस और अन्य प्रकार की खाद्य-सामग्री रक्खी जा सकती है। हमें यहाँ गोभी, जो अब उत्तर भारत में शायद ही मिले, और बहुत-सी भारतीय फलियाँ, जो अब वहाँ बे-मौसम हैं, मिल सकती हैं। जहाजवालों ने इन वस्तुओं को महीनों पहले खरीदा था और तापहारी कमरे में जमा कर रक्खा है।

मेरे मित्र....., मुझे यह उल्लेख करते हुए दुःख होता है, बुरी सोहबत में पड़ गए और यदि हम उन्हें सचेत करने का शीघ्र प्रयत्न न करते, तो हालत और भी खराब हो जाती। उनकी सदिच्छा और हमारे अनुनय-विनय को धन्यवाद है कि उन्होंने वह सोहबत छोड़ दी और हमारे बीच में आ गए। फिर वे उस 'काक टेल बार' में न गए, जिसमें वे कुछ विदेशी मित्रों के साथ आधे दर्जन बार जा चुके थे और बहुत बेवकूफ बनाए गए थे। श्रीयुत तिवारी भी, जो मेरे ही कमरे में थे, बड़े आनन्द के साथ जा रहे हैं। वे लन्दन में करीब तीन महीने ठहरेंगे। वहाँ उन्होंने मुझसे मिलने का वादा किया है।

जो लोग मिस्र की एक झलक—प्राचीन पिरामिड, रहस्यमयी ममी और गन्दा बाजार—देखना चाहते हैं, उन्हें यह जहाज बड़ा सुन्दर अवसर देता है। वे स्वेज में उतर सकते हैं। टामस कुक एण्ड सन्स के कर्मचारी वहाँ से मुसाफिरों को 'लांच बोट' पर किनारे और वहाँ से मोटर पर कैरो ले जाते हैं। कुछ मित्रों ने, जिनमें मैं भी हूँ, इस यात्रा में सम्मिलित होने के लिए लिखा-पढ़ी की है। मुझे आशा है कि जब मैं शहर से लौटूँगा, तब मैं अपने पाठकों को मिस्र और उसके निवासियों के बारे में कुछ नई बातें बता सकूँगा।

जहाज पर
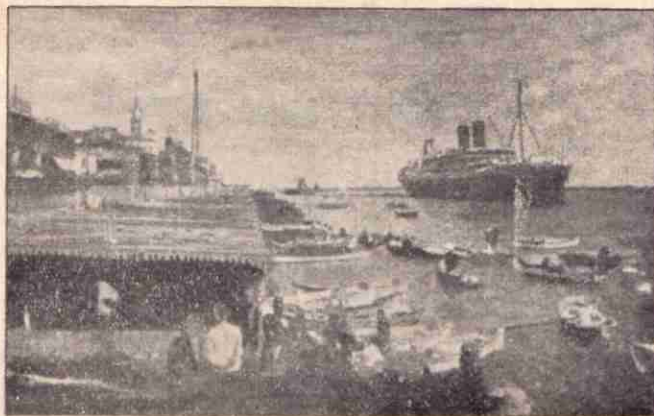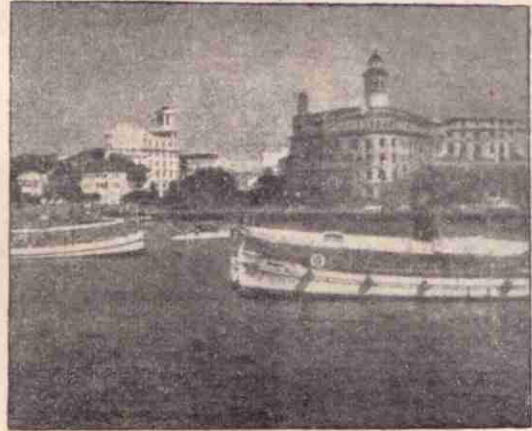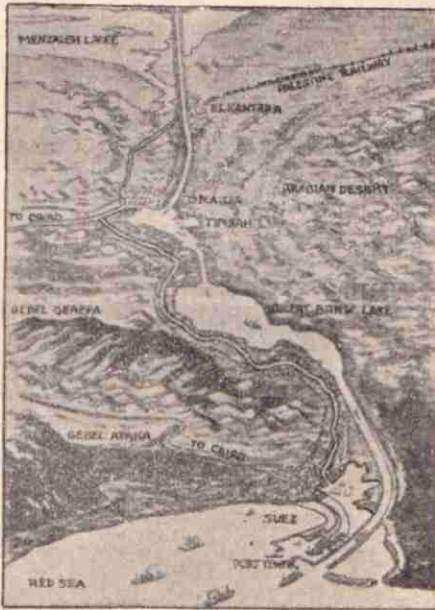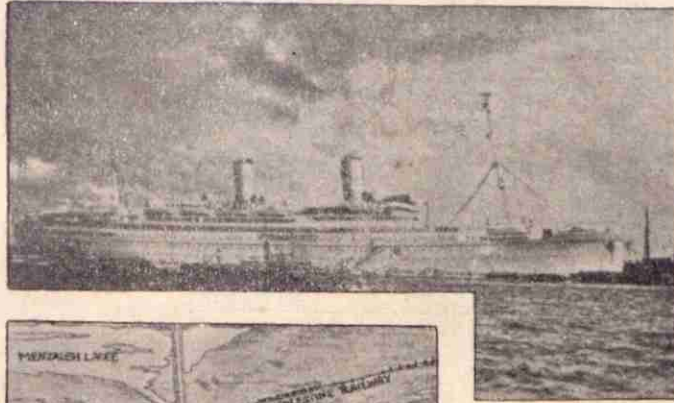
ऊपर—एस० एस० कोन्ते रेसो। बीच में—नहर स्वेज। नीचे—पोर्ट सईद।
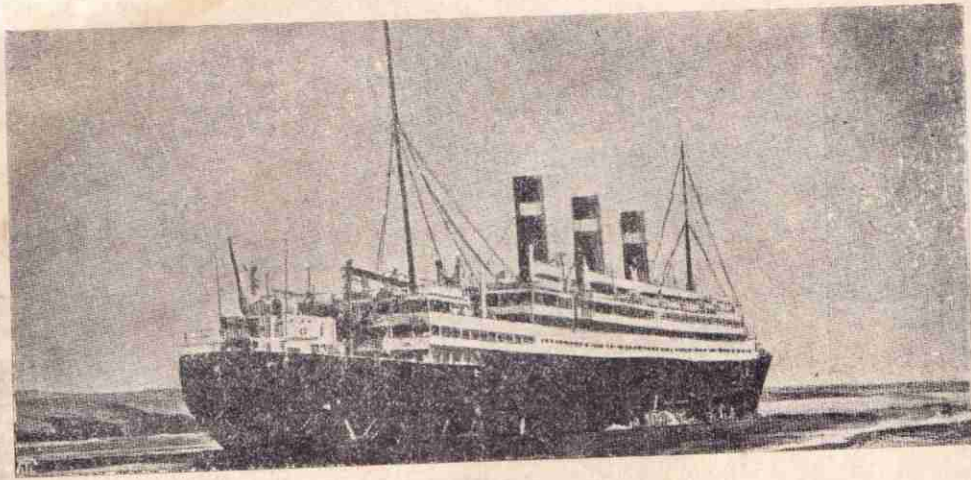
स्वेज नहर में

स्फिंग्ज के निकट नमाज का एक दृश्य (कैरो)

रेगिस्तान का एक दृश्य

कैरो—पृष्ठभूमि में पिरामिड
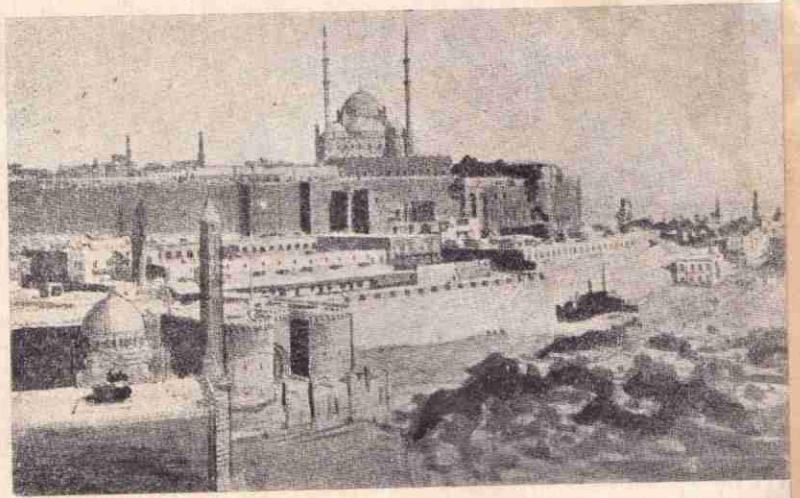
कैरो
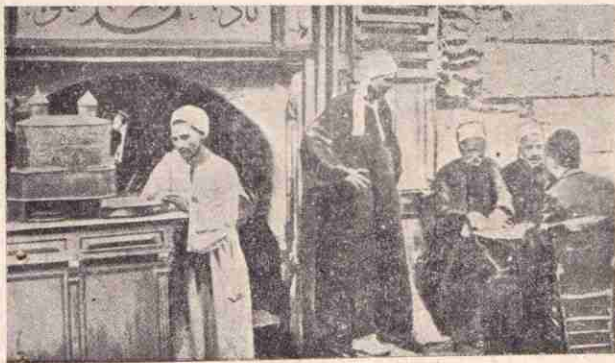
अरबी कहवा (पोर्ट सईद)
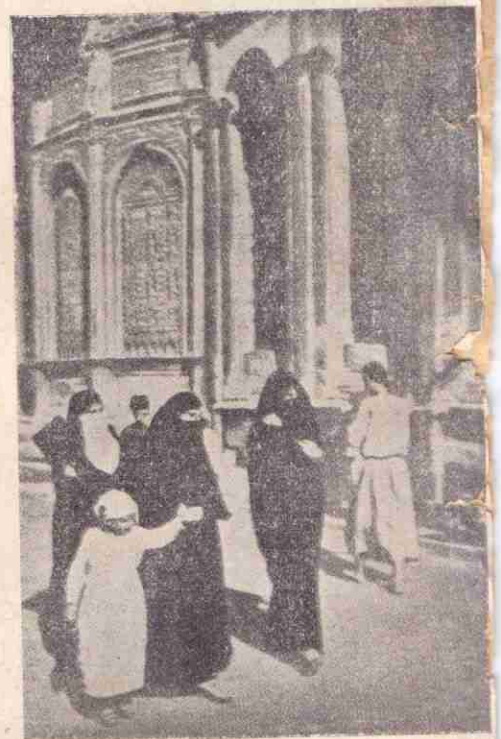
मिस्री स्त्रियाँ

पोर्ट सईद की बस्ती

२—फैराओ का देश

टामस कुक के प्रबन्ध के अनुसार कैरो की यह संक्षिप्त यात्रा अत्यन्त मनोरम होती है। कुल मिलाकर वे ५$\frac{1}{2}$ पौंड लेते हैं। इसी में मोटर, भोजन और सन्ध्या को स्टीमर तक वापस पहुँचने का व्यय भी सम्मिलित रहता है। यदि कोई चार मित्रों की मंडली बना सके, तो उसे जो व्यय करना पड़ेगा, उसका प्रायः दूना व्यय इसमें बैठता है। खैर, हम सोचते हैं कि यह मूल्य चुकाने के योग्य है, क्योंकि इस प्रकार सम्पूर्ण भ्रमण एक दिन में समाप्त हो जाता है और इस यात्रा का सस्ता प्रबंध केवल वे ही, या कम से कम उनमें से एक व्यक्ति, जो उस स्थान को भली भाँति जानता है, कर सकता है। दिन बहुत गर्म नहीं था, कम से कम हमें, जो भारत में अत्यन्त उग्र जल-वायु के आदी हैं, ऐसा प्रतीत नहीं हुआ। भारतवर्ष में इन दिनों मई में जो गर्मी पड़ती है, उसके मुकाबिले में यहाँ १० डिगरी गर्मी कम थी।

यह पचास व्यक्तियों का अत्यन्त रमणीय दल था, जिसमें सब देशों के लोग सम्मिलित थे। 'कुक' के एक कर्मचारी की सलाह के अनुसार सईद बन्दर में हम मोटरों पर सवार होने के लिए चार-चार की टोलियों में विभक्त हो गए। दो अमरीकन महिलाएँ, मैं और दिल्ली के एक प्रसिद्ध व्यापारी की पुत्री ने एक साथ जाने का निश्चय किया। मेरे मित्र मिस्टर झिलानी और मेरे बम्बई के एक दूसरे मित्र भी इस यात्रा में हमारे साथ थे।

जिन्हें दस दिन तक कोई देश देखने का अवसर न मिला हो, उन्हें जब जहाज सईद बन्दर के निकट पहुँचने लगता है, तब बड़ा सुहावना मालूम होता है। महान् अफ्रीका के दूरस्थ प्रदेश को, जो सर्वथा नग्न और निर्जन पड़ा था, ऊबड़-खाबड़ समुद्री किनारे को, जो नीचे की नील जल-राशि के सम्मुख विशाल दीवारों के समान खड़ा था, देखना हम सबको बहुत भला प्रतीत हुआ। इतने दिनों के बाद फिर से मनुष्य की बस्ती देखने की आशा से समस्त यात्री सतृष्ण नेत्रों के साथ डेक पर आ जमा हुए।

पाठक जानते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि-कोण से यह नहर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। स्वेज कैनाल कम्पनी, जिसका कि इस नहर पर अधिकार है, एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। परन्तु अधिक हिस्से अब ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के हाथ में हैं, यद्यपि इसके कर्मचारी प्रायः फ्रांसीसी हैं। इसलिए स्वभावतः यह कहा जा सकता है कि नहर की कुंजी ब्रिटेन के हाथ में है, जो कि राजनैतिक दृष्टिकोण से उसके लिए एक महान् जय-हर्ष का विषय है। स्वेज-शहर काफी बड़ा है और उसका विकास मुख्यतः कम्पनी की बहु-संख्यक इमारतों और उसके अफसरों के बँगलों से हुआ है। शहर का नवीन विकास सर्वथा आधुनिक है और जो लोग वहाँ रहते हैं, उनकी माँगों की पूर्त्ति के लिए वहाँ बहुत-सी बड़ी-बड़ी दूकानें खुल गई हैं। स्थानीय निवासियों की बस्ती जरा गंदी है। साधारण शिष्टाचार के बाद हम 'कुक' के लांच से किनारे पर गये और सीधे मोटर-कार पर सवार हो गए। हम द्रुत-गति से कैरो की ओर, जो बन्दर से लगभग ७५ मील की दूरी पर है, बढ़े। हमारा मार्ग मुख्यतः रेगिस्तान से होकर गया था। सड़क के दोनों ओर नग्न पर्वत के सर्वथा उदासीन

दृश्य के अतिरिक्त और कुछ न था। सौभाग्य से प्रातःकाल शीतल था, इसलिए हमें बहुत बेचैनी का अनुभव नहीं हुआ। 'कार' का ड्राइवर एक नवयुवक यूनानी था, जो मिस्र देश में छुटपन में ही आ गया था और तभी से वहाँ रहता है। उसकी अरबी निर्दोष और अँगरेजी साधारण थी। हमें ज्ञात हुआ कि यूनान में भीषण बेकारी के कारण यूनानियों की एक यथेष्ट संख्या समुद्र-पार करके मिस्र में आ बसी है। उसने कैरो की एक लड़की के साथ शादी कर ली है। उसने हमसे मिस्रियों की हास्यपूर्ण कहानियाँ कहीं कि वे किस प्रकार उसकी स्त्री के यूनानी गिरजे में दीक्षित हो जाने के कारण रुष्ट हैं। हमें बालू की बड़ी-बड़ी पहाड़ियाँ दिखाई पड़ीं। ये सब हिमाच्छादित पर्वत के समान श्वेत थीं और उस महान् मरुभूमि के ऊपर उठ रही थीं। कभी-कभी हमें हरियाली का एकाध छोटा टुकड़ा मिल जाता था, परन्तु मनुष्य की कोई बस्ती वहाँ नहीं थी। कहीं-कहीं सड़क की मरम्मत हो रही थी और बलिष्ठ सूडानी वहाँ काम कर रहे थे। वे प्रायः ऊँचे कद के लोग थे और उनका स्वास्थ्य अच्छा था। परन्तु उनके शरीर पर कपड़े बहुत कम थे। यह भूमि सर्वथा शून्य है और कहीं-कहीं कृषि के लिए जो कुछ प्रयत्न हुए भी हैं, वे सिंचाई का प्रबन्ध न होने के कारण असफल सिद्ध हुए हैं। वर्षा यहाँ बहुत ही कम होती है। सड़क की मरम्मत हो रही थी, परन्तु यह आशा की जाती है कि जब यह बन जायगी, तब कैरो के लिए मोटर की बहुत अच्छी सड़क होगी।

लगभग ११ बजे सर्वथा त्रस्त हालत में हम कैरो पहुँचे। इस नगर के बाहर का दृश्य अच्छा नहीं लगता। कैरो दो भागों में विभक्त है। सरकारी शहर में बहुत-सी आधुनिक इमारतें और आधुनिक दूकानें सुव्यवस्थित ढंग से बनाई गई हैं। इन इमारतों की बनावट फ्रांसीसी ढंग की है। कैरो हमें दो लाख से कुछ अधिक आबादी का एक बड़ा शहर प्रतीत हुआ। नये शहर में मुख्यतः योरपियनों की बस्ती है। वहाँ बहुत-से बड़े-बड़े होटल हैं, जो यात्रियों द्वारा बहुत अच्छी तरह संरक्षित जान पड़ते हैं। 'कुक' के कार्यालय के सामने हम रुके। वहाँ हमारे साथ स्थानीय गाइड जो बहुत अच्छी तरह अँगरेजी बोल सकते थे, कर दिये गए। उनके साथ हम सीधे कैरो के संग्रहालय में पहुँचे। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि यह मिस्री पुरातत्त्वों के अति प्रसिद्ध संग्रहालयों में है। हमने तूतनखामन की कब्र से निकाली हुई वस्तुओं का निकट से निरीक्षण किया और प्राचीन राजसी महल की विभिन्न वस्तुओं के रूप-रंग को, जो बिलकुल नए-से जान पड़ते थे, देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। कब्र में रक्खी गई शृंगार की विभिन्न वस्तुओं की कारीगरी और उन पर किए गए सुनहले काम का सविस्तर वर्णन करना असम्भव है। प्रदर्शन की वस्तुओं से ३,५०० वर्ष पूर्व की मिस्री संस्कृति का अनुमान किया जा सकता है। इन अवशेषों से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन दिनों के मिस्र-निवासी किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे। हमारी चार पहिए की गाड़ियों की तरह उनके रथ होते थे। उनके रथों में मील बतानेवाले यन्त्र भी थे। हमारे पाठक मिस्र देश की ममियों और मिस्री पुरातत्त्व के महान् ज्ञाता मिस्टर होवर्ड कार्टर द्वारा खोजे गए अन्य अवशेषों के सम्बन्ध में पढ़ चुके हैं। इसलिए मैं पुरातत्त्व-सम्बन्धी खोजों का यहाँ वर्णन न करूँगा।

इस संग्रहालय में रोमन-काल की, जो पुरातत्त्व-वेत्ताओं को अध्ययन की यथेष्ट सामग्री प्रदान करता है, कुछ आश्चर्यजनक मूर्तियाँ भी हैं।

संग्रहालय देखने के पश्चात् हम देशी बाजार में गये। वहाँ यहूदियों, इटालियनों और यूनानियों की बड़ी-बड़ी दूकानें थीं। उनमें से अधिकांश ठग थे और जब तक आप उनसे खूब दृढ़तापूर्वक सौदा न करें, आपका ठगाया जाना अवश्यम्भावी है। हमने कुछ वस्तुएँ खरीदीं और होटल में गये। भोजन के बाद हम पिरामिड देखने निकले। पिरामिडों को जो सड़क जाती है, वह कैरो की अत्यन्त सुन्दर सड़कों में से एक है। सड़क के दोनों ओर मिस्र के श्रीमन्तों के बँगले हैं। पहाड़ी के नीचे उपत्यका में एक मील जाकर सड़क समाप्त हो जाती है। यहाँ से पिरामिडों तक जाने के लिए ऊँट मिलते हैं। ये ऊँट बड़े ही सीधे होते हैं। यद्यपि आरम्भ में यह सवारी बड़ी खतरनाक जान पड़ी तथापि हमें इससे बहुत आनन्द मिला। प्राचीन पिरामिड, जिनके विषय में मिस्री पुरातत्त्व के विशारदों ने आश्चर्यजनक बातें बतलाई हैं, वास्तव में दर्शनीय हैं और जो स्वेज नहर से गुजरते हैं, उन्हें यह अवसर न चूकना चाहिए। हम पिरामिडों के आन्तरिक भाग में गये और प्राचीन मिस्रियों ने उन विशाल स्तूपों की कैसे रचना की है, यह देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। प्रत्येक पत्थर समान पूर्ण घनाकार वजन में लगभग १५ टन के होगा। पिरामिड नम्बर १ की उँचाई लगभग ५०० फीट है और इसकी बनावट ऋकचायत के समान है। अन्दर के भाग में शिखर तक जाने के लिए सीढ़ियाँ हैं। मैं और मेरे चीनी मित्र मिस्टर कू चोटी तक गये। परन्तु जब हम नीचे उतरे तब सर्वथा थक गए थे।

पिरामिड देखने के बाद टामस कुक का मार्ग-दर्शक हमें नील नदी में एक नाव पर ले गया। वहाँ एक अत्यन्त रमणीक दृश्य के बीच में हमने चाय पी। सुन्दर नील के दोनों किनारों पर कैरो के धनी पाशाओं के सुन्दर बँगले हैं। नदी भरी हुई थी और सम्पूर्ण पास-पड़ोस दुर्लभ सौंदर्य से व्याप्त था। योरपियन ढंग से बिछाए गए उन उद्यानों के मध्य में भी पूर्वीय वैभव का अभाव नहीं था। नील नदी में इस नौका-भ्रमण का यात्री बड़ा आनन्द लेते हैं। बहुत-से लोग जो योरप से कैरो में छुट्टी का दिन बिताने आते हैं, वे नदी-मार्ग में स्वास्थ्यप्रद वायु का आनन्द लेते लक्सर तक जाते हैं। संध्या की ठण्डक बड़ी सुहावनी थी। उसमें हमने नदी के किनारे शान्तिपूर्वक आधा घंटा बिताया। हमारे देश में बहुत-सी सुन्दर नदियाँ हैं, परन्तु आर्थिक अभावों के कारण हम उनका उपयोग करने से वंचित रह जाते हैं।

सन्ध्या को हम पोर्ट सईद की गाड़ी पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन को द्रुत-गति से लौटे। गाड़ी काफी भरी थी। इस यात्रा में लगभग चार घंटे लगते हैं और रेल नील नदी के उपजाऊ कछार से होकर गुजरती है। सौभाग्य से सन्ध्या निर्मल थी, इसलिए हमें नील की उपजाऊ घाटी की भी एक झलक देखने को मिल गई। वहाँ के निवासी स्पष्ट रूप से खुशहाल प्रतीत होते थे। साधारण किसान भी यथेष्ट रूप से प्रसन्न थे और स्त्रियों की पोशाक अच्छी थी। एक स्थान पर एक बड़ा मेला लगा था। वहाँ हमने बहुत-सी चर्खियाँ देखीं, जो सुन्दर पोशाकों से युक्त बच्चों को लिए आनन्द से घूम रही थीं। हम कई कस्बों से भी गुजरे, जिनमें आधुनिक इमारतें दिखाई पड़ीं। अधिकांश कस्बों में

बिजली की रोशनी हो रही थी। उपहार-गृहों में लोगों की भीड़ दिखाई पड़ी। एक नवयुवक मिस्री हमारे साथ रेलगाड़ी में सवार था। वह मामूली अँगरेजी बोल लेता था और वह हमें बहुत सुखदायक साथी प्रतीत हुआ। उसने हमें बताया कि गत महायुद्ध के बाद से देश काफी सँभल गया है और रहन-सहन के औसत दर्जे में उन्नति हुई है। उसका सम्बन्ध प्रगतिशील दल से है और कट्टर धारणाएँ उसमें नहीं हैं। उस ऋतु की मुख्य फसल कपास थी। पौधे नये थे और उनमें ओज था। कपास की इन हरी-हरी घनी झाड़ियों का देखना बड़ा रुचिकर प्रतीत होता था।

आठ बजे शाम के लगभग हम सईद बन्दर के निकट एक स्टेशन पर पहुँचे। यहाँ एक दुर्घटना हो गई और सौभाग्य से भीषण काण्ड होते-होते बच गया। दो डिब्बे जो एक-दूसरे से स्प्रिंगदार कटियों से जुड़े हुए थे, टूट गए और दूर जा पड़े। चूँकि गाड़ी अभी छूटी ही थी और उसकी चाल में तेजी नहीं आई थी, इसलिए वह उलटने से बच गई। यह दुर्घटना इंजीनियरिंग विभाग की समुचित निगरानी न होने के कारण हुई थी। इस व्यवस्था-पद्धति को कोसते हुए इस स्टेशन पर हमें लगभग दो घंटे प्रतीक्षा में बिताने पड़े। अधिकारी इस दुर्घटना के लिए बड़ा खेद प्रकट कर रहे थे। यदि रेल की चाल ३० मील प्रति घंटा के हिसाब से होती, तो इसका अन्त भयानक होता। दो घंटे के पश्चात् हम सईद बन्दर के स्टेशन पर किसी प्रकार पहुँचे।

बन्दरगाह में तेज प्रकाश हो रहा था और समुद्री हिस्से में ऐसा जान पड़ता था, मानो दिवाली हो रही हो। बन्दरगाह में १५ से अधिक जहाज थे और उन सबमें तेज रोशनी हो रही थी। हममें से कुछ लोग बन्दरगाह देखना चाहते थे। इसलिए माँझी से कहा कि वह हमें एक घंटे बाद जहाज पर ले जाने के लिए आवे। हम बाजार में टहलते हुए गये और याददाश्त के लिए कुछ चीजें ख़रीदीं। कुछ मुहल्ले बहुत गंदे थे और वेश्या-गृहों से भरे हुए थे। मार्ग-दर्शक ने समय पर हमें उधर न जाने के लिए सावधान कर दिया था।

मिस्र में शिक्षा का औसत प्रचार बहुत कम है और यद्यपि वहाँ अब बहुत-से आधुनिक स्कूल खुल गए हैं तथापि जन-साधारण में शिक्षा का प्राबल्य होने में अभी पीढ़ियाँ लग जायँगी। तो भी जन-साधारण में शिक्षा के प्रचार की समस्या वहाँ इतनी दारुण नहीं है, जितनी कि हमारे देश में है। उपजाऊ हिस्से के लोगों की आय का औसत हमारे देश के किसानों की आय के औसत से अधिक है और उनका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा है।

३—इटली में मेरा प्रथम सप्ताह

सईद बन्दर से ब्रिंडिसी की यात्रा बड़ी सुहावनी थी। लाल सागर से आगे बढ़ने पर ठंढ मालूम पड़ने लगी और हमें गर्म कपड़े पहनने पड़े। भूमध्य-सागर अत्यन्त शान्त था। धूप चटकीली थी, विलक्षण मन्द वायु बह रहा था और दिन मनोरम और ठंढे थे। यात्रियों ने इस ऋतु का पूर्णरूप से आनन्द लिया। हमारे मित्र श्रीयुत के०....तो अपनी प्रसन्नता को

बिना प्रकट किए न रह सके। वे इतने जोर जोर से गाने और नाचने लगे कि बहुत-से गम्भीर लोगों ने उनकी कड़ी आलोचना अवश्य की होगी। सारांश यह कि उन उज्ज्वल दिनों ने प्रत्येक व्यक्ति को आनन्द-विभोर कर दिया था।

तीसरे दिन यूनान के निकट के छोटे-छोटे द्वीप दृष्टिगोचर होने लगे। उनमें से कुछ में लोग बसे हुए थे, परन्तु अधिकांश चट्टानी पहाड़ होने के कारण उजाड़ थे। चौथे दिन लगभग आठ बजे प्रातःकाल हम ब्रिंडिसी पहुँचे। मैं और मेरे साथ कुछ और मित्रों ने ब्रिंडिसी में उतरने का निश्चय किया, इसलिए हमने अपने इरादे की सूचना 'पर्सर' को दी और हमें अपने पासपोर्ट पर 'विसा' मिल गया। हमने अपना रुपया पहले ही इटालियन सिक्के—लिरा—में बदल लिया था, जो हमें एक पौंड में साठ के हिसाब से मिला। उस समय युद्ध की चर्चा नहीं थी, इसलिए विनिमय की दर स्थिर थी। चुंगी घर के साधारण शिष्टाचारों से छुट्टी पाने पर हमने दो टैक्सियाँ किराए पर लीं और शहर देखने निकले।

ब्रिंडिसी गन्दा शहर है और सिवा इसके कि वह एक बन्दरगाह है, उसका कोई और महत्त्व नहीं है। फौजी सिपाहियों की एक बड़ी संख्या को सड़क पर मार्च करते हुए हमने एक बड़े खुले मैदान की ओर, जहाँ रविवार का सैनिक-प्रदर्शन किया जा रहा था, जाते हुए देखा।

सड़क ऊबड़-खाबड़ पत्थरों की बनी, तंग और गन्दी थी। एक योरपीय शहर का हम लोगों पर जो पहला प्रभाव पड़ा, वह अत्यन्त निराशाजनक था। ठाकुर साहब ने सीधा लन्दन जाने की अपनी मूल योजना में परिवर्तन कर लेने के कारण अपने आपको बहुत कोसा। मेरी योजना बदलवा देने के कारण श्रीयुत डी....ने बहुत खेद प्रकट किया। खैर, श्रीयुत लाल ने विश्वास दिलाया कि हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। उनके मित्र श्रीयुत गोविल का, जो गत वर्ष ब्रिंडिसी उतरे थे, कहना था कि इटली की विचित्र घाटियों से होकर अपनी नेपल्स की यात्रा में उन्होंने कुछ अत्यन्त चित्रोपम दृश्य देखे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि जब हम इटली के दक्षिणी पर्वतों की घाटी से होकर गुजरे, तब हमें श्रीयुत लाल का वक्तव्य सत्य प्रतीत हुआ।

सब मिलाकर हम आठ व्यक्ति थे, परन्तु हममें से कोई इटालियन भाषा का एक शब्द भी नहीं बोल सकता था, इसलिए हमने टामस कुक से एक गाइड लिया। शहर में दो घंटे घुमा-कर वह हमें सही-सलामत स्टेशन पर ले गया। स्टेशन पर खाने के लिए हमें सिर्फ कुछ रोटी और मक्खन मिल सका, लेकिन फल यथेष्ट मिले। हम सब लोग बहुत भूखे थे, इसलिए जो कुछ भी मिला, उसे खूब खाया। लगभग १२ बजे दिन को हमने नेपल्स की गाड़ी पकड़ी। गाड़ी बहुत भरी थी, परन्तु हमें आराम के साथ बैठने के लिए जगह मिल गई। इटली से होकर जानेवाले यात्रियों को रेलवे वास्तविक किराए में ६० प्रतिशत की रिआयत करती है। दिन कुछ कुछ गर्म हो चला था, इसलिए इस यात्रा में हमें पेय पदार्थों का यथेष्ट सेवन करना पड़ा। टामस कुक का आदमी हमारे लिए बड़े काम का निकला, परन्तु अपनी सेवाओं का उसने हमसे बहुत अधिक मूल्य लिया। औसत दर्जे के मुसाफिरी असबाब को रेल के डिब्बों तक लिवा जाने का हमें ८ आने देना पड़ा। हमें ज्ञात हुआ कि गत चार वर्षों में दक्षिणी इटली की

उल्लेखनीय उन्नति हुई है। गेहूँ और चावल की हमने अत्यधिक कृषि देखी। इटली अपनी शराब के लिए प्रसिद्ध है और हमने पहाड़ों की ढाल पर अंगूर के बड़े-बड़े बाग देखे। कुछ स्थानों का दृश्य तो अत्यन्त आश्चर्यजनक था। पर्वतों की ढालों पर अंगूर-उद्यानों, छोटी-छोटी नदियों और सुन्दर गृहों का दृश्य हमारे लिए सर्वथा नवीन था। जिन स्टेशनों से हम गुजरे, वे बड़े नहीं थे; परन्तु पानी, सोडा और आइस-क्रीम सर्वत्र सुलभ था। ब्रिंडिसी में हमने टामस कुक से नेपल्स में एक होटल की व्यवस्था करने के लिए कहा था। नेपल्स में हम रात में पहुँचे। गाड़ी से उतरते ही हमें टामस कुक का आदमी मिला। उसने तुरन्त हमारे असबाब के लिए प्रबन्ध किया और नेपल्स की खाड़ी के ठीक ऊपर अधिष्ठित एक अच्छे होटल में ले गया। वह रात विशेष रूप से तारों से पूर्ण थी और बहुसंख्यक बिजली की बत्तियों के प्रकाश में हमने खाड़ी की एक झलक देखी।

हमारे पाठकों को यह भली भाँति मालूम होगा कि नेपल्स यथेष्ट प्राचीन नगर है। विसूवियस का जीवित ज्वालामुखी नेपल्स की खाड़ी पर प्रहरी के समान खड़ा है। अतीत काल से यह ज्वालामुखी पड़ोस के नगर का कई बार विध्वंस कर चुका है। प्राचीन रोमन नगर—प्रसिद्ध पाम्पियाई—इसी विसूवियस से निकले लावा में समा गया था। जो यात्री इटली से गुजरते हैं, वे विसूवियस और पाम्पियाई का नगर, जिसकी अब बहुत काफी खुदाई हो चुकी है, देखने से नहीं चूकते। पाम्पियाई के खँडहरों से रोमन नगर का प्राचीन वैभव, उसकी संस्कृति, कला और खेल सब हमारे सामने अत्यन्त स्पष्ट रूप से आ जाते हैं। रोमन-इतिहास और संस्कृति से सम्बन्ध रखनेवाली यहाँ जो पुरातत्त्व की वस्तुएँ निकली हैं; वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। प्रत्येक वर्ष हजारों यात्री पाम्पियाई देखने आते हैं।

पाम्पियाई नगर को उसका विधिवत् स्वरूप ईसा के जन्म से छः शताब्दी पूर्व यूनानियों ने दिया था। फोनेशिया और यूनान के नाविकों का उतरने का अड्डा होने के कारण यह नगर बहुत प्रसिद्ध हो गया था। सन् ६३ ईसवी में भूकम्प से पाम्पियाई की भीषण हानि हुई थी, तो भी यह समृद्धिशाली व्यापारिक केन्द्र बना रहा और भूकम्प के बाद ही यह नगर फिर से बस गया। प्रथम भूकम्प के सोलह वर्ष बाद अन्तिम विध्वंस संघटित हुआ। विसूवियस एकाएक जागृत हो उठा और अपनी चोटी से बड़ी शीघ्रता के साथ जलती हुई राख और लावा की घोर वृष्टि करने लगा। पाम्पियाई के ऊपर २० से २५ फुट तक मोटी राख पड़ गई। उसके निवासी ढहते हुए मकानों से भागे; परन्तु उनमें बहुत-से हवा में फैली जहरीली भाप से दम घुट जाने के कारण मर गए।

इस भीषण दुर्घटना ने विद्वानों के अध्ययन के लिए सांस्कृतिक काल के अनेक अमूल्य स्मारकों को सुरक्षित रक्खा है। पाम्पियाई का पता लोगों को सोलहवीं शताब्दी में चल गया था, यद्यपि वास्तविक खुदाई सन् १८०६ में आरम्भ हुई। तब से यह कार्य अविश्रान्त भाव से चल रहा है। उल्लेखनीय इमारतें, जिनमें 'हाउस आफ वेट्टी', 'हाउस आफ सिलवर वेडिंग' और 'हाउस आफ गोल्डेन क्यूपिड' सम्मिलित हैं, अभी ३० वर्ष हुए, प्रकाश में लाई गई हैं। सुव्यवस्थित जीर्णोद्धार और पुनर्निर्माण ने इसे पुरातत्त्व के क्षेत्र में संसार का सबसे सफल प्रयास प्रमाणित किया है।

पुरातत्त्व की दृष्टि से अन्य प्राचीन नगरों के ध्वंसावशेषों के विपरीत पाम्पियाई में वास्तु-कला की अनेक विभिन्न शैलियों का साक्षात् होता है। कहीं-कहीं लावा के ढोकों से युक्त पत्थर के गम्भीर और स्थूल तोरण हैं और कहीं मूर्त्तियों और भित्तिचित्रों से अलंकृत गृह-द्वार हैं, जो निर्माण-कला की एक सर्वथा भिन्न शैली का परिचय देते हैं। विनाश के पूर्व इस नगर की जनसंख्या सम्भवतः २५,००० थी। नगर के स्थायी निवासियों के अतिरिक्त उसके औद्योगिक और व्यापारिक महत्त्व के कारण व्यापारियों की एक बहुत बड़ी संख्या उसमें आकर वास किया करती थी।

हम नेपल्स में तीन दिन ठहरे और पाम्पियाई, विसूवियस और संग्रहालय देखा। संग्रहालय में वे विचित्र मूर्त्तियाँ, जो खोदकर निकाली गई हैं, प्रदर्शन के लिए रक्खी गई हैं। नेपल्स के इस संग्रहालय में बहुत-सी विख्यात रोमन-मूर्त्तियाँ भी हैं। कुछ मिस्र की विख्यात मूर्त्तियाँ भी इसमें संगृहीत हैं। रोमन लोगों की उन दिनों की महान् संस्कृति को देखकर चकित हो जाना पड़ता है। यूनानी मूर्त्तियों में से कुछ तो बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। वे अधिकतर पौराणिक विषयों से सम्बन्ध रखती हैं। यूनानी पुराण-शास्त्र अत्यन्त मनोरंजक है। ये संगमरमर की प्रतिमाएँ उसी यूनानी पुराण के महान् योद्धाओं के पराक्रम, महान् प्रेमियों और शक्तिमान् तथा निर्दयी राजाओं की गाथाएँ कहती हैं। चारुवेनस, अनुपम ईरिस और नील नदी की प्रस्तर प्रतिच्छाया आदि उन प्रसिद्ध मूर्त्तियों में से कुछ हैं, जिनका नेपल्स के इस संग्रहालय को गर्व है। सभी संगमरमर सफेद नहीं हैं, किन्तु विभिन्न रंगों के हैं और विभिन्न देशों से लाये गए थे। ये पत्थर अब अप्राप्य हैं, इसलिए ये प्रतिमाएं बड़ी मूल्यवान् हैं।

हमारे नेपल्स में ठहरने के दूसरे दिन एक इटालियन भद्र पुरुष से, जो अच्छी अँगरेजी बोल सकते थे, मेरी भेंट हुई।

इटालियन संस्कृति और फैसिस्ट आन्दोलन के सम्बन्ध में मेरी उनकी कई घंटे बड़ी मनोरंजक बातें हुईं। मैंने उन्हें और उनकी प्रिय पत्नी को 'लंच' के लिए निमन्त्रित किया और उसके बाद हम खाड़ी के गिर्द के बागों में जी बहलाने को गये। फैसिस्ट सरकार कायम होने के बाद से इटली की चतुर्मुखी उन्नति के सम्बन्ध में उन्होंने बातें करनी शुरू कीं। कला, व्यवसाय और कृषि की उन्नति अत्यन्त स्पष्ट है। देश में मुसोलिनी की लोकप्रियता बहुत बढ़ी हुई है। मैंने उनसे पूछा कि क्या मुसोलिनी विदेशियों से मिलते हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि आजकल यह सम्भव नहीं, क्योंकि प्रत्येक डिक्टेटर के शत्रु होते हैं और उनके जीवन पर जो पिछला आक्रमण हुआ, उससे अब किसी को उनसे मिलने की आज्ञा नहीं मिलती। इन इटालियन महोदय ने नगर की सामाजिक स्थिति दिखाने के उद्देश्य से अपनी ही ओर से हमसे प्रस्ताव किया। हम मजदूरों के कुछ घर देखने गये। सरकार ने जो नए मकान बनवाए हैं, वे अत्यन्त स्वच्छ और सुखप्रद हैं; परन्तु इन्हें अन्य योरपीय देशों के समकक्ष लाने के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। दक्षिणी इटली के मजदूर-श्रेणी के लोग उतने साधन-सम्पन्न नहीं हैं, जितने उत्तरी प्रान्तों के मजदूर हैं। खैर, मेरे मित्र ने बतलाया कि पहले उनकी स्थिति और भी खराब थी और अब तो कृषि-सम्बन्धी कार्यों के विस्तार के कारण उनकी बहुत कुछ उन्नति हो गई है। इटली ने

कृषि-सम्बन्धी उपजें अब बाहर से मँगाना बहुत कुछ कम कर दिया है और उसने शराब, चावल, ताजे फल और मुरब्बे बाहर भेजने में यथेष्ट वृद्धि की है।

इटली में होटलों का व्यय उनकी श्रेणी के अनुसार कम और अधिक पड़ता है। बहुत-से होटलों में मूल्य के सम्बन्ध में मोल-तोल करना पड़ता है।

हमारे देश की दूकानों की भाँति वहाँ की दूकानों में भी मोल-तोल करने की आवश्यकता पड़ती है। साधारणतया दूसरे दर्जे के अच्छे होटल में ठहरने और भोजन का व्यय दस पया प्रतिदिन बैठता है। भोजन अच्छा होता है और फल यथेष्ट मिलते हैं। इटली में संगीत का बहुत प्रचार है और उसका संगीत सारे योरप में विख्यात है।

नेपल्स में तीन दिन ठहरने के पश्चात् हम इटली की फैसिस्ट सरकार की राजधानी रोम के लिए रवाना हुए। यह यात्रा नेपल्स से केवल छः घंटे के लगभग की होने के कारण सुखप्रद प्रतीत हुई। यहाँ इटालियन टूरिस्ट कम्पनी का एजेण्ट हमें मिला और शहर के बीच में हमें एक अच्छे होटल में ले गया।

४—सौन्दर्यशाली रोम

कोई भी भारतीय यात्री जहाज पर से उतरकर जब योरप के समुद्रतट पर पैर रखता है, तब वह जिस ओर भी दृष्टि डालता है, उसे विचित्रता ही विचित्रता दिखाई पड़ती है। वहाँ के मनुष्य, उनका रहन-सहन, पशु-पक्षी तथा प्राकृतिक दृश्य आदि वस्तुएँ भारतवर्ष से सर्वथा भिन्न हैं, अतएव अकस्मात् इस परिवर्तित जगत् में आकर वह चकित हो जाता है और कुछ दिनों तक जब तक कि वह वहाँ की हर एक वस्तु से अभ्यस्त नहीं हो जाता, हत-बुद्धि-सा बना रहता है। अपनी मातृभूमि के जिस वातावरण में उसका पालन-पोषण हुआ है तथा जिस संस्कृति से वह सदा से प्रभावित होता आया है, योरप का वातावरण तथा वहाँ की संस्कृति इससे सर्वथा भिन्न है, अतएव वहाँ पहुँचकर भारतवासी जहाँ कहीं भी जाते हैं या जो कुछ भी करते हैं, उन्हें एक प्रकार की उद्विग्नता का-सा अनुभव होता है।

योरप और भारतवर्ष की सामाजिक तथा आर्थिक अवस्था में आकाश-पाताल का अन्तर है। हमारा भारतवर्ष भू-मण्डल के मध्य उष्ण कटिबन्ध पर स्थित एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ की संस्कृति और प्रकृति मानव-जाति में एक ऐसी मनोवृत्ति उत्पन्न करती है, जो योरप के निवासियों की मनोवृत्ति के सर्वथा प्रतिकूल है और उसके कारण भारतवासियों में एक विशेष प्रकार के जीवन के दृष्टिकोण का निर्माण होता है। हमारे देश में परम्परा से यह शिक्षा चली आ रही है कि समस्त भौतिक विभूतियाँ निःसार एवं निरर्थक हैं, अतएव सरल जीवन व्यतीत करके धर्मचिन्तन में समय व्यतीत करना ही मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य है। इस शिक्षा के कारण मनुष्य के हृदय में एक भिन्न प्रकार की ही प्रवृत्ति उत्पन्न होती है और यही एक ऐसी बात है, जिसके कारण पूर्व और पश्चिम कभी मिल नहीं सकते। इस विचार-

पाम्पियाई—एक गृह-उद्यान
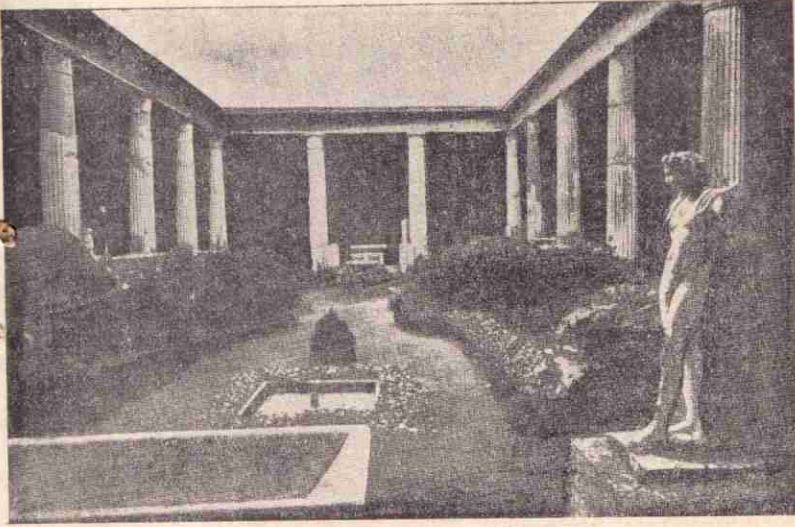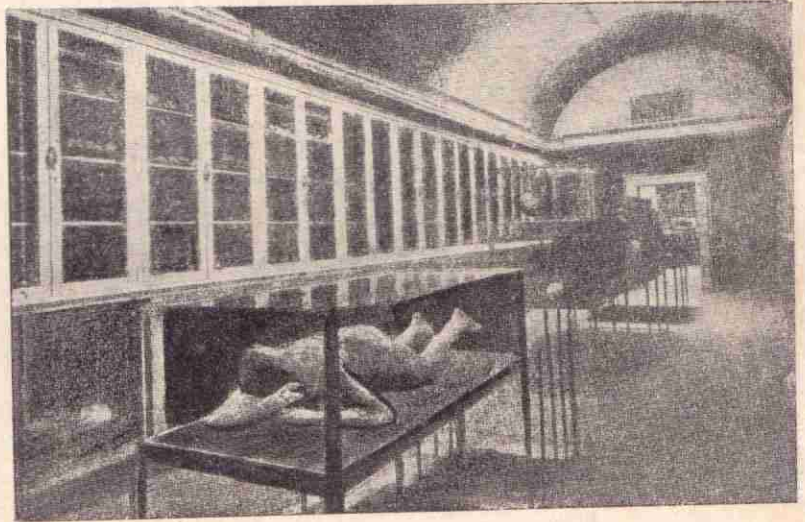
पाम्पियाई—संग्रहालय
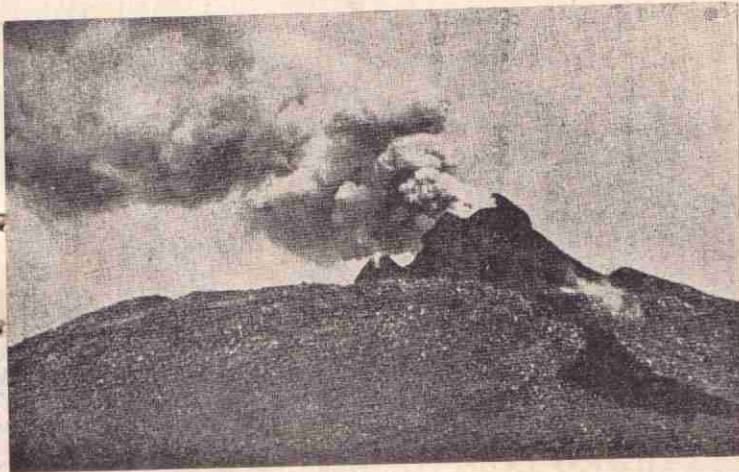
विसूवियस ज्वालामुखी

डोज का महल
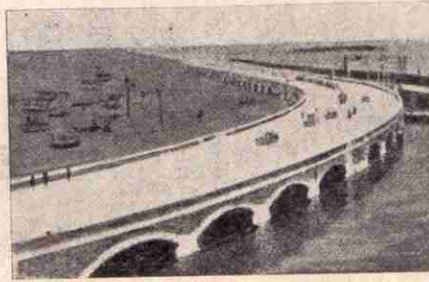
लेंगून के पार नया पुल
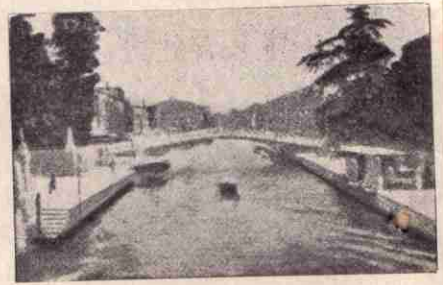
वेनिस की एक नहर

दो आस्ट्रियन कृषक सुन्दरियाँ

बुडापेस्ट के किसान

दाएँ : वायना विश्वविद्यालय

नीचे बाईं ओर : आस्ट्रिया के भूतपूर्व शाह का ग्रीष्मनिवास

नीचे दाईं ओर : ग्रीष्मनिवास का एक दृश्य
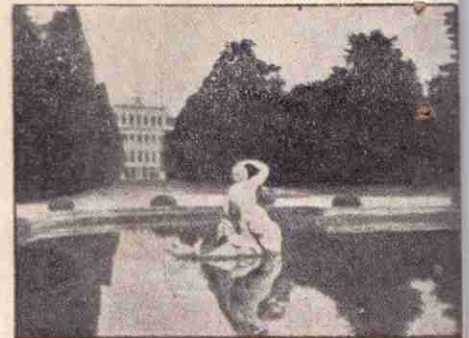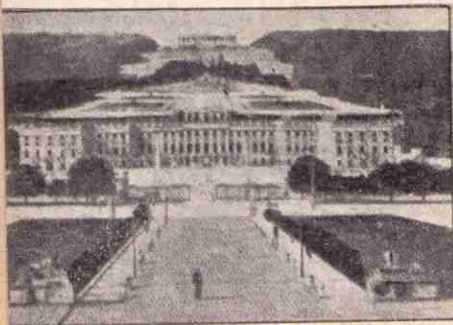
धारा और प्रवृत्ति के ही कारण जब कभी हमारे देशवासी पाश्चात्य सभ्यता तथा रीति-नीति का कुछ अंश अस्वाभाविक भाव से ग्रहण कर लेते हैं, तब उनमें सामंजस्य नहीं आता, उनके उस पूर्व और पश्चिम के सम्मिश्रण में तेल और जल का सा पार्थक्य स्पष्ट रूप से विद्यमान रहता है। वास्तव में हमारे देशवासियों के लिए यह बहुत ही कठिन बात है कि वे पाश्चात्य संस्कारों को ग्रहण करके अपने जीवन में इस प्रकार मिला लें कि उनमें जरा भी कृत्रिमता न मालूम पड़े। हमारे नागरिक जीवन में धीरे-धीरे पाश्चात्य रीति-नीति की बहुत-सी बातें सम्मिलित हो गई हैं, तथापि ग्राम्य जीवन में वह बात नहीं है। देहातों का जीवन नागरिक जीवन से बहुत ही भिन्न प्रकार का है। आज भी देहातों में हमारी कुछ प्राचीन प्रथाएँ बहुत ही अधिक मात्रा में अपनी प्रभुता स्थापित किए हुए हैं। ग्रामीण और नागरिक जीवन में इस प्रकार की भिन्नता का कारण है वहाँ की आर्थिक भिन्नता।

एशिया की तुलना में योरप एक नया महादेश है। यहाँ की सभ्यता के विकास का आरम्भ उस समय हुआ, जब एशिया की सभ्यता की काफी उन्नति हो चुकी थी। ईसवी सन् जब आरम्भ हुआ था, तब से योरप के भिन्न-भिन्न देशों के आन्तरिक सम्बन्धों में अधिक घनिष्ठता आ गई है। इससे हमें ज्ञात होता है कि वर्तमान युग में योरप की संस्कृति के मूल-स्रोत में इस प्रकार की विभिन्नता नहीं है, जैसी एशिया के देशों की संस्कृति में है। धर्म ने ही इस प्रकार की एकता स्थापित की है। इसमें सन्देह नहीं कि ईसाई योरप में भी साम्प्रदायिक विभिन्नता है और भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों—रोमन कैथलिक तथा प्रोटेस्टेंट आदि—के धार्मिक सिद्धान्तों में भी कुछ अन्तर है; किन्तु इस अन्तर के कारण उनकी मूल संस्कृति से इतनी अधिक विभिन्नता नहीं है, जितनी एशिया में है।

एशिया में तीन ऐसे धर्म हैं, जो प्रधान रूप से व्यापक हैं। वे हैं हिन्दू, मुसलमान और बौद्ध, जिनके सिद्धान्त मुख्य संस्कृति का निर्माण करने में एशिया के निवासियों को विशेष रूप से प्रभावित कर सके हैं। परन्तु आजकल चीन और जापान के निवासी बौद्ध-धर्म के मूल सिद्धान्तों का अटल श्रद्धा के साथ अनुसरण नहीं कर रहे हैं। वे लोग इस समय अपनी शक्ति भर अधिक से अधिक मात्रा में पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करने का प्रयत्न कर रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने में जापानवालों को जो सफलता मिल रही है, उसका कारण उनकी औद्योगिक उन्नति है, क्योंकि इस औद्योगिक उन्नति के लिए जापान को योरप से अधिक सम्पर्क में आना पड़ा है। परन्तु भारत की परिस्थितियों में तो बहुत ही विभिन्नता है। हमारे लिए यह सहन करना सम्भव नहीं है कि अपनी परम्परागत प्रथाएँ और आचार-व्यवहार छोड़ दें। भौतिक विभूतियों के लिए हम योरप की संस्कृति भी नहीं ग्रहण कर सकते। इस प्रकार भारत के लिए इस समस्या का कोई समाधान ही नहीं है।

रोम सचमुच नागरिकों की राजधानी है। यह नगरी हमें बहुत ही पसन्द आई। संयोगवश जिस होटल में हम ठहरे, उसी में हमारे देश के और भी बहुत-से लोग थे और उनमें से कतिपय ऐसे व्यक्ति भी थे, जो हमारे परिचित थे। इन लोगों से अकस्मात् मिलकर हमें बड़ा सुख मिला। मेरे मित्र एस—से आज दस वर्ष

के बाद मेरी मुलाकात हुई। विद्यार्थी-जीवन में वे मेरे बड़े ही घनिष्ठ मित्र थे। इनकी जीवन-यात्रा का मार्ग बहुत ही घटनामय है और उसी सिलसिले में इन्होंने एक इटालियन कन्या का पाणिग्रहण कर लिया है। परन्तु खेद है कि पाँच वर्ष तक बहुत ही सुखमय दाम्पत्य-जीवन व्यतीत करने के बाद इन्हें उससे सदा के लिए वंचित हो जाना पड़ा। इन महोदय से मिलकर में सचमुच बहुत ही सुखी हुआ। इनसे मुलाकात होने पर यौवन के उन्मेष-काल की बहुत-सी मधुर स्मृतियाँ जागृत हो आई और इनके साथ जितना भी समय व्यतीत हुआ, वह बड़े ही आनन्द से कटा। किसी समय इन्हें बड़ा अच्छा काम मिल गया था। उस समय ये बहुत ही सुखी थे। परन्तु आजकल ये वहाँ के टूअरिस्ट आफिस में गाइड का काम करते हैं और उससे इन्हें इतनी ही आय होती है कि ये किसी प्रकार अपना निर्वाह कर लेते हैं।

रोम में आने पर रात्रि व्यतीत करके चारपाई पर से उठते ही हमारे दल ने वहाँ के स्थानीय टूअरिस्ट आफिस से अपने भ्रमण का कार्यक्रम स्थिर करने में सहायता माँगी। हम लोगों ने निश्चय कर लिया था कि यहाँ का भ्रमण हम चार दिन में समाप्त कर देंगे। अन्त में हमारा कार्यक्रम स्थिर हो गया और हम लोग एक ऐसे 'गाइड' के साथ, जो अँगरेजी खूब अच्छी तरह बोल सकता था, सबेरे दस बजे एक साथ निकल पड़े। उत्तम श्रेणी के गाइड को बहुत-सी भाषाएँ सीखनी पड़ती है और उसके लिए यह आवश्यक है कि वह भिन्न-भिन्न देश के निवासियों का कौतूहल निवृत्त कर सके। नेपिल्स का गाइड चार मुख्य भाषाएँ बोलता था और वह सर्वसाधारण के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ। योरप के हर एक नगर में स्त्री और पुरुष, दोनों ही प्रकार के गाइड उपलब्ध होते हैं। कभी-कभी तो, यदि किसी विशेष प्रकार के यात्री ने इच्छा प्रकट की, तो उसके कला, पुरातत्त्व तथा इतिहास-सम्बन्धी कौतूहलों की निवृत्ति के लिए विश्वविद्यालयों के अवसरप्राप्त अध्यापक तक गाइड के रूप में बुलाए जाते हैं। ये लोग यात्री को हर एक बात पूर्ण विवरण के साथ बतलाया करते हैं। रोम के टूअरिस्ट आफिसों में तीन सौ से भी अधिक गाइड हैं, जो समय-समय पर काम किया करते हैं। उनमें से कुछ तो इतने सुविज्ञ हैं कि वे वहाँ के ध्वंसावशेषों तथा स्मृति-चिह्नों का पूर्ण ऐतिहासिक विवरण अधिकार-पूर्वक जानते हैं और विषय को आसानी के साथ दूसरों को हृदयंगम कराने के लिए आवश्यक नकशे तथा चित्र आदि प्रामाणिक सामग्रियाँ भी अपने साथ रखते हैं।

रोम के नामकरण के सम्बन्ध में एक परम्परागत किंवदन्ती है। उस किंवदन्ती से यह ज्ञात होता है कि इसके पास से होकर जो रूमा नामक महानदी बहती थी, किन्तु आजकल जो एक क्षुद्र नदी के रूप में परिणत हो गई है, उसी के नाम पर इसका नामकरण हुआ है। पैलेटाइन नामक सुप्रसिद्ध नगर को जीतकर इट्रस्कन ने इसका यह नामकरण किया था। इस नगरी में अतीत युग के गौरव के कितने ही मनोमुग्धकारी ध्वंसावशेष वर्तमान हैं, जिनके कारण दर्शक वहाँ के गत वैभव का अनुमान अनायास ही कर लेता है और उसे अत्यधिक श्रद्धा के कारण घुटने टेक देने पड़ते हैं। योरप के ध्वंसावशेषों की खोज के सम्बन्ध में अभी हाल में जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, उसमें इस बात के यथेष्ट प्रमाण विद्यमान हैं कि इस नगर

के पहले के निवासी ईसा से लगभग चौदह शताब्दी पूर्व विद्यमान थे।

पहले दिन के भ्रमण में हमने जो-जो वस्तुएँ देखीं, उनमें रोम के मुख्य-मुख्य गिरजाघर भी हैं। उन समस्त गिरजाघरों में से दो विशेष महत्त्व के हैं। उनमें से एक है सेंट पीटर्स का और दूसरा सेंट जान का। हम लोग रोम की मुख्य-मुख्य सड़कों से होकर अपने गाइड के साथ कार से गये। रास्ते में वर्तमान रोम के जितने भी सार्वजनिक संस्थाओं तथा सरकारी कार्यालयों के भवन मिले, गाइड उन सबके सम्बन्ध में हम लोगों को बराबर बतलाता रहा। हम लोगों ने विक्टर एमैनुअल द्वितीय के सुप्रसिद्ध स्मारक को घूमकर देखा। यह स्मारक स्थापत्य कला का एक अद्‌भुत नमूना है और यह पन्द्रह-सोलह वर्ष में बनकर तैयार हुआ है। यह स्मारक एक बहुत ऊँची भूमि पर बनाया गया है। इसके सामने जो बरामदा है, उसके ऊँचे-ऊँचे खम्भे एक बहुत ही मनोमुग्धकारी दृश्य उपस्थित करते हैं। सामने के चबूतरे के बीच में विक्टर एमैनुअल द्वितीय की एक चमकीली और आकर्षक काँसे की स्वर्णरंजित मूर्त्ति बनी है। स्तम्भ के चारों ओर मुख्य-मुख्य घटनाएँ लिखी हैं। इस भवन में रोम का सर्वश्रेष्ठ म्यूजियम है, जिसमें बहुत-से महत्त्वपूर्ण चित्र तथा मूर्त्तियाँ सुसज्जित रक्खी हुई हैं। यह स्मारक ढाई सौ फुट ऊँचा है और इसकी परिक्रमा करती हुई एक बहुत चौड़ी सड़क चली गई है। यह वही भव्य भवन है, जिसके छज्जे पर खड़े होकर मुसोलिनी ने गत अक्टूबर में फासिस्ट इटली को यह घोषणा सुनाई थी कि अबीसीनिया में इटली की क्या नीति होगी।

एक चौड़ी नई बनी हुई सड़क इस स्मारक से कोलिसियम के ध्वंसावशेषों तक जाती है। यह कोलिसियम प्राचीन रोमन-काल का एक बृहत्काय प्रासाद है। गत बीस वर्षों से सरकार इस महान् प्रासाद के हर्म्यमुख को यथासम्भव पूर्णरूप देने में संलग्न थी। रोमन-गृह-निर्माण-कला का यह नमूना, जो अब खँडहर-मात्र रह गया है, २,००० वर्ष से अधिक प्राचीन है। प्रसिद्ध रोमन शिल्पी 'वेस-पासियन' ने इसकी रचना की थी। यहाँ वन-पशुओं के भयानक खेल होते थे, रथों की दौड़ होती थी और योद्धा लोग अपनी सम्पूर्ण उग्रता-व्यंजक शक्ति का प्रदर्शन करते हुए लड़ते थे। राज्य के शत्रु यहाँ मृत्यु-पर्यन्त लड़ने के लिए वन-पशुओं के आगे डाल दिए जाते थे। रंगांगण चार मंजिलों का बना था: प्रथम डोम, द्वितीय आयोनिक, तृतीय और चतुर्थ कारिन्थियन। तोरणों में प्रसिद्ध राजाओं और पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ लगी थीं। नष्ट होने से जो थोड़ी मूर्त्तियाँ बची हैं, वे संग्रहालयों में हटा दी गई हैं। प्रासाद का घेरा १६०० फुट से कुछ अधिक है और उँचाई लगभग २०० फुट है। कुछ सुरंगें भी हैं। इन्हीं में से वन-पशु खुले स्थान में ले जाए जाते थे। कहा जाता है कि इसके उद्‌घाटनोत्सव में जो १०० दिन तक मनाया गया था, ५,००० से अधिक भयावने वन-पशु मारे गए थे। बाद के वर्षों में असि-क्रीड़ा उठा दी गई थी। कहानियों से ज्ञात होता है कि एक बार एशियाई साधु, जो ईसाई था, यहाँ के वीभत्स खेल से त्रस्त होकर जिस स्थान पर योद्धा एक-दूसरे का प्राण लेने में संलग्न थे, वहाँ दौड़कर जा पहुँचा और उसने अपने आपको उनके बीच में डाल दिया ताकि वे पृथक् हो जायँ। साधु के इस कार्य से दर्शकों के आनन्द में इतना विघ्न पड़ा कि उन्होंने उसको

क्रोधावेश में मार डाला। परन्तु इस बलिदान का नैतिक प्रभाव बहुत बड़ा पड़ा और इसके बाद वन-पशुओं की लड़ाई भी ईसा के ५०० वर्ष पहले बन्द हो गई थी। इमारत का पहला विनाश ईसा से १,००० वर्ष पूर्व हुआ, जब शत्रुओं ने इसमें लूट-मार मचाई थी। उसके बाद एक गढ़ के रूप में इसका उपयोग किया जाने लगा। चौदहवीं शताब्दी के भूचाल में इसकी भीषण हानि हुई। बाद को कई महलों के निर्माण में इसने पत्थर की खान का काम किया।

कोलिसियम देखने के बाद हम सेंट पीटर्स का गिरजा देखने गये। योरप के कैथलिक गिरजों में यह सबसे अधिक सुन्दर कहा जाता है। इसके चौक के मध्य में पत्थर का एक मिस्री स्तम्भ है। पर इसमें कोई चित्राक्षर नहीं है और यह बहुत बड़ा है। यह विशाल स्तम्भ रोम में प्रसिद्ध सम्राट् कैलीगोला द्वारा लाया गया था। सेंट पीटर्स गिरजे के चौक का नकशा महान् इटालियन शिल्पी बरनिनि ने तैयार किया था। गिरजे के सामने दो सुन्दर फव्वारे हैं, जिनमें दूर के पहाड़ के झरने से पानी आता है। गिरजे का भीतरी भाग संगमरमर की मूर्त्तियों द्वारा आश्चर्यजनक रीति से सजाया गया है। कुछ मूर्त्तियाँ बहुत ऊँची हैं और दुर्लभ कारीगरी की द्योतक हैं। खम्भों की बनावट यूनानी ढंग की है और वे स्वर्णजड़ित हैं। छत में पच्चीकारी द्वारा ईसा और उनके शिष्यों के चित्र और टेस्टामेंट (बाइबिल) की बहुत-सी कहानियाँ अंकित हैं। गुम्बज की उँचाई का क्या कहना! जब हम पहुँचे, वहाँ उपासना हो रही थी। कैथलिक पादरी स्वर्ण के दीपाधारों में जलती हुई मोमबत्तियों से प्रकाशित वेदी के सामने लेटिन में मन्त्र-पाठ कर रहे थे। वातावरण अत्यन्त शान्त प्रतीत हो रहा था। बहुत-सी वृद्ध और कुछ युवती स्त्रियाँ हाथ जोड़े और घुटने टेके प्रार्थना कर रही थीं।

श्रीमती चटर्जी ने राह चलते हुए लोगों का अत्यधिक ध्यान आकर्षित किया। इसका कारण यह था कि उन्हें भारतीय स्त्रियों के देखने का बहुत कम अवसर मिलता है। इसी प्रकार अपने साँवले रंग के कारण मेरे मित्र श्रीयुत एल० भी आकर्षण के केन्द्र बने हुए थे। एक इटालियन महिला श्रीमती चटर्जी के मस्तक पर सिंदूर की लाल बिन्दी देखकर उस सम्बन्ध में अपने कौतूहल को न रोक सकी। श्रीमती चटर्जी ने उसे इस चिह्न का मर्म बताया। उसने करीब आधे घंटे तक हमसे भारतवर्ष के बारे में बातें कीं और श्रीमती चटर्जी की साड़ी की बड़ी प्रशंसा की। उसने हमें भोजन के लिए निमंत्रित भी किया, परन्तु अपने भारी कार्यक्रम के कारण हम उसे स्वीकार न कर सके।

इटली की स्त्रियाँ प्रायः सुन्दर होती हैं। उनके केश काले, बरोनियाँ और आँखें बड़ी और सुन्दर होती हैं। अपनी इँगलैंड और जर्मनी की बहिनों की अपेक्षा कद में वे छोटी होती हैं। समस्त योरप में सामाजिक पोशाक एक-सी ही ह। गाँव की स्त्रियाँ अपनी देशी पोशाक में मुश्किल से देख पड़ती हैं। धूप-प्रधान दक्षिणी जलवायु के कारण वहाँ के निवासियों का जैतूनी सफेद रंग होता है। परन्तु यह जलवायु उनमें आलस्य और थकान भी, विशेषकर जून और जुलाई के गर्म महीनों में, उत्पन्न करती है।

रोम में बहुसंख्यक सुन्दर फव्वारे हैं, जिन्हें बराबर जारी रखने के लिए पर्वत का पानी आता रहता है। ये सब संगमरमर के बने हैं, परन्तु उनमें से कुछ एक हजार वर्ष से भी अधिक

पुराने हैं। बीच-बीच में सड़क के मोड़ों पर हमें सुन्दर फव्वारे दिखाई पड़े, जिनसे हमें श्रेष्ठ रोमन शिल्प-कला का परिचय मिला। फव्वारों के चतुर्दिक् मूर्त्तियों का सौन्दर्य देखते ही बनता है। ट्रिनी का फव्वारा इटालियन कला का अद्‌भुत नमूना है।

सेंटपीटर्स और कोलिसियम देखने के बाद हम रोम की मुख्य सड़कों से होते हुए अपने होटल को लौट आये। मार्ग में हमें 'पेंथियन' मिला। यह एक अत्यन्त उल्लेखनीय ऐतिहासिक इमारत है। पेंथियन का अर्थ है नीरो के समय से लेकर अब तक के रोमन देवताओं की पूजा का स्थान। द्वार-प्रकोष्ठ के दोनों बड़े प्रतिमा-स्थानों में अगस्टस और अग्रिप्पापा की मूर्तियाँ थीं।

इसके पश्चात् हम वेस्टा नामक एक छोटे और गोल मन्दिर के पास से गुजरे। यह मन्दिर सम्भवतः सूर्य को समर्पित किया गया था। कदाचित् यह हरकुलीज का मन्दिर रहा हो। इसके चारों ओर एक अत्यन्त सुन्दर प्रकोष्ठ है, जिसमें कोरिन्थियन ढंग के १९ स्तम्भ हैं।

अब हम लोग सर्वथा थक गए थे और गाइड से पुरानी यादगारों की दुःखान्त कथाएँ सुनते-सुनते हमारा मन उदास हो गया था, इसलिए हमने सन्ध्या समय छः बजे तक पूर्ण विश्राम किया। बाद को हमारे गाइड ने होटल के पास ही एक विस्तृत वाटिका में खुली हवा में नाटक देखने का आग्रह किया। यद्यपि हमारी समझ में एक शब्द भी नहीं आया, तथापि हमने इसका अत्यधिक आनन्द लिया। इटालियन गीत बहुत मधुर होते हैं और हमने उन्हें बहुत पसन्द किया। पर उनके कुछ मजाक हमें मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुए। बाग में खूब तेज रोशनी हो रही थी और ५०० से ऊपर सुसज्जित स्त्री-पुरुष पेड़ों के नीचे हलका भोजन करते हुए संगीत का आनन्द ले रहे थे।

दूसरे दिन हम प्राचीन रोमन फोरम देखने गये। इसकी खुदाई बहुत कुछ गत शताब्दी में हुई है। रोमन राजाओं के अतीत गौरव का यह आश्चर्यजनक स्मारक है। इस फोरम में रोमन इतिहास में वर्णित बहुत-से ऐतिहासिक ध्वंसावशेष हैं। व्योस-पासियन का मन्दिर और सैटर्न के मन्दिर के प्रकोष्ठ के स्तम्भ अत्यन्त उल्लेखनीय हैं। शिल्प-कला का यहाँ पूर्ण प्रदर्शन हुआ है। यहाँ जिन देवताओं की मूर्त्तियाँ थीं, वे अब रोम के बहुत-से संग्रहालयों में हैं। अपोलो का मंदिर बहुत ध्यान देने योग्य है। इन ध्वंसावशेषों के देखने में हमें पूरा एक दिन लग गया और उनकी संख्या इतनी अधिक है कि सबका वर्णन नहीं किया जा सकता।

दूसरे दिन हम वेटिकन संग्रहालय देखने गये। इसमें शताब्दियों से जमा की गई दुर्लभ वस्तुएँ एकत्र हैं। यह संसार के अति सम्पन्न संग्रहालयों में से एक है और इसमें हजारों ऐसी प्रदर्शन की वस्तुएँ हैं, जिनके जोड़ की वस्तुएँ संसार में कहीं भी प्राप्त नहीं हैं। इसमें कला-विदों के बहुत-से दुर्लभ चित्र और अगणित ऐसे रत्नजटित आभूषण हैं, जिनमें बहुत-से गत शताब्दियों के पोपों के शरीर की शोभा बढ़ा रहे थे।

रोमन तहखाने विख्यात हैं। इन्हें भी हमने देखा। ये पृथ्वी के नीचे कमरों और मार्गों के रूप में बने हैं। रोमन इतिहास के आरम्भ-काल में गैर-ईसाइयों से सताए जाने पर इनमें छिपकर ईसाई लोग अपनी जान बचाते थे। वे गुफाएँ भी हैं, जिनमें शुरू के ईसाई पत्थर के काफिनों में अपने मृतकों को गाड़ते थे। ये पृथ्वी के अन्दर के मार्ग और कमरे कई वर्गमील में हैं।

आरंभिक शताब्दियों में ईसा के अनुयायियों पर किस सीमा तक अत्याचार होता था, इसका स्मरण करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

रोम में हम चार दिन रहे और इस समय में वहाँ हमारा खूब मन लगा। प्रत्येक घंटा हमने स्मरणीय इमारतों, प्रसिद्ध संग्रहालयों और योरप के सर्व प्राचीन ध्वंसावशेषों के देखने में, जो हमें ईसा के पूर्व की कितनी ही शताब्दियों की याँद दिलाते हैं, मन बहलाया। जिस समय हम रोम में थे, नगर में रौनक थी। फैसिस्ट शासन से वह नए सिरे से समृद्धिशाली हो रहा था और चारों ओर महान् सैनिक प्रदर्शन हो रहे थे, यद्यपि युद्ध की कोई चर्चा नहीं थी। मुसोलिनी की शक्ति सर्वत्र व्याप्त हो रही है। इसमें सन्देह नहीं कि फैसिज्म ने करिश्मे दिखलाए हैं, पर इसका स्थायित्व संदिग्ध है।

५—फ़्लोरेंस, वेनिस, वायना और बुडापेस्ट से होकर

रोम के बाद हम फ्लोरेंस के लिए रवाना हुए। यह शहर अपनी चित्रशालाओं के लिए प्रसिद्ध है। हम उत्तर की ओर जा रहे थे और प्राकृतिक दृश्य का परिवर्तन हमें स्पष्ट प्रतीत हो रहा था। दक्षिणी इटली में धूप तेज होती है और खेती भी अधिक होती है। वर्ष के इस भाग में वहाँ उष्णता-प्रधान देशों में पाई जानेवाली अनेक धान्यों की खेती होती है। परन्तु यहाँ हरियाली कम दिखाई पड़ती है।

फ्लोरेंस हम उपयुक्त समय पर दिन में पहुँचे। रोम में हमारे गाइड ने फ्लोरेंस की एक यात्री-संस्था को तार दे दिया था। हमारे पहुँचते ही उसने शीघ्र ही हमारे ठहरने की व्यवस्था करनी आरम्भ कर दी। नगर के केन्द्र में हम एक अच्छे होटल में आराम के साथ ठहराए गए। तीसरे पहर के चाय-पानी के पश्चात् हम गाइड के साथ शहर घूमने निकले। मार्ग में हमें इटली के अमर कवि दान्ते का घर मिला। हमें वह विशेष स्थान दिखाया गया, जहाँ दान्ते बिआट्रिस पर प्रेम-मुग्ध हुआ था। ये दोनों स्थान संरक्षित हैं। फ्लोरेंस का गिरजा इटालियन शिल्प-कला का एक अच्छा नमूना है। इसका निर्माण गाथिक शैली पर हुआ है और प्रवेश-द्वार पर खूब बारीक कारीगरी है। ऐसी कारीगरी कोलेन (जर्मनी) के गिरजा के सिवा और कदाचित् ही कहीं देखने को मिली। फ्लोरेंस में उसके गर्व करने योग्य वैसी विशाल इमारतें नहीं हैं।

रात में खूब आराम करने के बाद सबेरे हम यहाँ की प्रसिद्ध चित्रशालाएँ देखने को निकले। वहाँ दो चित्रशालाएँ हैं और उनको अच्छी तरह से देखने के लिए साधारण तौर पर दो दिन लगते हैं। इन दोनों चित्रशालाओं ने शताब्दियों से योरप और अमरीका के हजारों चित्रकारों को आकृष्ट कर रक्खा है। हमने वहाँ कई विद्यार्थियों को, जिनमें पुरुष और स्त्री दोनों थे, प्रसिद्ध कलाविदों के चित्रों की प्रतिलिपि तैयार करने में व्यस्त देखा। उनमें बहुत-से अपनी इन प्रतिलिपियों को दर्शकों के हाथ बेचते हैं और इस प्रकार जीविकोपार्जन करते हैं। एक वयस्क महिला द्वारा अंकित 'टिटियन' की एक प्रतिलिपि ने हमें

विशेष रूप से आकर्षित किया। मूल और प्रतिलिपि में वास्तविक अन्तर क्या है, यह जानना कठिन था। चटर्जी साहब तो उससे इतने प्रभावित और मुग्ध हुए कि उन्होंने उस महिला को दो पौंड उपहार-स्वरूप दिये।

उन चित्रशालाओं में बहुत-से धुरन्धर चित्रकारों की कृतियाँ हैं। उन सबका विस्तृत वर्णन हम यहाँ नहीं करेंगे, क्योंकि उससे पाठक ऊब जायँगे। अमर चित्रकार रैफेल के तीन प्रसिद्ध चित्र यहाँ रक्खे गए हैं। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं बताऊँ कि वे कितने अद्भुत हैं। मडोना और शिशु नामक प्रसिद्ध चित्र को, जो प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक रूप में अंकित किया गया है, हम देखते ही दंग रह गए। वह इतना सजीव, इतना सुन्दर और इतना नवीन प्रतीत हुआ कि हमारे मानस-पट पर सदा के लिए अंकित हो गया और उसे अपने जीवन में हम कभी नहीं भुला सकेंगे। अल्पायु में ही स्वर्गवासी हो जानेवाले महान् रैफेल के लिए इस महान् स्थान में एक विशेष स्थान अलग कर दिया गया है। यहाँ की अन्य कृतियाँ भी, जो यद्यपि इतनी प्रसिद्ध नहीं हैं, ध्यान देने योग्य हैं। यह संग्रह इटालियन चित्रकारों तक ही परिमित नहीं है, बहुत-से डच, जर्मन, फ्रेंच और इंग्लिश चित्र भी इसमें रक्खे गए हैं। उस समय कुछ चित्र एक विशेष प्रदर्शन के लिए पेरिस भेज दिए गए थे, अतएव उन्हें हम नहीं देख सके।

इस चित्रशाला में इटालियन तक्षण-कला का एक खास विभाग है। महान् मूर्त्तिकार माइकल एंजिलो और ल्योनार्डो की सांस्कृतिक कला के बहुत ही सुन्दर नमूने यहाँ मौजूद हैं। यह संग्रहालय इतना बड़ा है कि इसमें प्रत्येक काल और प्रत्येक शैली के उन कलाविदों की कृतियों के यथेष्ट नमूने भरे पड़े हैं, जिनका नाम इटली में ही नहीं, तमाम योरप में घर-घर लिया जाता है।

दूसरे दिन हम मोटर-कोच से पिसा का झुका हुआ मीनार देखने गये। हमारी पार्टी में दस व्यक्ति थे और हममें से कोई भी उस आश्चर्यजनक और रहस्यपूर्ण मीनार को देखने से वंचित नहीं रहना चाहता था, क्योंकि वह संसार के सात आश्चर्यों में से एक है। निस्सन्देह यह एक महत्त्वपूर्ण इमारत है और गणित के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन की एक मनोरंजक वस्तु है। इटली के गाँवों से होकर जाने से हमारी यह यात्रा बड़ी मनोरम रही। सामने कर्रारा पहाड़ी की चोटी दिखाई पड़ रही थी, जहाँ से कर्रारा का संगमरमर समस्त संसार में भेजा जाता है।

दूसरे दिन हमने फ्लोरेंस छोड़ दिया। हमारा लक्ष्य मिलन से होकर वेनिस जाना था। मिस्टर अब्दुल्ला हमारे साथ नहीं जा सके। वे हमें वहीं छोड़कर लन्दन के लिए रवाना हो गये। मिलन में हम एक दिन रहे और बहुत देख नहीं सके, क्योंकि यह व्यापारिक नगर है और गिरजाघर के सिवा यात्रियों के दिलचस्पी की कोई वस्तु यहाँ नहीं है। मिलन का गिरजाघर अपनी आंतरिक सजावट और मोसाइक चित्रकारी के लिए संसार भर में प्रसिद्ध है। मिलन का स्टेशन कदाचित् योरप में सबसे अच्छा है। सम्पूर्ण गिरजाघर कर्रारा के संगमरमर का बना है और इसमें कारिन्थियन बनावट के ऊँचे-ऊँचे स्तम्भ लगे हुए हैं। इसे बने अभी कुछ ही वर्ष हुए हैं।

मिलन इटली का व्यापारिक नगर है और इटली की बहुत-सी मुख्य-मुख्य व्यावसायिक संस्थाएँ इस नगर के बाह्य भाग में स्थित हैं।

मुख्य बाजार बहुत सुन्दर है और कलापूर्ण ढंग से बसाया गया है।

इसके बाद हमने वेनिस की यात्रा की। मार्ग लम्बा और थकानेवाला था। मार्ग में हमें बहुत-सी झीलें मिलीं, जिनके किनारे पर सुन्दर बँगले बने हुए हैं। स्वास्थ्य-लाभ की दृष्टि से यह स्थान बहुत प्रसिद्ध है। शनिवार का दिन था, इसलिए बहुत-से लोग अपने सप्ताहान्त की छुट्टी मनाने निकल पड़े थे। गाड़ी भरी थी और हर स्टेशन पर और भी भरती जा रही थी। इस छुट्टी का योरोपियों के जीवन में एक विशेष स्थान है। चाहे कारखाने हों, चाहे स्कूल या दफ्तर, दोनों सरकारी और व्यावसायिक, सब शनिवार को एक बजे बन्द हो जाते हैं। तब शहरों के रहनेवाले लगभग ८० प्रतिशत लोग, यदि वे बीमार या दो वर्ष से कम आयु के बच्चे नहीं हैं, बागों में या स्नान की जगहों में ग्रीष्म-काल की चमकीली धूप का आनन्द लेने को झुंड के झुंड निकल जाते हैं। स्थल की ओर से जाने में वेनिस का बाह्य भाग जरा मनहूस-सा दिखाई पड़ता है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि एड्रियाटिक सागर में यह मुख्य बन्दरों में से एक है। वेनिस हम लगभग तीन बजे दिन को पहुँचे और पहुँचते ही हमारे सामने होटल के एजेंटों का एक झुंड आया। परन्तु कोई गड़बड़ नहीं हुआ। वे दो कतारों में खड़े हो गए थे और उस अवस्था में आप अपने मन का होटल बखूबी पसन्द कर सकते हैं। हम स्टेशन के करीब ही एक होटल में ठहराए गए, और यात्रियों के लिए यही सुविधाजनक भी होता है। इससे टैक्सी और कुलियों के भारी खर्च में किफायत भी होती है। होटल बहुत अच्छा नहीं था, परन्तु कम हवादार कमरे के कारण जो असुविधाएँ हुई थीं, उनकी बहुत कुछ पूर्ति यहाँ अच्छे भोजन से हो गई। हमें यहाँ थोड़े ही समय तक ठहरना था, इसलिए हमने स्थान बदलने की बहुत परवा न की। यहाँ का व्यय भोजन के सहित लगभग आठ रुपया प्रतिदिन था। यह व्यय औसत दर्जे का समझा जाता है।

लायड ट्रिस्टिनो लाइन, जिसके जहाज वेनिस से बम्बई तक आते-जाते हैं, यहाँ बहुत लोकप्रिय है, क्योंकि हमारे बहुत-से भारतीय यात्री सीधे यहाँ उतरते हैं। लंदन को रवाना होने से पूर्व वे प्रायः यहाँ एक रात व्यतीत करते हैं। इस तरह वेनिस में आपको वर्ष में किसी भी समय अपने देशवासियों के दर्शन हो सकते हैं। हमें बहुत से मित्रों से मिलने का यहाँ अवसर प्राप्त हुआ, जो वायना को विशेष चिकित्सा के लिए जा रहे थे।

वेनिस कच्छ-प्रदेश में स्थित है, इसलिए सारा शहर नहरों से घिरा हुआ है। किसी भी इमारत में जाइए, आपको नहरों से होकर ही जाना होगा। हमारा होटल 'ग्रेंड कैनल' के किनारे पर था। यह शहर की मुख्य नहर है। नहरों के बीच में द्वीप की भाँति खड़ी इमारतों को देखना हमारे लिए एक अभूतपूर्व दृश्य था। यह दृश्य बहुत ही सुहावना मालूम पड़ता है।

तीसरे पहर हमने एक 'गोंडोल्ला' किराए पर लिया और नहर में लगभग ११ मील के भ्रमण का अत्यन्त आनन्द उठाया। निशा का दृश्य वास्तव में विराट् था। दोनों किनारों पर बिजली की हजारों बत्तियाँ जगमगा रही थीं और रात को दिन बना रही थीं। नवयुवक प्रेमी, खिलाड़ी, सुन्दरी युवतियाँ सब सैर करने को निकले थे। सुरीली आवाज में गाती हुई सुन्दर स्त्रियों और अच्छी पोशाक पहने हुए

हंबर्ग
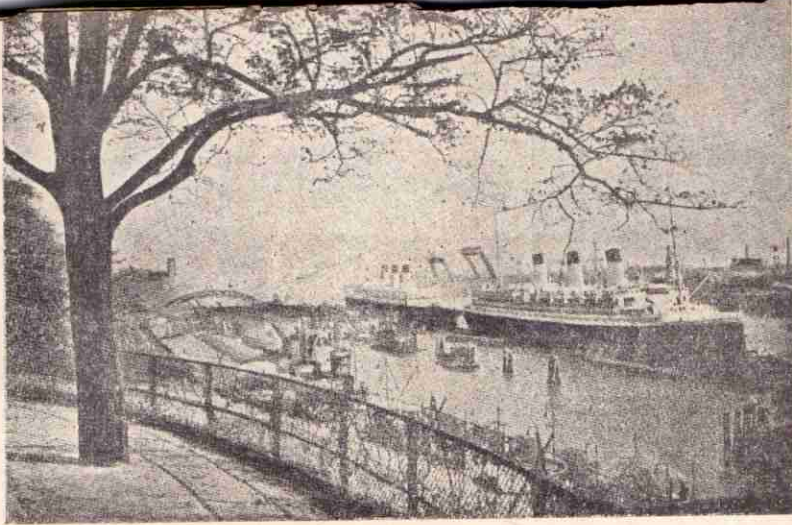
ऊपर : हंबर्ग बन्दर का एक दृश्य

सामने : एल्ब नदी में स्टीमरों का आना-जाना

पार्श्व में : स्टेशन पर छुट्टी मनाने के लिए निकलनेवालों की भीड़

हंबर्ग
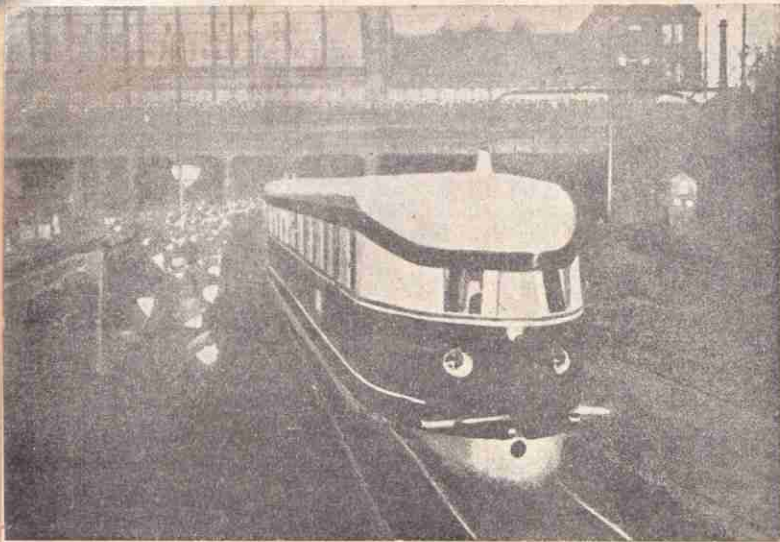
बाईं ओर : 'फ्लाइंग हंबर्गर' जो ७८ मील प्रति-घंटे की गति से चलता है।
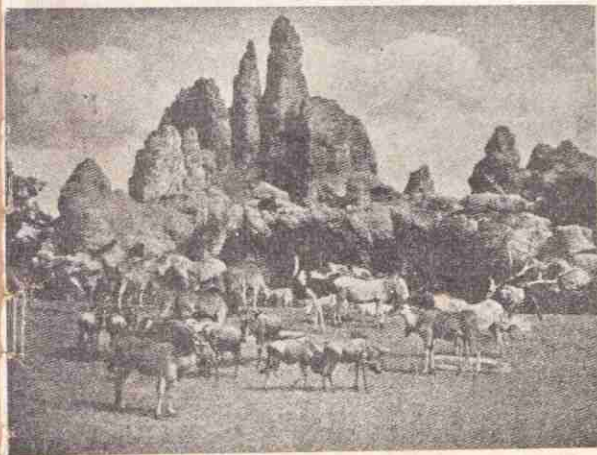
एक से वातावरण में रहनेवाले अफ्रीका के वनपशु (टीयर पार्क जू)

बंदरों की क्रीड़ास्थली (टीयर पार्क जू)

नीचे : जिराफ (टीयर पार्क जू)
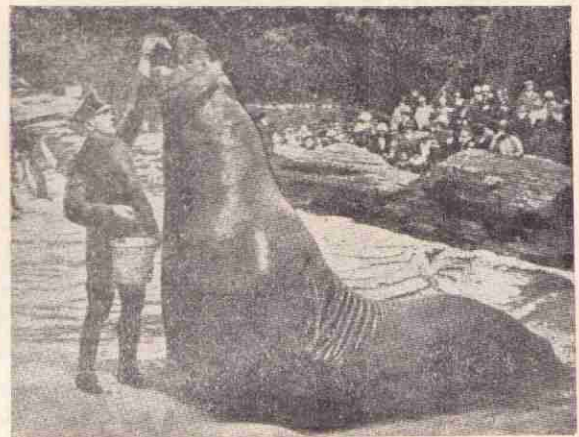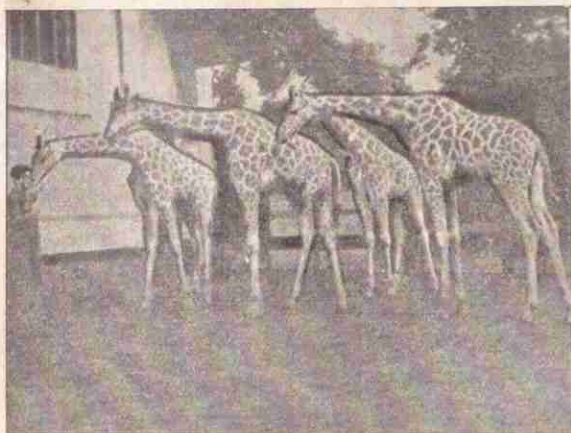
नीचे : समुद्री हाथी (टीयर पार्क जू)
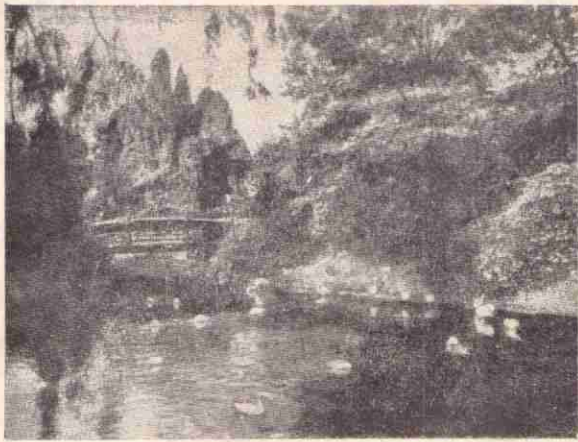
जल-पक्षियों का एक सुख-निवास (टीयर पार्क ज़ू)

अपने बच्चे के साथ बाघ (टीयर पार्क ज़ू)
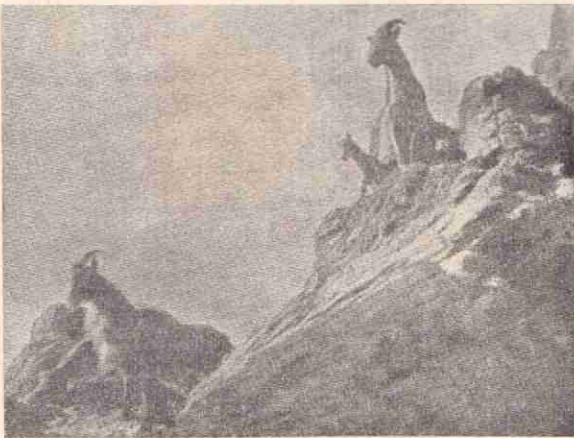
पहाड़ी बकरियाँ (टीयर पार्क ज़ू)
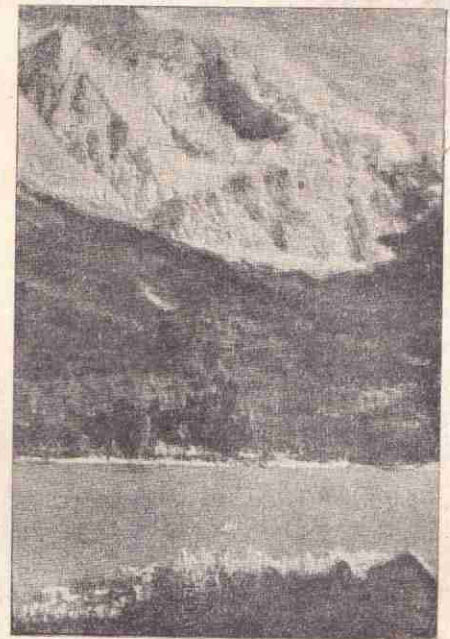
दाईं ओर : बैवेरियन अल्प्स का एक मनोरम दृश्य
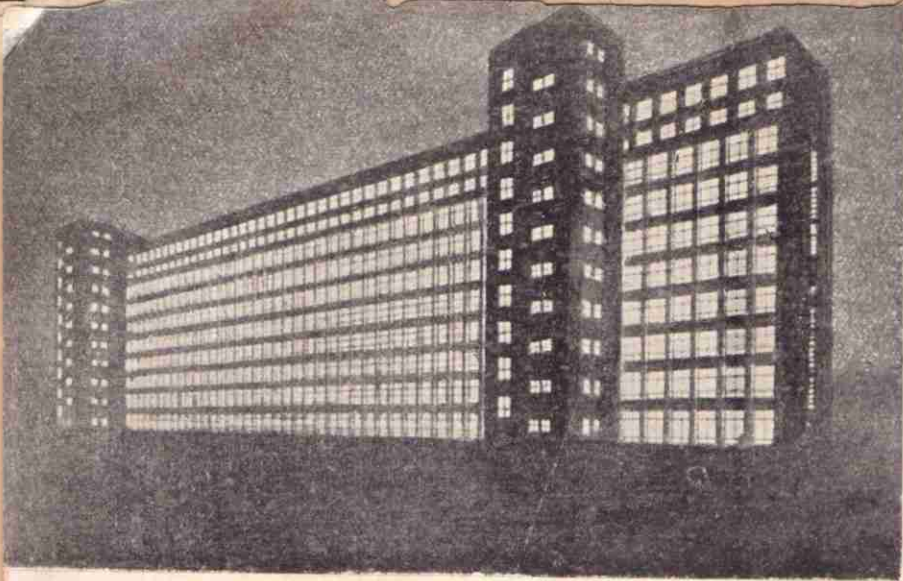
जर्मनी

बाईं ओर : विद्युत्-प्रकाश से युक्त सीमेन की इमारतों में से एक का रात्रिकालीन दृश्य

दाईं ओर : नगरनिवासियों के विहार के लिए बर्लिन का एक कृत्रिम वन
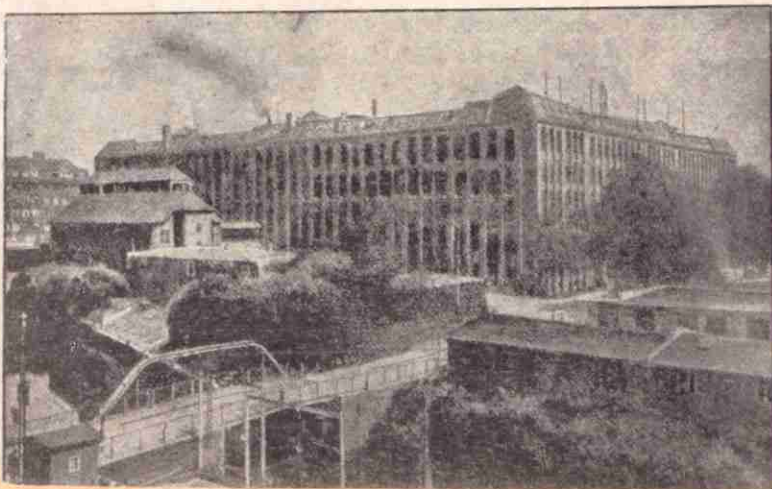
बाईं ओर : सीमेन के कारखाने का एक दृश्य

दर्शनीय पुरुषों से वह स्थान अत्यन्त रमणीक हो उठा था।

इसी समय हमारी नौका एक तंग नहर से गुजरी। यह ग्रैंड कैनाल की एक शाखा थी। यहाँ पानी से दुर्गन्ध आ रही थी, और यह हमें बहुत असुखकर प्रतीत हुआ। इस नहर के मार्ग से हम 'आह के पुल' के पास पहुँचे, जिसके पार से उत्पीड़न के दिनों में अभागे कैदी न्यायालय से कत्लगाह को ले जाए जाते थे। लार्ड बायरन ने अपनी एक अमर रचना के लिए यहाँ एक रात व्यतीत करके अनुप्राणिता प्राप्त की थी। सबेरे हम इस स्थान पर पहुँचे और उन गुफाओं को देखा, जिनमें बीते युग में दण्डित मनुष्य रक्खे जाते थे। नदी में एक घंटा भ्रमण करने के बाद हम अपने होटल को लौट आये और खाना खाया। भोजन बढ़िया था और हमें बहुत-सी अच्छी निरामिष वस्तुएँ खाने को मिलीं। वेनिस के ये होटल भारतीय यात्रियों का सत्कार करना जानते हैं, क्योंकि ये हमारी रुचि से बहुत अच्छी तरह परिचित हैं।

दूसरे दिन सबेरे जलपान के बाद हम १४वीं शताब्दी के एक भव्य महल में ले जाए गए। यह महल ग्रैंड कैनाल पर स्थित है और इसमें डोज लोग रहा करते थे। ये पहले वेनिस के शासक थे और अपने अपार धन और शौर्य के लिए सारे देश में विख्यात थे। यह लगभग २५० कमरों की एक विशाल इमारत है। इसमें इटली के बहुत-से प्रसिद्ध चित्र अंकित हैं और छत की मोसाइक शैली की कारीगरी प्रशंसनीय है।

सेंट मारकोंस का गिर्जा और 'बेल-टावर' वेनिस के एक फैशनेबिल मुहल्ले में स्थित हैं। नगर की बड़ी-बड़ी दूकानें भी यहीं हैं। हमने वेनिस की कौतूहलवर्धक वस्तुएँ खरीदीं और तब गिरजा देखने गये। यह गिरजा बहुत पुराना था, पर इसमें वह भव्य सजावट न थी, जो रोम के गिरजों में आमतौर पर देखने को मिलती है। किसी समय वेनिस तुर्कों के हाथ में था। कुछ प्राचीन तुर्की परिवार अब भी वहाँ रहते हैं।

वेनिस में कोई पुरातत्त्व-सम्बन्धी वस्तुएँ नहीं मिली हैं। यह नगर बहुत स्वच्छ भी नहीं है। इस शहर में नाविकों की भरमार रहती है, जो यहाँ प्रत्येक बार छुट्टी पाने पर दो-चार दिन ठहरते हैं। वेनिस का काँच का व्यवसाय बहुत विख्यात है। यहाँ की काँच की वस्तुओं की ११वीं शताब्दी से बड़ी माँग चली आ रही है और अब भी उम्दा कारीगरी की काँच की वस्तुओं के लिए यह नगर अपना निराला स्थान रखता है। नगर के प्रमुख काँच के व्यापारी से हम लोग मिले। उन्होंने हमें बड़े प्रेम से अपना कारखाना दिखलाया और काँच की बहुमूल्य वस्तुओं के निर्माण के विभिन्न प्रयोग बतलाए। चटर्जी साहब ने मेज की सजावट की काँच की चीजों के कुछ सेट माँगे। हमने 'आर्डर-बुक' भी देखा, जिसमें बहुत-से भारतीय नरेशों के बहुमूल्य मोसाइक और काँच की वस्तुओं के आर्डर दर्ज थे। प्रत्येक यात्री जो इस नगर में उतरता है, इस आश्चर्यजनक संस्था में ले जाया जाता है। यहाँ मोसाइक कारीगरी की वस्तुओं में नवयुतियाँ जिस चपल गति से पत्थर जड़ रही थीं, उसे देखकर हम दंग रह गए। यह कारीगरी वास्तव में बड़े ऊँचे दर्जे की है, पर साथ ही खर्चीली भी है। वेनिस में अपने ठहरने के दूसरे दिन संध्या को हम एक स्थानीय संगीत-भवन देखने गये। हम वहाँ एक घंटे से अधिक न ठहर सके; क्योंकि वहाँ जो नृत्य हो रहे थे, वे हमें पसन्द नहीं आए। इनमें कला के बजाय

कामुकता का ही अधिक प्रदर्शन था और दर्शक भी शिष्ट-वर्ग के नहीं थे।

पूर्णरूप से देखने से वेनिस हमें वैसा पसन्द नहीं आया, जैसा कि उसका वर्णन किया जाता है। हाँ, नहर का भ्रमण निःसन्देह बहुत आनन्द-प्रद है।

दूसरे दिन दो बजे हम आस्ट्रिया की राजधानी वायना के लिए गाड़ी पर सवार हुए। यह यात्रा जरा लम्बी थी और चूंकि हम कुछ अनुभव प्राप्त करना चाहते थे, इसलिए हम सब ने तीसरे दर्जे का टिकट खरीदा। केवल चटर्जी साहब हमारा साथ न दे सके, क्योंकि उनके पास इटालियन रेलवे का पास था। तीन विभिन्न स्थानों में हमें गाड़ी बदलनी पड़ी और इटली की सीमा पर चुंगीवालों ने बड़ी कड़ाई के साथ हमारे असबाब की जाँच की। उसके बाद हम वायना जानेवाली गाड़ी पर सवार हुए और आस्ट्रियन 'टिरोल' से होकर गुजरे। यह टिरोल यात्रियों के समक्ष एक भव्य दृश्य उपस्थित करता है। प्रत्येक वर्ष हजारों यात्री यहाँ छुट्टी बिताने आते हैं। यहाँ बहुत-सी स्वास्थ्यप्रद जगहें हैं, जहाँ लोग स्वास्थ्य-लाभ करने पहुँचते हैं। यहाँ बहुत-से प्राकृतिक सोते हैं, जो रोग-नाशक गुणों के लिए विख्यात हैं।

दूसरे दिन करीब दो बजे हम वायना पहुँचे और पूर्व व्यवस्था के अनुसार एक नवयुवक विद्यार्थी हमसे मिलने आया। श्री चटर्जी साहब का इस विद्यार्थी से परिचय था। नगर के मध्य में हम एक दूसरे दर्जे के होटल में ठहराए गए। चटर्जी साहब को वायना में एक महीना ठहरना था, इसलिए वे दूसरे दिन एक किराए के मकान में चले गये। अब मैं और मेरे मित्र श्रीयुत लाल अकेले रह गए। वायना में हम सात दिन ठहरे।

किसी समय वायना योरप में 'नगरों की रानी' कहलाता था और सभ्यता और ऐश्वर्य का केन्द्र था। इस समय इसकी जनसंख्या २० लाख है और इसमें बहुत-से सुन्दर बाग, संग्रहालय और महल हैं। इसका नकशा रोम से अधिक सुन्दर है। सड़कें अत्यन्त स्वच्छ और चौड़ी हैं। यहाँ की नाटकशालाएँ सारे योरप में विख्यात हैं। एक दिन हम नाटक देखने गये और यद्यपि हम भाषा नहीं समझ सके, तथापि यहाँ का कलापूर्ण नाट्य हमें पसन्द आया। रंगमंच अब सर्वथा आधुनिक रूप में है और विशाल यन्त्रों से युक्त है। नाटकशाला की इमारत का क्या कहना! इसके निर्माण में अपार धन लगा होगा। यह इतनी सुन्दर है, जितना महल। यह पत्थरों की बनी है और बहुत सुन्दर नक्काशी और मूर्त्तियों से सुशोभित है।

वायना चिकित्सा-पद्धति का एक प्रसिद्ध केन्द्र है। प्रतिवर्ष यहाँ सहस्रों विद्यार्थी आधुनिक शल्य-विद्या तथा अन्य चिकित्सा-प्रणालियों में योग्यता प्राप्त करने आते हैं। यद्यपि इसका राजकीय ठाट-बाट तो अब कुछ बाकी नहीं रहा, तथापि कला और शिक्षण के लिए इसका स्थान अब भी वैसा ही गौरवपूर्ण है।

आस्ट्रिया की आर्थिक स्थिति निश्चय ही बुरी है। आस्ट्रिया-हंगरी का व्यवसाय-प्रधान भाग अब जेकोस्लोवाकी के अन्तर्गत है और वर्तमान आस्ट्रिया केवल कृषि-प्रदेश ही रह गया है। इस राज्य की जनसंख्या ६० लाख से ऊपर है, जो सब जर्मन है। राजनैतिक कठिनाइयों के कारण यहाँ के जर्मन जर्मनी से नहीं मिल सकते। वायना का शाही महल अब एक संग्रहालय में परिणत है। हमारे गाइड ने, जो एक चतुर व्यक्ति था, हमें महल घुमाकर दिखाया

और विस्तार के साथ हमें प्रदर्शन के लिए रक्खी गई ऐतिहासिक वस्तुओं का महत्त्व बतलाया। इसी महल में समस्त शाही खजाना भी रक्खा है। महारानी मेरिया थेरेसा, जो किसी समय आधे योरप पर शासन करती थीं, यहीं रहती थीं। बड़ी-बड़ी गैलरियों में बहुत-से सुन्दर चित्र और शाही जिरहबख्तर रक्खे हैं।

भूतपूर्व बादशाह का ग्रीष्म-निवास, जो 'स्कोन-ब्रौन' के नाम से विख्यात है, एक अत्यन्त सुन्दर आरामगृह है। यह बाग योरप के श्रेष्ठ बागों में से एक है और अब भी राष्ट्र की ओर से इसकी व्यवस्था का समुचित प्रबन्ध है। महल के भीतरी भाग के भी संरक्षण का वैसा ही प्रबन्ध है। यात्रियों को यहाँ वह महान् ठाट-बाट देखने को मिलता है, जिसके बीच में यहाँ के प्राचीन सम्राट् रहा करते थे।

हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट वायना से बहुत दूर नहीं है, इसलिए हम वहाँ भी गये। हमारे मित्र श्रीयुत रामेश्वरदयाल वहीं ठहरे थे। हम वहाँ शाम को पहुँचे और स्टेशन के निकट एक होटल में ठहरे। मिस्टर दयाल ने अपना पता हमें दिया था, इसलिए हमने होटल के दरबान की सहायता से उन्हें खोज लिया।

बुडापेस्ट में हम जितने समय तक रहे, श्रीयुत दयालजी ने अपना सारा समय हमारे मनोरंजन में लगाया। यह शहर डैन्यूब नदी के तट पर है। नदी के दोनों किनारों पर बहुत-से विशाल होटल और बहुसंख्यक उपहार-गृह धूमधाम से चल रहे हैं। राजनैतिक दृष्टि से हंगरी बहुत निर्बल है और कुछ कृषि-सम्बन्धी यन्त्र बनानेवाली दूकानों के अतिरिक्त यहाँ कोई और व्यवसाय नहीं है। अब यह मुख्यतः कृषि-प्रधान देश है और गेहूँ, जौ और मक्का की पैदावार होती है। यह पैदावार अधिकांश में इटली को भेजी जाती है।

६—जर्मनी का प्रधान व्यापारिक नगर : हम्बर्ग

इस लेखमाला को आरम्भ करते समय मैं पाठकों को बता चुका हूँ कि मेरे योरप जाने का उद्देश्य दोहरा था। वायना का परिभ्रमण पूरा करने के बाद मैंने बहुत कुछ स्वास्थ्य-लाभ कर लिया था। अब मुझे सस्ते प्रकाशनों के लिए एक रोटरी मशीन खरीदने जर्मनी जाना था। मेरे मित्र श्रीयुत बी० एन० दास गुप्त भारतवर्ष में उसी फर्म के प्रतिनिधि हैं, जिसे मैंने एक खास तरह की रोटरी मशीन तैयार करने का आर्डर दिया था। उन्होंने मुझे अपने हम्बर्ग के कार्यालय द्वारा यह सूचना दिलवाई कि वे हम्बर्ग में मेरी प्रतीक्षा करेंगे। मुझे उनका पत्र वायना में मिला। मेरे मित्र श्रीयुत बनवारीलाल के सामने कोई विशेष कार्यक्रम न था, इसलिए वे मेरे साथ हम्बर्ग चलने के लिए राजी हो गए। इस निश्चय के अनुसार हम एक लम्बी यात्रावाली रेलगाड़ी पर सवार हुए, जो २४ घंटे की यात्रा के बाद हम्बर्ग पहुँचती थी। इस यात्रा में हम कुछ बड़ी सुन्दर जगहों से होकर गुजरे। बैवेरिया की आल्प्स-पर्वतमाला अपने उच्च शिखरों और उनके चरणों पर लोटी बहुत-सी झीलों के कारण बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ती है।

सौभाग्य से चुंगी के अधिकारी हमारे साथ बहुत ही मित्र भाव से पेश आए और हमें कोई कष्ट नहीं हुआ। श्रीयुत दास गुप्त से हमारी भेंट हो गई और वे हमें स्टेशन के करीब एक होटल में ले गये, जहाँ हम आराम के साथ ठहराए गए। हम्बर्ग में हमारा कार्यक्रम बहुत लम्बा रहा, पर मैंने वहाँ के जिन विभिन्न व्यावसायिक कारखानों को देखा, उनका विस्तृत वर्णन करके मैं पाठकों को थकाना नहीं चाहता। मैं केवल संक्षेप में वर्तमान व्यावसायिक उन्नति की मोटी-मोटी बातें ही बतलाऊँगा। हम्बर्ग के निर्यात व्यापार का ब्योरेवार अध्ययन करने से इसका भली भाँति परिचय मिल जाता है।

हम्बर्ग बहुत ही सुन्दर शहर है। इसमें बड़ी-बड़ी नहरें हैं। यह जर्मनी का वेनिस कहा जा सकता है। यह बहुत सघन बसा है। जन-संख्या लगभग २० लाख होगी। हम्बर्ग का इतिहास प्रबल सम्राट् चार्ल मेगन के समय से आरम्भ होता है। कहा जाता है कि उसी ने इस नगर की नींव डाली थी। पहले यह एक पृथक् राज्य की राजधानी था और सत्रहवीं शताब्दी में यह जर्मन साम्राज्य का स्वतन्त्र शाही नगर माना जाता था। १९वीं शताब्दी के अन्त में हम्बर्ग जर्मन-चुंगी-संघ के अन्तर्गत आ गया, इससे जर्मनी के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि करने में इस नगर को बहुत महत्त्व मिला। गत योरपीय महायुद्ध के आरम्भ होने के समय यह योरप का सबसे बड़ा बन्दरगाह था। लन्दन के बाद दूसरा नम्बर इसी का था। भूतपूर्व कैसर के शासन-काल में भी हम्बर्ग स्वतन्त्र नगर बना रहा। इसके अपने पृथक् कानून थे और इसका शासन म्युनिसिपैल्टी के हाथ में था। यह जर्मनी का अब भी सबसे बड़ा बन्दरगाह है। सच तो यह है कि जर्मनी का ८० प्रतिशत निर्यात व्यापार इसी शहर से होता है। यह एल्ब नदी पर स्थित है। यह नदी हमारी गंगा के समान चौड़ी तो नहीं है, पर बहुत तेज बहती है। जर्मनी में अगणित जलमार्ग हैं, जो एक नगर से दूसरे को जाते हैं और विभिन्न नदियों में मिले हैं। ये मार्ग हम्बर्ग में आकर एल्ब से मिल गए हैं। गत शताब्दी में इन बहु-संख्यक जलमार्गों से जर्मनी की औद्योगिक उन्नति में बहुत सहायता मिलती रही है। दूर के नगरों को व्यावसायिक रूप देना इन्हीं के द्वारा सम्भव हो सका।

मैं श्रीयुत दास गुप्त का कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे वर्तमान जर्मनी की औद्योगिक स्थिति बतलाने और हम्बर्ग के इस प्रकार की दिलचस्पी के विभिन्न स्थानों के दिखलाने का कृपापूर्वक कष्ट किया। इससे मुझे जर्मनी के वर्तमान निर्यात-व्यापार का एक व्यापक ज्ञान हो गया। यह व्यापार इधर जब मैं वहाँ था, बहुत गिरती हुई अवस्था में मुझे प्रतीत हुआ। हमारे पाठक यह भली भाँति जानते हैं कि युद्ध से पहले के दिनों में जर्मनी का मशीनों और वस्त्रों का व्यापार सबसे अधिक बढ़ा-चढ़ा था। वास्तव में उन्नति के उन गुजरे हुए दिनों में जर्मनी के चारों तरफ से सम्पत्ति आकर जमा हुई थी और उद्योग-प्रधान नगरों में हमें अब भी इसका परिचय मिलता है।

लगभग ३ बजे हम हम्बर्ग पहुँचे। स्नान के बाद श्रीयुत दास गुप्त हमें अपने कार्यालय में ले गए। उनका कार्यालय हम्बर्ग के कारबारी भाग में है। यहाँ बैठकर हमने एक कार्यक्रम निश्चित किया। यहाँ मैं उन सुविधाओं का उल्लेख कर देना चाहता हूँ, जो जर्मन-सरकार

यात्रियों को प्रदान करती है। आजकल जर्मनी की विनिमय की दर बहुत ऊँची है और जिन देशों ने स्वर्ण-माध्यम का परित्याग कर दिया है, उनकी करेन्सी के विरुद्ध पड़ती है। इसलिए जर्मन-सिक्का अर्थात् मार्क बहुत महँगा है। परन्तु यात्रियों के लिए जर्मन-सरकार ने एक विशेष व्यवस्था कर दी है, जिसके अनुसार यात्री मार्क उतनी ही सस्ती दर से प्राप्त कर सकते हैं, जितनी कि शिलिंग। वर्तमान विनिमय की दर के अनुसार यात्रियों को एक मार्क के लिए एक रुपया से अधिक देना पड़ता, परन्तु यात्री-मार्क उन्हें करीब-करीब एक शिलिंग में ही मिल जाता है, जो वर्तमान विनिमय की दर से ४० प्रतिशत कम पड़ता है। यात्रियों को जर्मनी का भ्रमण करने के लिए यह अच्छा प्रलोभन है। जर्मनी में प्रवेश करने से पूर्व वायना में मैंने कई सौ पौण्ड के यात्री-मार्क भुना लिए थे। हमारी जर्मनी की यात्रा में इससे बड़ी सहायता मिली। इस यात्री-मार्क की बदौलत यात्रियों को जर्मनी में आस्ट्रिया की अपेक्षा कम व्यय करना पड़ता है। इस सुविधा ने जर्मनी को एक ऐसा स्थान बना दिया है, जहाँ प्रतिवर्ष संसार के विभिन्न भागों से सहस्रों यात्री जाते हैं। हमारे पास सिक्के कम थे, इसलिए शाम को हम टामस कुक के कार्यालय में गये और हमने कुछ चेक तुड़ाए और व्यय के लिए जर्मन-मार्क प्राप्त किए। बाद को श्रीयुत दास गुप्त हमें एक निरामिष भोजनालय में ले गए, जहाँ हमें क्षुधा शान्त करने के लिए बहुत से स्वादिष्ट भोजन मिल सकते थे। हम बहुत थक गए थे, इसलिए वहाँ से अपने होटल को लौट आये और दूसरे दिन सबेरे ८ बजे तक पूर्ण रूप से विश्राम किया।

दूसरे दिन हमारा कार्यक्रम एक 'कोआपरेटिव इंडस्ट्री' देखना निश्चित हो चुका था। इसके लिए हम्बर्ग बहुत विख्यात है। इस कोआपरेटिव फैक्टरी के मैनेजर ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक हमारा स्वागत किया और हमें अच्छी तरह से सब स्थान घूम-घूमकर दिखाया। प्रायः सभी कार्यकर्त्ता अच्छी पोशाकों में थे और बिना किसी जल्दबाजी के शान्त भाव से अपना कार्य कर रहे थे। रासायनिक उन्नति और कार्य्यकर्त्ताओं की पूर्णता देखकर हम दंग रह गए। जर्मनी का यह कोआपरेटिव आन्दोलन विद्यार्थियों के गम्भीर अध्ययन के योग्य है। जर्मनी का यह आन्दोलन यहाँ तक सफल हुआ है कि इसके व्यवसाय की एक खास शाखा में विभिन्न स्थानों पर ५० हजार से अधिक लोग काम कर रहे हैं और सदस्यों को सस्ते उत्पादन की सुविधाएँ और एक अच्छा वार्षिक बोनस प्रदान कर रहे हैं। यदि मैं विस्तार के साथ इस विषय का यहाँ वर्णन करूँ, तो पाठकों का जी ऊब जायगा। उन्हें इतना ही जानना काफी होगा कि हमारे देश में कोआपरेटिव आन्दोलन की, जो अभी अपनी बाल्यावस्था में है, उन्नति करने की बड़ी सम्भावना है।

अभी तक इटली और आस्ट्रिया हंगरी की यात्रा में मुझे योरप की औद्योगिक उन्नति के अध्ययन करने का बहुत कम अवसर मिला था। सच तो यह है कि इटली औद्योगिक देश कहा ही नहीं जा सकता। यद्यपि वर्तमान फैसिस्ट शासन ने अपने कार्यक्रम में देश की औद्योगिक उन्नति भी रक्खी है, तथापि जन-संख्या का आधे से अधिक भाग अभी तक कृषि-कार्य में ही लगा हुआ है। कृषि से सम्बन्ध रखने-वाले कुछ कारखानों का उल्लेख किया जा

सकता है, जैसे डेरी या केनिंग फैक्टरियाँ। इटली में किसी कदर तम्बाकू की खेती होती है, परन्तु इसका व्यवसाय सर्वथा सरकार के अधिकार में है। इसलिए सिगरेट के कारखाने कम हैं और जनता को सिगरेट पीने का बहुत शौक भी नहीं है। बिजली की मशीनें बनाने में इटली शीघ्रता के साथ उन्नति कर रहा है और कुछ मोटरकार बनानेवाले कारखाने भी हैं। प्राचीन आस्ट्रो-हंगारियन साम्राज्य का औद्योगिक प्रदेश अब जेकोस्लावोकिया से सम्बद्ध है, इससे माल तैयार करनेवाले कारखानों से आस्ट्रिया का खंडित देश शून्य दिखाई पड़ता है।

लोक-व्यवसाय की दृष्टि से जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया और हंगरी से इतना भिन्न है कि यह अपने पड़ोस के देशों से सामाजिक, औद्योगिक और राजनैतिक सभी तरह से सर्वथा पृथक् देश प्रतीत होता है। जर्मनी के निवासियों का स्वभाव भी स्पष्ट रूप से भिन्न प्रतीत होता है। श्रमिक लोग प्रायः सरल, अपने कर्त्तव्यों से प्रायः परिचित और धुनी होते हैं और इटालियनों की भाँति वाचाल नहीं होते। मैंने बहुत-से धुरंधर व्यापारियों से भेंट की, उनकी सफलताओं के बारे में उनसे बातें कीं और औद्योगिक उन्नति के सम्बन्ध में उनका क्या दृष्टिकोण है, इसका अध्ययन किया। ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से उनकी सफलता का रहस्य मालूम हो जाता है। वहाँ श्रमिकों को कल्पनाक्षम, उत्साहपूर्ण और परिश्रमी होना सिखाया जाता है। कठोर विनियम और पूर्ण शिक्षण के द्वारा श्रमिकों के मस्तिष्क में क्रमशः अपने उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य को समझने और प्रत्येक ब्योरे को अच्छी तरह जानने का भाव जागृत हो जाता है। परिश्रमशील मनुष्यों के उत्पन्न होने में देश का जलवायु भी सहायक होता है। सादा रहन-सहन और पास-पड़ोस की स्वच्छता के कारण भी वहाँ योरप के दक्षिणी राज्यों की अपेक्षा अधिक अच्छे श्रमिक उत्पन्न होते हैं। परन्तु व्यापार के मामले में उन्हें इँगलैंड के सामने झुकना पड़ता है। वे अपनी वस्तुओं को विभिन्न बाजारों में पहुँचाने का कार्य उतने अच्छे वैज्ञानिक ढंग से नहीं कर सकते, जैसा कि अँगरेज लोग करते हैं। इँगलैंड का व्यापारिक संघ कहीं अधिक पूर्ण और प्रभावोत्पादक है। जर्मन लोग अपनी वस्तुओं का विज्ञापन करना नहीं जानते और उन्हें संसार के बाजारों की समस्याओं का वैसा पूर्ण ज्ञान भी नहीं है, जैसा कि अमरीकनों और अँगरेजों को है। उनकी उत्पादन शक्ति अद्भुत है, सोचने और आविष्कार करने की वे आश्चर्यजनक समता रखते हैं, परन्तु अपनी वस्तुओं के बेचने की समस्याओं को सुलझाने की क्षमता वे नहीं रखते। अपने व्यापारिक कार्यों पर नजर रखना और अपने ग्राहकों की माँगों पर तुरन्त और मुस्तैदी के साथ ध्यान देना अँगरेज लोग ही जानते हैं। परन्तु सफाई में उनका दर्जा ऊँचा है। उनके कारखाने अच्छे नकशे पर खड़े किए जाते हैं। वे अधिक हवादार होते हैं और उनमें सफाई की अधिक अच्छी व्यवस्था रहती है। दफ्तर भी अत्यन्त स्वच्छ होते हैं। कारखाने की छोटी-मोटी बात पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। उन्नति का क्रम जारी रखने के लिए प्रत्येक बड़े कारखाने में खोज और प्रयोग के लिए अलग विभाग रहता है और देश के आला दिमाग सदैव उनके सम्पर्क में रहते हैं। उद्योग और व्यवसाय की उन्नति में विज्ञान से भी पूरी-पूरी सहायता ली जाती है।

जर्मनी के माल की सबसे अधिक निकासी

हम्बर्ग से ही होती है, इसलिए मैंने वहाँ कुछ दिन ठहरकर लोगों की व्यावसायिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करना आवश्यक समझा। संसार के बड़े-बड़े आयात-निर्यात का व्यवसाय करनेवाले फर्मों के अतिरिक्त जर्मनी के भी प्रायः सभी बड़े फर्मों के प्रतिनिधि हम्बर्ग में रहते हैं। बहुत-सी अमरीकन और इँग्लिश एजेंसियाँ और निर्यात-फर्म यहीं हैं। भारतीय फर्मों में कदाचित् श्रीयुत गुप्त बहुत अच्छा कारबार कर रहे हैं। एक भारतीय ट्रेड कमिश्नर भी वहाँ रहता है, जो अनुमान किया जाता है कि भारत-सरकार को भारत के साथ जर्मनी के व्यापार के सम्बन्ध में सलाह देता है। परन्तु भारतीय फर्म इस प्रबन्ध से वास्तव में कोई लाभ उठाते हैं, यह सन्देह-जनक है।

एक दिन इन ट्रेड कमिश्नर श्रीयुत गुप्त से भारत से जर्मनी में जानेवाले माल के सम्बन्ध में मेरी संक्षेप में बातें हुईं और मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि जर्मन-सरकार ने भारत से माल मँगाना बहुत कम कर दिया है, यद्यपि भारतवर्ष अब भी जर्मनी से बहुत कुछ मशीनें खरीदता है। उनकी रिपोर्ट भारतीय पत्रों में प्रकाशित हो चुकी है और इस मामले में असेम्ब्ली में प्रश्न भी हुए हैं; परन्तु इसका कोई परिणाम नहीं निकला। अब समय आ गया है कि भारत-वर्ष जर्मनी से एक अलग व्यापारिक समझौते की माँग उपस्थित करे, नहीं तो व्यापार का पलड़ा प्रतिवर्ष भारतवर्ष के विरुद्ध होता जायगा। जर्मनी ने खाद्य अन्न और अन्य कच्चा माल भारत-वर्ष से मँगाना बहुत कुछ बंद कर दिया है। यह भारतीय हितों के लिए बहुत ही विघातक है।

यथेष्ट रूप से प्राचीन नगर होने पर भी हम्बर्ग अत्यन्त सुन्दर है। मुझे मालूम हुआ कि यह संसार के अत्यन्त सुन्दर बन्दरगाहों में से एक है। बड़े-बड़े व्यापारिक मुहल्लों में इसके कारबार की छाप स्पष्ट प्रतीत होती है। एल्ब नदी जहाँ शहर के बाहर निकलती है, वहाँ मछुओं का एक रमणीक टापू है। सप्ताहान्त की छुट्टियों में शहर के निवासी नदी और इस टापू पर आनन्द मनाते हैं। हम्बर्ग और अन्य मनोरम जगहों के बीच नदी के उतार और चढ़ाव दोनों ओर समय से स्टीमर आते-जाते रहते हैं।

हम्बर्ग के क्रय-विक्रय का केन्द्र जो नगर की मुख्य नहर पर है, सुसज्जित स्त्री-पुरुषों से सदैव सुन्दर बना रहता है। हम्बर्ग में कई विभागीय भाण्डार हैं और वे सब कलकत्ता के ह्वाइट वे के भाण्डार से बहुत बड़े होंगे।

जो लोग हम्बर्ग की यात्रा करते हैं, वे यहाँ का आश्चर्यजनक ज्यालोजिकल गार्डन देखे बिना नहीं रहते। यह गार्डन हेगेन बेक के परिवार के अधिकार में है और टीयर पार्क के नाम से विख्यात है। यह बाग बहुत ही भव्य ढंग से लगाया गया है और इसमें संसार के बहुत-से भागों के पेड़-पौधे मिलते हैं। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें पशु-पक्षियों को करीब-करीब वही स्वाधीनता दी जाती है, जो उन्हें उनकी प्राकृतिक अवस्था में प्राप्त रहती है। वे पिंजड़ों में यहाँ बन्दी नहीं रक्खे जाते और जहाँ तक सम्भव होता है, वे अपने स्वभाव के अनुकूल वातावरण में ही रक्खे जाते हैं। उनकी गिरोहबन्दी उसी तरह की जाती है, जिस तरह अपनी जन्मभूमि में वे स्वयं करते हैं। इस बाग को घूमने में हमें पूरा दिन लग गया, परन्तु हमें आनन्द भी बहुत प्राप्त हुआ।

एक दिन हम एक खास तरह के बोट में नदी के उतार की ओर 'ब्लैंकिनीज' के नाम से

विख्यात एक आश्चर्यजनक स्थान देखने गये। यहाँ से सम्पूर्ण नदी का दृश्य बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ता है। नदी हम्बर्ग से मीलों चौड़ी होती हुई समुद्र की ओर बहती है। पूरा फासला ३२ मील से कुछ ऊपर होगा। एक पहाड़ी की चोटी से जो लगभग एक हजार फुट ऊँची होगी, एल्ब का यह दृश्य देखते ही बनता है। हरे पेड़ों की छाया के नीचे भीनी महक से युक्त गुलाब के बगीचों में हमें विश्रान्ति का इतना अधिक अनुभव हुआ कि मेरे मित्र श्रीयुत लाल एक झपकी लेने से बाज न रह सके।

जिसने किसी दिन सन्ध्या को सेण्टपाली, जहाँ जहाजी लोग आमोद-प्रमोद के लिए जाते हैं, न देखी, उसने मानो यहाँ आकर कुछ नहीं देखा। यद्यपि यह सच है कि सुरुचि का यहाँ बहुत कम ध्यान रक्खा जाता है, तथापि ध्यान-पूर्वक निरीक्षण करनेवाले को सेंटपाली जैसे स्थान बहुत कम मिलेंगे। सब तरह के विचित्र नमूने यहाँ मिलते हैं, वायुमण्डल में विचित्र सुगन्ध व्याप्त रहती है और तेज रोशनी आँखों को चकाचौंध कर देती है। केफों में अलकाजार बहुत बदनाम है, जहाँ रात-रात भर नाच-गान और आमोद-प्रमोद होता रहता है। यहाँ के रात्रिजीवन की हमने एक झलक देखी और १२ बजे से पहले ही शीघ्रतापूर्वक उस स्थान से हट आये। यहाँ हमारी एक पंजाबी नाविक से भेंट हुई। ये महाशय हम्बर्ग में १५ वर्ष से अधिक समय से रह रहे हैं। उन्होंने हमें भोजन के लिए निमंत्रित किया, परन्तु हमने बहाना कर दिया और बड़ी कठिनाई से उनसे पिंड छुड़ाया। वे नाविकों के लिए एक दूकान खोले हुए हैं और हमें उनकी दशा अच्छी प्रतीत हुई।

हम्बर्ग में हवाई जहाजों का एक भारी अड्डा है और कदाचित् यह जर्मनी के सर्वोत्तम अड्डों में से एक है। स्वयं हवाई स्टेशन एक आश्चर्य की वस्तु है और भविष्य की उपयोगिता को खयाल में रखकर यह निर्मित हुआ है। इसकी सजावट खर्चीली और स्थिति विचित्र है। मैं और श्रीयुत गुप्त एक दिन हवाई जहाज से उड़े और हम्बर्ग की ऊपर से सैर की।

कोई आधुनिक जर्मन-स्कूल देखने की मेरी बड़ी इच्छा थी। श्रीयुत दास गुप्त ने मेरे लिए इसका प्रबन्ध कर दिया। स्कूल शहर के एक अत्यन्त स्वच्छ भाग में स्थित था। प्रधान अध्यापिका ने नियमपूर्वक हमारा स्वागत किया और हमें स्कूल में घुमाया। स्कूल में ४ से १० वर्ष तक के विद्यार्थी थे और उनकी संख्या लगभग २०० थी। उनकी पोशाकें बहुत साफ-सुथरी थीं। आरम्भिक विज्ञान और भूगोल की कक्षाओं में हम शीघ्र ही ले जाए गए। इन कक्षाओं में जो अपरेटस, माडल और बहुत-से दूसरे यन्त्र थे, उन्हें देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। हमारे पूछने पर कि आरम्भिक पाठ-शालाओं में कितने अपरेटसों की आवश्यकता पड़ती है, अध्यापक ने बतलाया कि इसके लिए ५०,००० मार्क से कम नहीं लगते। कमरे-कमरे से लेकर वह स्थान हमें भली भाँति दिखाया गया। लड़के बहुत तन्दुरुस्त थे और उन्हें प्रायः सभी विषयों में व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। प्रत्येक पाठ उनके लिए रोचक बनाया जाता है। घर पर करने के लिए उन्हें कोई काम नहीं दिया जाता। जो कुछ भी सीखते हैं, स्कूल में ही सीखते हैं। टिफिन के समय उन्हें मुफ्त में जलपान कराया जाता है, जिसमें पोषक अंश यथेष्ट रूप में विद्यमान रहता है। नेचर स्टडी के लिए स्कूल से सम्बद्ध बाग से बालकों की

रुचि और उनकी शिक्षा का पता चलता है। प्रत्येक लड़के को मुफ्त में पुस्तकें मिलती हैं और प्रारम्भिक अवस्था में उनके माता-पिता से कोई फीस नहीं ली जाती। जर्मनी में सर्वत्र अनिवार्य शिक्षा है।

हम्बर्ग में सात दिन रहने के बाद हम बर्लिन के लिए 'फ्लाइंग हम्बर्ग' से रवाना हुए। इसने हम्बर्ग और बर्लिन के बीच १७९ मील का फासला ७८ मील प्रतिघंटा के हिसाब से तय किया।

७—जर्मनी का नागरिक जीवन

बर्लिन योरपीय महाद्वीप में दूसरा सबसे बड़ा नगर है। इसका जलवायु बहुत ही अच्छा है। युद्ध के पूर्ववर्ती दिनों में जर्मन-संस्कृति का केन्द्र होने के कारण यह अपनी ओर यात्रियों के अपार जन-समूह को आकृष्ट किया करता था। युद्ध ने जर्मन देश को निर्धन बना दिया था, तथापि वह इस महान् नगर को इसकी शोभा और आनन्द से च्युत नहीं कर सका। इसकी अवस्था बहुत अच्छी है और यात्री का ध्यान, जो बात सबसे अधिक आकर्षित करती है, वह है सड़कों और रास्तों की हद दर्जे की स्वच्छता। कहीं भी किसी तरह का कूड़ा इकट्ठा नहीं होने पाता। यहाँ की जनता के रहन-सहन को उच्च कोटि का बनाए रखने में इस स्वास्थ्यकर और साफ-सुथरे नगर का बहुत बड़ा हाथ है। इसमें सन्देह नहीं कि आर्थिक दृष्टि से लोगों की हालत बहुत कुछ गिर गई है, तथापि उन्होंने अपनी यथा-सम्भव स्वच्छ रहने की आदत नहीं छोड़ी है। वे स्वच्छता के अपने आदर्श को जीवित बनाए हुए हैं। नगर के चारों ओर बहुत-से सुन्दर उपवन और कृत्रिम वन हैं, जहाँ प्रति सप्ताह नगर निवासी सप्ताह भर की थकावट के पश्चात् जाते हैं और जीवन का आनन्द लेते हैं। ये सुन्दर जगहें लोगों को नागरिक जीवन से कभी थकने नहीं देतीं। कदाचित् संसार में ऐसा कोई दूसरा नगर नहीं है, जो अपने निवासियों को 'वीक एण्ड' की यात्राओं में इससे अधिक सुख और विश्राम की जगहें प्रदान करता हो। आनन्दमयी कृत्रिम झीलें, जहाँ शनिवार और रविवार को हजारों लोग जमा होते हैं, उनकी चिन्ताएँ हर लेती हैं और उनमें स्वास्थ्यवर्द्धक तेजस्कर नवजीवन डालती हैं, जिससे वे आने-वाले सोमवार को फिर अपने कार्यों में आनन्द-पूर्वक संलग्न होने के योग्य हो जाते हैं।

अब इससे जरा हमारे नागरिक जीवन की तुलना कीजिए। यहाँ की गर्म और नम हवा लोगों को वर्ष-प्रतिवर्ष उनके कार्यों के अयोग्य बनाती जाती है। रविवार को हम कहाँ जायँ? जीवन की चिन्ताओं को कैसे भुलाएँ? वही मनहूस पास-पड़ोस, दृश्यों में कोई परिवर्तन नहीं, अपने बच्चों के साथ घनिष्ठता स्थापित करने का कोई अवसर नहीं। क्या अधिकतर इन्हीं सब बातों के कारण हमारा यौवन जिन उमंगों और इच्छाओं का स्वप्न देखता है, वे मिट नहीं जातीं? यह एक समस्या है, जिस पर हमारे नगर-पिताओं ने गम्भीरता-पूर्वक विचार नहीं किया और ये नगर-पिता वे म्युनिसिपल मेम्बर कहलाते हैं, जिन पर लाखों

नगर-निवासियों के स्वास्थ्य का उत्तरदायित्व है। पर यहाँ परवा कौन करता है?

अन्य स्थानों की अपेक्षा बर्लिन में मैं कम समय तक रहा। परन्तु मुझे बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों से मिलने का अवसर दिया गया था। इनमें सीमेन के बहुत बड़े बिजली के कारखाने और सबसे बड़े छापाखाने 'डल्स्टीन' के संचालक और बहुत से औद्योगिक नेता भी थे। सम्पूर्ण औद्योगिक जर्मनी में जापान की औद्योगिक उन्नति का बहुत प्रबल भय है। जर्मन लोग यह जानने में असमर्थ हैं कि जापान अपने उत्पादन की लागत कैसे घटा सकता है। उनके निर्ख-विज्ञान के कोई सिद्धान्त इस दिशा में काम नहीं करते। मैंने अपनी जापानी कमीज और रेशमी मोजे कुछ प्रमुख वस्त्र-व्यवसायियों को दिखलाए। जब उन्होंने उनकी परीक्षा की और मालूम किया कि मैंने उन्हें आठ आना गज और चार आना जोड़ा के हिसाब से खरीदा था, तब वे आश्चर्यचकित रह गए। सूती वस्तुओं का निर्यात बन्द कर दिया गया है। यह यहाँ साठ लाख मजदूरों को रोजी देता था। चेमनीज में वस्त्र के महान् कारखानों को देखना वास्तव में एक दुःखद दृश्य था। उनमें से कुछ जो प्रत्येक ३,००० व्यक्तियों को काम देते थे, अब सर्वथा बंद हो गए हैं। लाखों मार्क की मशीनें बेकार पड़ी हुई हैं।

सीमेन का बिजली का विशाल कारखाना देखकर कोई भी यात्री भली भाँति समझ सकता है कि यह प्रमुख व्यवसाय जर्मनी की समस्त सबसे बड़ी औद्योगिक संस्थाओं की चोटी पर कैसे पहुँच गया है। इसमें १,५०,००० से अधिक आदमी काम करते हैं। जमशेदपुर के ताता नगर की तरह इसका अपना निजी नगर है। परन्तु यह तातानगर से कहीं अधिक बड़ा और सुन्दर है। यहाँ सौ से अधिक बड़ी इमारतें हैं, जिनमें सब प्रकार की बिजली की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। इस कार्य की महत्ता का अनुमान इसी बात से किया जा सकता है कि इसमें प्रतिदिन लगभग ५० लाख रुपए की वस्तुएँ तैयार होती हैं।

काम करनेवालों को जो सुविधाएँ यहाँ दी जाती हैं, वे आश्चर्यजनक हैं। 'डायनिंग-हाल' जहाँ काम करनेवाले भोजन करते हैं, बड़ी सुन्दरता के साथ सजाए गए हैं और जहाँ भोजन पकता है, वे स्थान तो सफाई और शुद्धता के नमूने हैं। यहाँ के फ्री-क्लब, सिनेमाघर और व्यायाम-शालाएँ तथा बहुत-सी विश्रामप्रदायक ऐसी दर्शनीय बातें हैं, जो हमारे देश के पूंजीपतियों की आँखें खोलनेवाली हैं, क्योंकि यहाँ कुछ ऐसे व्यवसाय हैं, जिनसे वे अनुचित रूप से अत्यधिक लाभ उठाते हैं।

हमारा दल लगभग बीस भारतीयों का था और विभिन्न विभागों को जाकर देखने के लिए हमें बहुत अच्छे गाइड मिले थे। यदि कोई ध्यानपूर्वक प्रत्येक बात को देखना चाहे, तो कदाचित् उसे पूरा घूमने में तीन वर्ष लगेंगे। तीन विभागों का कई घंटे तक निरीक्षण करने के बाद हम सब थक गए। डाइरेक्टरों ने हम लोगों को जल-पान के लिए आमन्त्रित किया। इसमें फैक्टरी का प्रति आदमी कम से कम ५० रुपया व्यय हुआ होगा। इस अवसर पर उन्होंने एक संक्षिप्त भाषण भी किया, जिसमें बताया कि वान सीमेन ने एक मामूली दूकान से, जिसमें तीन आदमी काम करते थे, इतना बड़ा, नगर के बराबर कारखाना, जिसमें बहुत-सी शाखाएँ हैं और लगभग १½ लाख आदमी काम करते हैं, कैसे बनाया।

लंदन की भाँति बर्लिन में भी पृथ्वी के अन्दर रेलगाड़ियों के चलने की व्यवस्था है, पर उतनी विस्तृत और सुलभ नहीं है। नगर लगभग १५० वर्गमील में है। लंदन के विपरीत यहाँ व्यापारिक मुहल्ले एक ही स्थान पर नहीं हैं, किन्तु सम्पूर्ण नगर में बिखरे हुए हैं। श्रीयुत दास गुप्त ने हमारे ठहरने के लिए एक पेनसां* में व्यवस्था की थी। बिस्तर और जल-पान के लिए चार मार्क प्रतिदिन के हिसाब से देना तय हुआ। मकान-मालकिन आस्ट्रियल जर्मन महिला थीं। उनके एक लड़की थी, जो एक स्थानीय दूकान में टाइपिस्ट के रूप में काम करती थी। हमें बहुत से भारतीय विद्यार्थियों से मिलने का अवसर मिला, जो भारतीय विद्यार्थी-संघ के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए वहाँ जमा हुए थे। उनका यह अधिवेशन योरप-महाद्वीप के विभिन्न स्थानों में प्रतिवर्ष होता है। कुछ विद्यार्थियों से मेरा मनोरंजक वाद-विवाद हुआ। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे अपने अध्ययन के सिवा अन्य विषयों से बिलकुल दिलचस्पी नहीं रखते। मुझे विश्वास है कि प्रायः ८० प्रतिशत विद्यार्थी जो भारत वापस आने पर कुछ भी नहीं कर सकते, उस कार्य के योग्य नहीं होते, जिसके लिए वे योरप भेजे जाते हैं। उनमें निरीक्षण की बहुत कम शक्ति होती है और वे उन औद्योगिक और व्यावसायिक शिक्षा के भीतर काम करनेवाले सिद्धान्तों का अध्ययन न करके अपना बहुमूल्य समय नष्ट किया करते हैं। यह दुःख की बात है कि उनमें दृढ़ता, सम्पूर्णता, धैर्य्य और कल्पना का अभाव होता है। मैं नहीं समझता कि हमारे भारतीय विश्व-विद्यालय उनके मस्तिष्क और चरित्र का इस उद्देश्य से निर्माण करते हैं कि योरप में उन्हें जो शिक्षा मिले, उसे वे पूर्ण रूप से ग्रहण कर सकें। जो विद्यार्थी केवल शास्त्रीय प्रसिद्धि के लिए जाते हैं, उनके लिए यह बहुत ठीक हो सकता है। परन्तु व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशाली शिक्षा कम या अधिक मात्रा में निराशाजनक है। परीक्षाएँ वे पास कर लेते हैं और कदाचित् विशेषता के साथ, परन्तु व्यावसायिक शिक्षा का अभाव होने के कारण वे कोई कार्य्य कर सकने में समर्थ नहीं होते। यदि हम योरप से ठोस और तत्त्वपूर्ण सहायता प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें व्यावसायिक शिक्षा के लिए केवल ऐसे ही विद्यार्थी चुनकर भेजना चाहिए, जो व्यापार में अभिरुचि रखते हों और सांसारिक मामलों का भी व्यावहारिक ज्ञान रखते हों। कुछ विद्यार्थी तो इतने अनभिज्ञ थे कि वे यह भी नहीं बता सकते थे कि नगर का शासन कैसे होता है, उसमें कितने संग्रहालय हैं और विभिन्न कार्यों में लोग किस प्रकार लगे हुए हैं।

दो नवयुवक जर्मनों ने हमारे देश की शिक्षा के बारे में मुझसे बहुत कुछ पूछा। मुझे अपने यहाँ की पद्धति की वकालत करनी पड़ी, यद्यपि मैं जानता था कि हम कितने पिछड़े हुए हैं और अपने नवयुवकों को प्रभावपूर्ण शिक्षा देने में कितने असफल हुए हैं। जितने समय में कोई विद्यार्थी कालेज से निकलता है, उतने समय में वह अपना समस्त बल-विक्रम गँवा चुकता और उसके सामने कोई भविष्य नहीं होता वह नहीं जानता कि कौन-सी दिशा पकड़ने से वह भूखों मरने से बच जायगा। कभी-कभी वह ऐसी दिशा पकड़ता है, जो उसके आदर्शों से

*एक प्रकार का निजी गृह, जिसमें आगन्तुकों के ठहरने और भोजन की व्यवस्था रहती है।

बहुत दूर होती है। उसकी सोलह वर्ष की कुल शिक्षा व्यर्थ जाती है।

बर्लिन में सात दिन ठहरने के पश्चात् मैं एक व्यापारिक उद्देश्य से ब्रन्सविक गया। यह अति प्राचीन नगर है। प्राचीन काल की बहुत-सी महत्त्वपूर्ण यादगारें यहाँ मौजूद हैं। बारहवीं शताब्दी का रोमन-गाथिक गिरजा यहाँ सबसे पुरानी इमारत है। ब्रन्सविक का शेर, जिसका असली रूप इस समय अमरीका में है, इँगलैंड के बारहवीं शताब्दी के 'हेनरी दि लायन' के समय से विख्यात है। इसके बाद मैं लिपजिग गया, जहाँ मैं पन्द्रह दिन ठहरा। जर्मनी में छपाई के व्यवसाय का लिपजिग केन्द्र है। कई सौ बड़े-बड़े छापाखाने और छपाई की मशीनें बनानेवाले फर्म यहाँ हैं। बहुत से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त छापाखानों के आश्चर्यजनक संगठन को देखने में मैंने कई दिन बिताए। मुझे बताया गया कि युद्ध के पूर्ववर्त्ती दिनों में लिपजिग सम्पूर्ण योरप महाद्वीप में प्रतिदिन तीस ट्रेन विभिन्न प्रकार का छपा हुआ सामान भेजा करता था। लिपजिग 'फर' के व्यवसाय के लिए भी प्रसिद्ध है। यह व्यवसाय सर्वथा यहूदियों के हाथ में है। यद्यपि जर्मनी ने अपने बहुत-से नगरों को यहूदियों से मुक्त कर लिया है, तथापि लिपजिग से वह अभी बहुत-से यहूदियों को नहीं भगा सका, क्योंकि यहूदियों ने बहुत समय से इस व्यवसाय को सर्वथा अपने हाथ में ले रक्खा है। लिपजिग और हाले के पास कई बड़े-बड़े रासायनिक व्यवसाय भी हैं। जर्मन रासायनिक कारखानों की बड़ी मुस्तैदी से रक्षा की जाती है। उनमें किसी को प्रवेश की आज्ञा नहीं मिलती—विशेषकर उनमें जहाँ रंग और बहुत-सी गौण वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

पोट्सडैम जो भूतपूर्व कैसर का सरकारी निवास-स्थान था, अब एक संग्रहालय में बदल दिया गया है। हमने राजमहल के सुन्दर उद्यानों को देखा। ये अब भी अच्छी हालत में रक्खे जाते हैं। प्रतिवर्ष हजारों यात्री इस स्थान को देखने आते हैं, क्योंकि गत महायुद्ध के राजनैतिक भाग्यों पर यहीं वाद-विवाद हुए थे और यहीं वे निश्चित हुए थे। महान् फ्रेडरिक के प्राचीन महल के द्वार अब जनसाधारण के लिए खोल दिए गए हैं। हमने कुछ खास कमरों को देखा। सजावट का क्या कहना था और उसकी सुरक्षा भी खूब की गई थी। हमें जूतों को ढँकने के लिए मखमल के खास तरह के गिलाफ दिए गए थे ताकि जूतों के तल्लों से कमरों के फर्श की आश्चर्यजनक पालिश खुरच न जाय।

हिटलर और जर्मनी

लेखक : श्री हरिकेशव घोष

योरप की वर्तमान डावाँडोल राजनैतिक परिस्थिति में जर्मनी ने जो रुख प्रकट किया है, उससे सारा संसार एकाएक चौंक उठता है। 'रीशटाग' में हिटलर ने हाल में जो घोषणा की है और उसके साथ ही उसने सैन्य-वर्जित प्रदेश में जो सेना भेजी है, वह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि गत महायुद्ध में जर्मनी ने जो खोया है, उसमें से कुछ वापस लेने के लिए वह दृढ़प्रतिज्ञ है। हिटलर की शर्तें स्पष्ट और प्रयत्क्ष हैं और यह निश्चित है कि यदि योरप के राष्ट्र उसकी कुछ शर्तें स्वीकार न कर लेंगे, तो जर्मनी युद्ध का खतरा उठाने से नहीं हिचकेगा। योरप की बहुरंगी राजनीति की जटिलता इधर इतनी तीक्ष्ण और प्रत्यक्ष हो उठी है कि योरप के प्रायः सभी विचार-शील व्यक्ति राष्ट्रों के दावों और प्रतिदावों को तय करने के लिए उनके बीच एक अनिवार्य युद्ध होने की आशंका कर रहे हैं। फैसिस्ट शासन में इटली का राजनैतिक बल बहुत कुछ बढ़ गया है और उसे अपने विस्तार के लिए अफ्रीका में स्थान खोजना पड़ा है। गत युद्ध में जर्मनी की बहुत क्षति हुई थी। और कदाचित् वह यह अनुभव कर रहा है कि एकमात्र कुछ और देश अधिकार में आने से ही उसकी घरेलू और आर्थिक संकट की समस्या हल हो सकती है।

एक ऐसे समय में जबकि इटली की सारी शक्ति अबीसीनिया की ओर लगी हुई है, जर्मनी ने अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए यह बड़ा ही अनुकूल अवसर चुना है और इसीलिए परिस्थिति और भी विषम हो उठी है। यदि लीग आफ नेशंस में अबीसीनिया के प्रश्न का निर्णय संतोष-जनक रीति से न हो सका, तो सम्भवतः इटली अफ्रीका में अपना बल-प्रयोग जारी रक्खेगा। योरप और अफ्रीका दोनों जगह एक साथ युद्ध करना उसके लिए कठिन होगा। रूस और फ्रांस दोनों अपने हाल के समझौते से मैत्री के एक सूत्र में बँध गए हैं। इस प्रकार जर्मनी अकेला-सा पड़ गया है। हिटलर को अपनी शर्तों पर जोर देने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिल सकता था, क्योंकि उसने सोचा होगा कि रूस, इटली और फ्रांस के भावी त्रिगुट्ट से निकलने का यही एक मार्ग है। इटली रूस का साथ देगा, इसमें भी सन्देह है; क्योंकि दोनों के सिद्धान्तों में मूल से ही भेद है। परन्तु कोई कह नहीं सकता कि इस राजनैतिक बवंडर से जो परिस्थिति उत्पन्न होगी, उसके फलस्वरूप पाँसा कैसा पड़ेगा।

जर्मनी की वर्तमान आर्थिक स्थिति बहुत ही गिरी अवस्था में है। उसका निर्यात-व्यापार अब उसका आधा भी नहीं है, जितना युद्ध के पूर्व था। जर्मनी के श्रम-जीवियों और साधारण नागरिकों के रहन-सहन का दर्जा इटली और फ्रांस की अपेक्षा अधिक अच्छा है। इसलिए उसे अपनी छः करोड़ जन-संख्या के लिए जीविकोपार्जन की व्यवस्था करने में कठिनाई पड़ती है। कृत्रिम ढंग से उसने पन्द्रह वर्ष यह गाड़ी और खींची, परन्तु लोगों के रहन-सहन के दर्जे को कायम रखने और उनके लिए जीविकोपार्जन के साधन एकत्र करने के लिए उसके पास कोई साधन नहीं है। फिर जर्मनी के लिए यह अनिवार्य था कि वह अपनी माँगों को सैनिक प्रदर्शन द्वारा उपस्थित करे,

क्योंकि आर्थिक दृष्टि से वह वर्तमान योरप के अत्यन्त निर्बल राष्ट्रों में ठहरता है। खैर, समस्या यह है कि एक निर्धन देश जिसकी साख बहुत निर्बल है, कब तक ठहर सकता है? यह निश्चित है कि अकेला जर्मनी चंद महीनों से अधिक नहीं टिक सकता। सम्भवतः हिटलर को लीग से बड़ी आशा है। कदाचित् वह सोचता है कि इस समय कोई युद्ध में पड़ना पसन्द न करेगा—विशेषकर इँगलैंड जैसे देश, जिनमें राष्ट्रीय पुनरुद्धार का कार्य आरम्भ है।

महायुद्ध के बाद से जर्मनी पर बहुत-सी मुसीबतें आ पड़ी थीं। धीरे-धीरे जर्मनों ने अपने राष्ट्रीय ऋण पर खेलकर उनमें से बहुतों से छुटकारा पाने की व्यवस्था की। बहुत-से ऋणों को चुकाने के लिए जनता पर प्रतिवर्ष भारी-भारी कर लदते गए, तो भी उसका निर्यात-व्यापार तब तक किसी कदर बढ़ता रहा, जब तक इँगलैंड और अन्य देशों में स्वर्णमान प्रचलित रहा। इस प्रकार तीन वर्ष पूर्व तक तो यह संसार के साथ व्यापारिक प्रतियोगिता करने में समर्थ रहा, परन्तु जब बहुत-से देशों ने स्वर्णमान छोड़ दिया, तब जर्मनी के लिए अपने निर्यात-व्यापार को कायम रखना असम्भव हो गया। फिर इस व्यापारिक प्रतियोगिता में जापान इतनी तेजी के साथ कूदा कि जर्मनी के वस्त्र-व्यवसाय का खातमा ही हो गया। प्रायः सभी सूती मिलों को बन्द हो जाना पड़ा और इसके फलस्वरूप बेकारी की समस्या इतनी भीषण हो उठी कि गवर्नमेण्ट सफलता के साथ उसका सामना नहीं कर सकी। अपनी निर्बल करेंसी के कारण जर्मनी स्वर्णमान का परित्याग नहीं कर सका। नई सरकार को देश की कठिनाइयों की बागडोर अपने हाथ में लेनी पड़ी। इस विशेष अवसर पर सिवा डिक्टेटरशाही के और कोई शक्ति देश को छिन्न-भिन्न और बरबाद होने से बचा नहीं सकती थी। हिंडनबर्ग ने भी इस बात को सोचा था। इसी लिए उन्होंने अपने अंतिम दिनों में हिटलर की शक्ति बढ़ने दी, क्योंकि वे जानते थे कि जर्मनी के उद्धार का एकमात्र यही मार्ग है।

जब हिटलर के हाथ में शासन-सूत्र आया, तब उसने जर्मनी के आयात-व्यापार विशेषकर खाद्य पदार्थों पर कड़ाई के साथ चुंगी लगाकर नियंत्रण करना और देश के कच्चे माल के उद्गमों को विकसित करना आरम्भ किया और इसके लिए अपना एक कार्यक्रम बना लिया। इस प्रकार जर्मनी के सिक्कों का ५० प्रतिशत से भी अधिक बाहर जाना रुक गया। कृषि की वृद्धि की गई और बहुत-सी बेकार भूमि जोती जाने लगी। परन्तु निर्यात-व्यापार प्रतिवर्ष गिरता गया और उसके सँभालने की कोई सूरत न निकल सकी। अपने उपनिवेशों के अभाव में जर्मनी को बहुत-सा कच्चा माल विदेशों से खरीदना पड़ता था और भीषण कर-वृद्धि के कारण उसे श्रमजीवियों की मजदूरी की दर भी बहुत अधिक बढ़ानी पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे माल तैयार करने में अधिक व्यय करना पड़ा, जो सम्भवतः जापान की अपेक्षा दूना और इँगलैंड की अपेक्षा २५ प्रतिशत अधिक था।

इस प्रकार जर्मनी को यह अनुभव हुआ कि देश की वर्तमान आर्थिक दुरवस्था के बीच में बीते दिनों के वैभव को फिर से प्राप्त करना असम्भव है। कदाचित् हिटलर ने यह सोचा है कि केवल दूसरा युद्ध या युद्ध का भाव उसके देश को आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से अधिक अच्छी स्थिति प्रदान कर सकता है। शान्ति भाव से प्रदेश-प्राप्ति की आशा असम्भव थी और

बिना कुछ प्रदेश प्राप्त किए जर्मनी अपनी करेंसी का सुधार करने में कभी समर्थ न होगा। यही कारण है कि हिटलर ने फिर से जर्मनी में सैनिक तैयारियाँ आरम्भ की हैं। १९३३ और १९३५ के बीच में जर्मनी में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। विचार और कार्य-स्वातन्त्र्य कड़ाई के साथ दबाए गए हैं। यहूदी बुरी तरह पीड़ित किए गए हैं और इसके लिए राष्ट्र को बुराइयों से मुक्त करने की दुहाई दी गई है। सैनिक तैयारियाँ सर्वत्र प्रत्यक्ष हो रही थीं। इस लेख के लेखक को जिसने एक छोर से दूसरे छोर तक सम्पूर्ण जर्मनी का भ्रमण किया है, इस तैयारी की तेजी का बड़ी आसानी से अनुभव हुआ है। इस कार्य में सम्पूर्ण राष्ट्र इतने उत्साह के साथ संलग्न था कि कोई भी यह अनुभव कर सकता था कि सैनिक मनोभाव के इस जोशीले प्रदर्शन का शीघ्र ही कुछ-न-कुछ फल देखने को मिलेगा।

हिटलर ने साफ-साफ यह घोषणा कर दी है कि जर्मनी लोकार्नो पैक्ट से अब एक क्षण भी बँधा नहीं रह सकता। उसके तर्क बहुत कुछ निर्बल हैं। उसका कहना है कि फ्रांस और रूस के नवीन समझौते के कारण उसे ऐसा करना पड़ा है। लोकार्नो का समझौता योरपीय देशों को एक प्रतिज्ञा में बाँधता है, जिसका आशय यह है कि वे सुलह की सन्धियों के अनुसार भौमिक समझौतों को मानेंगे। हिटलर का स्पष्ट शब्दों में यह कहना है कि जर्मनी को तत्कालीन परिस्थितियों के कारण इसे मानने के लिए विवश होना पड़ा था। और वह समझौते पर अन्य हस्ताक्षर करनेवालों को दोषी ठहराता है, क्योंकि उन्होंने जर्मनी के ऊपर सर्वथा अविवेक और अन्याय से भरी हुई शर्तें लादी थीं। इस समझौते की जर्मनी ने उपेक्षा कर दी है और हिटलर जोर से इस बात की घोषणा कर रहा है। इस समझौते को 'लीग आफ नेशंस' ने भी स्वीकृति दी थी, परन्तु जर्मनी अब लीग का मेम्बर नहीं है और इसलिए उसके निर्णय को मानने के लिए वह बाध्य भी नहीं है। लीग के सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण करने का इटली का उदाहरण अभी ताजा है। पाठक जानते हैं कि उसने लीग की धमकियों की किस लापरवाही से उपेक्षा की है। आशा की जाती है कि इस सम्बन्ध में जर्मनी भी उसी पथ का अनुसरण करेगा। लीग अपनी धाक बहुत कुछ गँवा चुका है और यदि वह अपने अस्तित्व के साथ न्याय करने में फिर असफल होता है, तो उसकी मृत्यु निःसन्देह निश्चित है। लीग की कौंसिल से जर्मनी के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबन्ध लगाने की फ्रांस की भर्त्सनापूर्ण माँग कदाचित् ही कारगर हो और बिना एक अच्छी मात्रा में त्याग किए एक बार उठाए जाने पर यह प्रश्न प्रेमपूर्वक तय हो जायगा, इसमें भी सन्देह है।

राइनलैंड जर्मन-कार्य-व्यवसाय की रीढ़ है। व्यापारिक दृष्टि से इस प्रदेश पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करने की जर्मनी की एक बहुत बड़ी लालसा है, जिसकी पूर्त्ति के लिए वह कुछ भी बाकी नहीं रख सकता। दूसरी ओर इससे फ्रांस की सुरक्षा की भावना बहुत कुछ नष्ट हो जायगी। और यदि उसने इस प्रदेश की स्वाधीनता अपने हाथ से निकल जाने दी, तो उसे भविष्य में जर्मन-लाइन से सदैव आक्रमण का भय बना रहेगा। मेज, कोब्लेन्ज, कोलेन और फ्रैंककोर्ट चारों औद्योगिक नगर हैं और इन पर जर्मनी का सैनिक अधिकार एक ऐसी महत्त्वपूर्ण राजनैतिक घटना है, जिसकी फ्रांस मुश्किल से उपेक्षा कर सकता है।

जर्मनी का प्रसिद्ध नगर म्युनिच और अन्य नगर

लेखक : श्री हरिकेशव घोष

लिपजिग में मेरे मित्र बाबू बनवारीलाल ने, योरपीय कारखानों के भ्रमण से थक जाने के कारण, लन्दन जाने की इच्छा प्रकट की। हमने उनको रोकने की चेष्टा की, पर हमें सफलता नहीं मिली। लगभग एक महीने के इस नीरस साथ के लिए उन्होंने हमें बहुत कुछ बुरा-भला कहा। वे योरपीय शहरों का नागरिक जीवन देखने आये थे और हमारे कार्य्यक्रम से स्वभावतः ऊब गए थे। इसलिए एक दिन हमने उन्हें लिपजिग स्टेशन पर पेरिस और कैले जानेवाली पश्चिम की गाड़ी से रवाना किया। जर्मनी में हमारा कार्यक्रम लम्बा था। हमें कुछ और औद्योगिक केन्द्र देखने थे, विशेषकर म्युनिच और राइनलैंड, जिसका कि जर्मनी को बड़ा गर्व है। लिपजिग के होटल ने, जहाँ हम ठहरे थे, हमारा कार्यक्रम बनाने में बड़ी सहायता की। परन्तु निश्चित दिन को हम रवाना न हो सके, क्योंकि श्रीयुत दास गुप्त के एक मित्र ने हमें गेटे क्लब में खास तौर से आमंत्रित किया। यह प्रबुद्ध जर्मन विद्वानों के एक नमूना थे, पोशाक की ओर से बिलकुल लापरवाह, परन्तु प्रथम श्रेणी के कवि। इनका भाषा-सम्बन्धी ज्ञान भी आश्चर्य्यजनक था। ये विशुद्ध उच्चारण के साथ अँगरेजी बोल सकते थे। औसत दर्जे के जर्मनों के लिए, जो सरलता से अपने स्वर पर काबू नहीं पा सकते, यह एक चमत्कार ही था।

लिपजिग का गेटे क्लब जर्मन विद्वानों का बड़ा ही प्रिय आश्रय-स्थल है। यह क्लब वास्तव में एक बहुत बड़े और अत्यन्त पुराने मकान के नीचे के भाग में एक विश्राम-गृह है। यहाँ गेटे प्रायः आया करते थे और वर्तमान सन्तति से उनकी स्मृति का सान्निध्य स्थापित करने के लिए उनके समय की बहुत-सी कुर्सियाँ आदि सुरक्षित रक्खी गई हैं। यहाँ बहुत-से प्रसिद्ध व्यक्तियों ने हमारा स्वागत किया और एक घंटे तक हमने अपने देश के महान् संस्कृत के कवियों के सम्बन्ध में बातें कीं। अतिथियों में कई एक प्राच्यविद् भी थे। उनका प्राच्य साहित्य का इतना अध्ययन था कि उन्होंने हमें चकित कर दिया। इसमें सन्देह नहीं कि उनमें से अधिकांश प्राच्य दर्शन का मर्म नहीं समझते थे, तथापि उन्हें इस विषय का यथेष्ट ज्ञान था। हमारे महान् कवि रवीन्द्रनाथ जर्मनी के साहित्यिक मनुष्यों में बहुत विख्यात हैं। उनकी बहुत-सी पुस्तकें जर्मन-भाषा में अनूदित हो गई हैं। महात्मा गांधी भी बहुत विख्यात हैं। पर कांग्रेस से उनके अलग हो जाने से उनकी प्रसिद्धि कुछ कम हो गई है। एक प्रसिद्ध प्रकाशक ने मुझसे 'गीतांजलि' की बिक्री के बारे में पूछा। मैंने टाल जाने की कोशिश की, क्योंकि भारतवर्ष में पुस्तकों की इतनी कम बिक्री है कि उनका जिक्र न करना ही अच्छा है। केवल जर्मन-भाषा में गीतांजलि की ५०,००० प्रतियाँ बिक चुकी हैं और लगभग १० योरपीय भाषाओं में वह प्रकाशित हो चुकी है।

लिपजिग में मैंने यह अनुभव किया कि यदि हमारी आर्थिक स्थिति सुधर जाय और लोगों के लिए पुस्तकावलोकन विलास की वस्तु न रहकर आवश्यकता और संस्कृति का एक अंग बन जाय, तो भारतवर्ष में भी पुस्तक-प्रकाशन
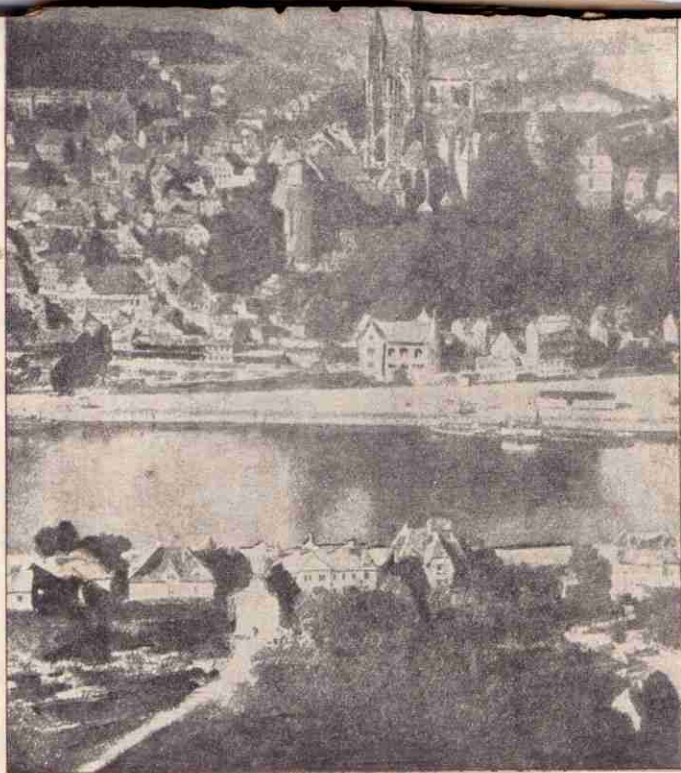
बर्लिन की एक कृत्रिम झील
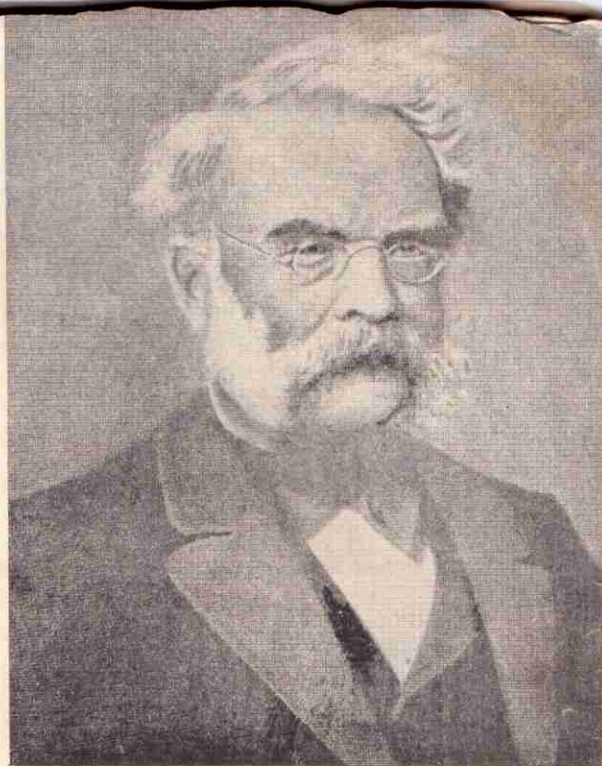
हरवान सीमेन
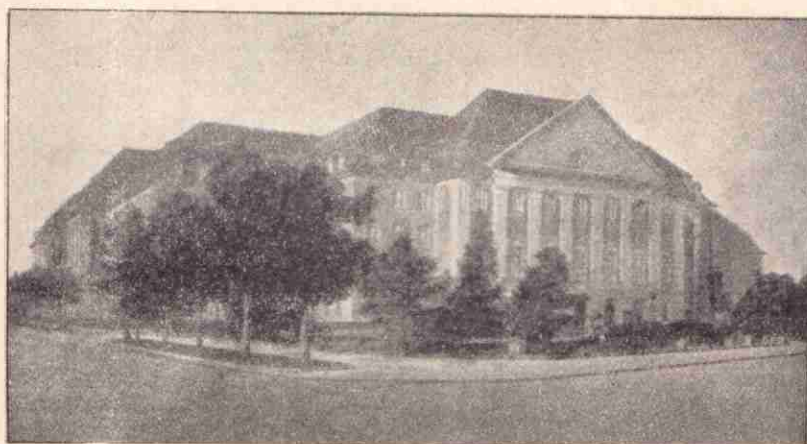
जर्मनी

बाईं ओर : सीमेन के कारखाने का प्रधान कार्यालय

दाईं ओर : सीमेन के कारखाने के कर्मचारी व्यायाम कर रहे हैं
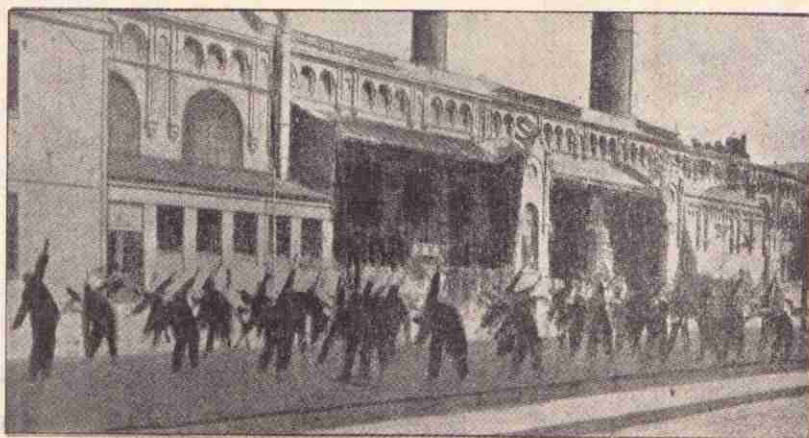
सीमेन के कारखाने का स्वच्छ भोजनालय

कैसर का राजमहल जिसमें अब संग्रहालय है
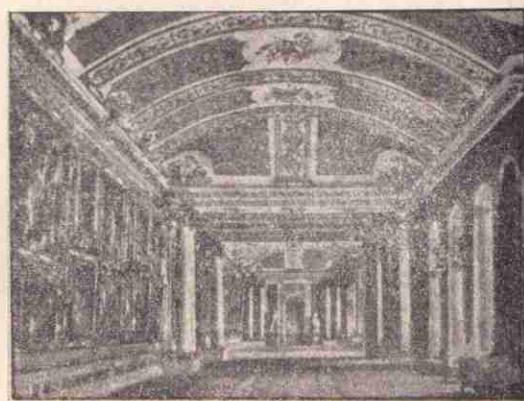
कैसर के राजमहल में कला-भवन

जर्मनी

लायन आफ ब्रंसविक
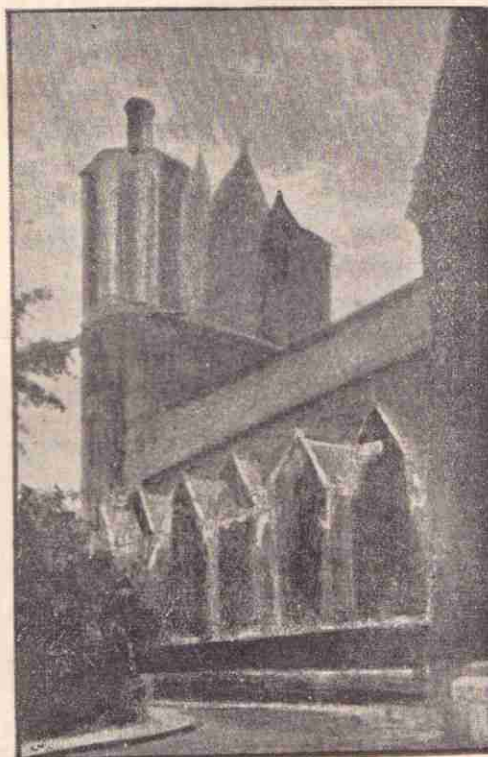
बारहवीं शताब्दी का रोमन गाथिक गिरजा

हिटलर और जर्मनी

बाईं ओर : जर्मनी का तानाशाह हर हिटलर

प्रेसीडेण्ट हिंडनबर्ग और हिटलर

हर हिटलर का दाहिना हाथ डा॰ गोबुल्स

दाईं ओर : जर्मनी के सैनिक बच्चे
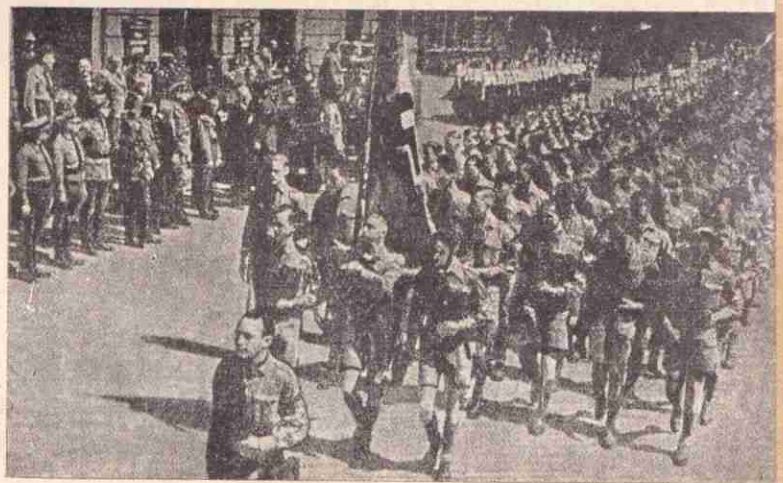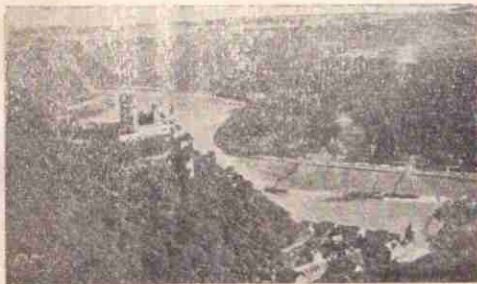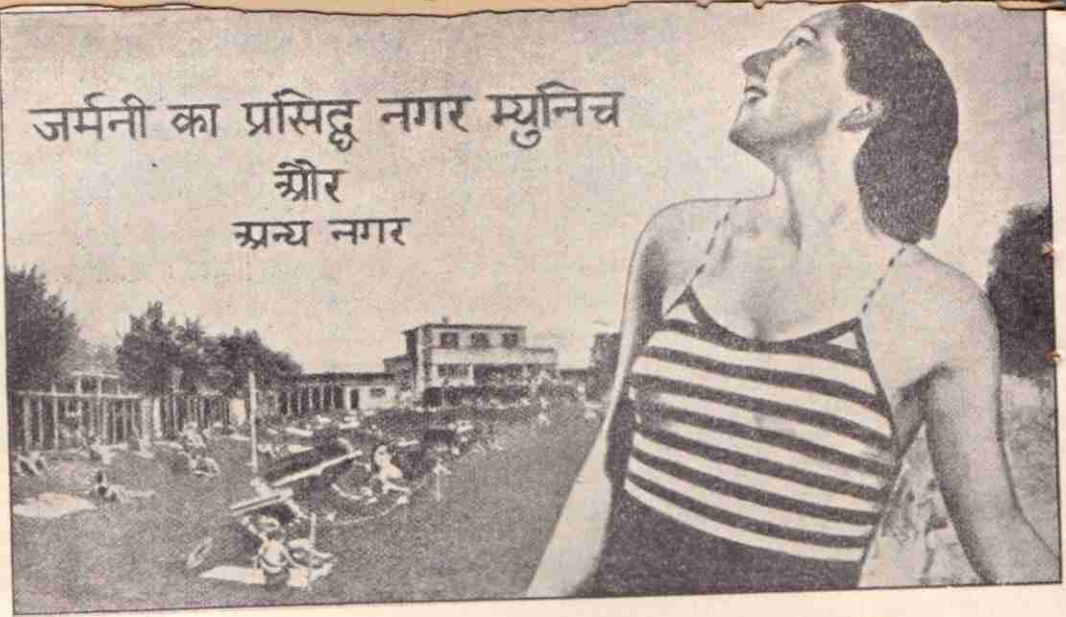
बाईं ओर : राइनलैंड का एक दृश्य
दाईं ओर : म्युनिच शहर का एक दृश्य
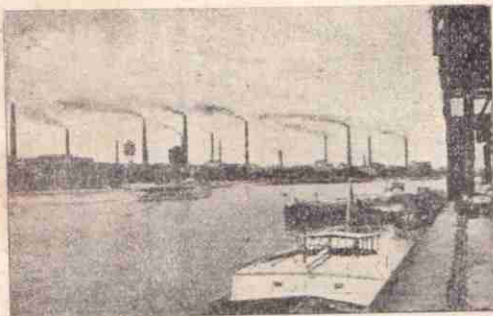
बाईं ओर : राइन के किनारे कारखानों का एक दृश्य
दाईं ओर : १८१३ का बना जर्मनी का पहला रेल-इंजन
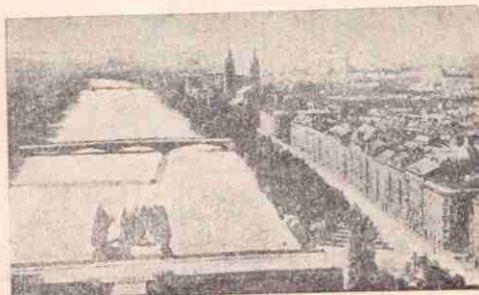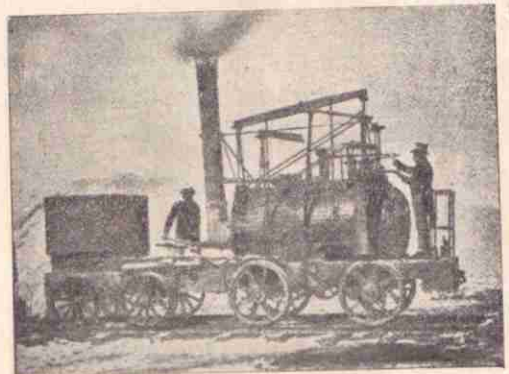
बाईं ओर : नहर के किनारे म्युनिच का प्रसिद्ध म्युजियम
दाईं ओर : म्युजियम में हवाई जहाज संबंधी क्रमविकास का एक विभाग
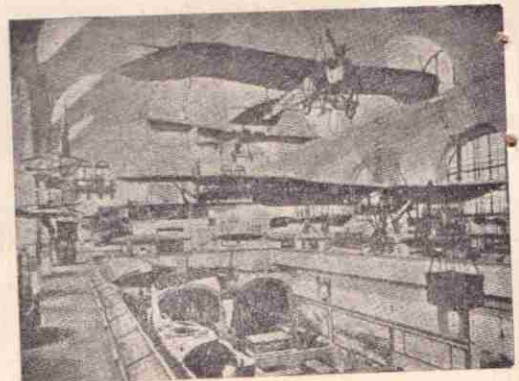
का कार्य्य बहुत अच्छा हो सकता है। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि वहाँ कुछ लोकप्रिय पुस्तकों की १० लाख से अधिक प्रतियाँ प्रतिवर्ष बिकती हैं। और वहाँ के पत्र-पत्रिकाओं की तो कुछ बात ही न पूछिए। सम्पूर्ण जर्मनी में प्रत्येक व्यक्ति उन्हें पढ़ता है। अकेले लिपजिग नगर में दो लाख से अधिक मनुष्य पुस्तक-प्रकाशन-कार्य्य और इससे सम्बन्ध रखनेवाले व्यवसायों में लगे हैं।

लिपजिग अपनी बसन्तकालीन प्रदर्शनी के लिए प्रसिद्ध है। उस समय यहाँ योरप के समस्त भागों से लगभग २५ हजार यात्री जमा होते हैं। ये नवीन आविष्कार और टेकनिकल उद्योगों की विभिन्न शाखाओं की उन्नति देखने आते हैं। अमरीका, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमरीका की रियासतों से बड़े-बड़े खरीदार यहाँ प्रतिवर्ष आते हैं। यहाँ के बड़े-बड़े कारबारियों से माल भेजने के लिए लम्बे-चौड़े इकरारनामे करते हैं। मुद्रण-व्यवसाय-सम्बन्धी तो इस नगर में योरप की सबसे बड़ी प्रदर्शनी लगती है।

एक दिन प्रातःकाल जब मैं होटल से बाहर आ रहा था, मेरी एक नवयुवक बंगाली विद्यार्थी से भेंट हुई। यह विद्यार्थी मेरे कलकत्ते के एक मित्र के दामाद थे और स्थानीय विश्वविद्यालय में वनस्पति-शास्त्र का अध्ययन कर रहे थे। इन्हें यह समाचार मिला था कि मैं लिपजिग में हूँ, इसलिए ये मुझसे मिलने आये थे। ये दो दिन मुझे खेल और सन्ध्या के लोकप्रिय विश्राम-स्थान दिखाने ले गये। सम्पूर्ण महाद्वीप में ग्रीष्मकाल का जनता इतना आनन्द लेती है कि ऊपर से देखने से यह नहीं जान पड़ता कि यह देश अर्थसंकट से पीड़ित है। सन्ध्या-समय सर्वत्र उपवनों और स्नान के केन्द्रों में प्रमुदित जन-समूह देख पड़ता है। नवयुवक टेनिस खेलते हुए नजर आते हैं। मजदूर स्त्रियाँ भी खुले मैदानों में खेल का आनन्द लेती हुई देख पड़ती हैं। सम्पूर्ण वायुमंडल ही आमोद-प्रमोद से पूर्ण प्रतीत होता है। कहीं किसी महामारी का नाम नहीं, बड़े बूढ़े तक टहलने के लिए निकलते हैं और प्रति सन्ध्या को उपवनों के शीतल समीर का आनन्द लेते हैं। पाइन के वृक्ष पंखा-सा झलकर इस बल-वर्द्धक वायु की वृद्धि करते हैं और विश्रामगृह प्रमुदित युवकों और युवतियों से पूर्ण दिखाई पड़ते हैं।

एक दिन जब मैं अपने नवयुवक मित्र के साथ एक बाग में घूम रहा था, स्थानीय विश्वविद्यालय-छात्राओं का एक दल हमारी ओर आकृष्ट हो गया। वे हमारे देश के सम्बन्ध में हमसे प्रश्न करने लगीं। उन्हें हमारे देश का अत्यल्प ज्ञान था। उनका खयाल था कि हमारा देश धन-धान्य से पूर्ण है और उसमें बहुत ही धनी मनुष्य निवास करते हैं। योरप के लोगों में हमारी आर्थिक दशा के बारे में यह गलतफहमी इसलिए है कि हमारे कुछ राजा और रईस, जो इस महाद्वीप की यात्रा करते हैं, होटलों और विश्राम-गृहों में अपार धन लुटाते हैं। प्रत्येक भारतीय जो साफा बाँधता है, अपार धन का स्वामी समझा जाता है। प्रत्येक भारतीय बड़ा धनी माना जाता है।

जर्मनी के एक शहर हाइल्डेलबर्ग में मुद्रण-यन्त्र बनानेवाले एक कारखाने में मुझे थोड़ा-सा काम था। इसलिए एक दिन सुबह के सुहावने समय में एक्सप्रेस ट्रेन से इस नगर की लम्बी यात्रा के लिए रवाना हो गया। यह मार्ग अधिकांश में राइनलैंड होकर गया था। राइन जर्मनी की महानदी है और एक अत्यन्त उपजाऊ

प्रदेश से होकर बहती है। इस नदी के दोनों किनारों पर बहुत से बड़े-बड़े औद्योगिक नगर स्थित हैं। औद्योगिक जर्मनी के लिए यह नदी एक बड़े जलमार्ग का भी काम देती है। नदी के दोनों किनारों पर अंगूर के सुन्दर बाग हैं और इन्हीं स्थानों में प्रसिद्ध जर्मन अंगूरी शराब के मुख्य कारखाने हैं। ऐसे एक स्थान पर हमने संगमरमर की एक सुन्दर मूर्त्ति घोड़े की पीठ पर देखी। इसके एक हाथ में अंगूर और दूसरे हाथ में प्याला था।

छः घंटे की यात्रा के बाद सन्ध्या-समय मैं हाइल्डेलबर्ग पहुँचा। मैंने वहाँ के कारखाने को अपने आने के सम्बन्ध में पहले ही सूचित कर दिया था, इसलिए उनका एक आदमी मुझसे स्टेशन पर मिलने आया। उसने उसी समय मुझे स्टेशन के सामने एक होटल में ठहराया। वहाँ मैंने दूसरे दिन प्रातःकाल तक आराम किया। सारे जर्मनी में खास-खास होटलों में अँगरेजी बोली जाती है। इससे यात्रियों को बड़ी सुविधा होती है, नहीं तो भोजन और अन्य सुविधाओं के सम्बन्ध में यात्रियों को होटल के कर्मचारियों से कहने में बड़ी कठिनाई होती। इस होटल का प्रधान अभ्यर्थनाकारी भारत में पाँच वर्ष रह चुका था, इसलिए उसे एक भारतीय को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मेरी सुविधाओं की ओर उसने खास तौर से ध्यान दिया। लम्बी यात्रा के बाद मैं थक गया था, इसलिए उसने मेरे लिए गर्म पानी से स्नान करने की व्यवस्था कर दी। दिन में बहुत अधिक गर्मी थी, इसलिए इस स्नान से मुझे बहुत आराम मिला। उसी दिन सन्ध्या को होटल के विश्राम-गृह में स्थानीय साहित्यिक क्लब की एक बड़ी बैठक हुई। ३० के लगभग व्यक्ति उपस्थित थे। वे सब ४० वर्ष से ऊपर थे और साहित्यिक प्रतीत होते थे। सभापति महोदय, जो स्थानीय विश्वविद्यालय के प्रधान थे, बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति प्रतीत होते थे। बहुत-सी स्त्रियाँ भी उपस्थित थीं।

सबेरे जल-पान के बाद, जिस कारखाने में मुझे कुछ काम था, मैं उसमें ले जाया गया। मैंने उनका कारखाना भी देखा। दोपहर के भोजन के पहले मैंने अपना काम समाप्त कर दिया। उसके पश्चात् कारखाने के डाइरेक्टर ने नगर से तीन मील एक पहाड़ी पर एक शांतिमय सराय में अपने साथ भोजन करने के लिए आमन्त्रित किया। यह अत्यन्त सुन्दर स्थान था, जहाँ से नीचे के छोटे नगर का सम्पूर्ण सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है। हाइल्डेलबर्ग का विश्वविद्यालय बहुत प्रसिद्ध है और इँगलैंड और अमरीका के विद्यार्थी प्रतिवर्ष यहाँ आते रहते हैं। भोजन के पश्चात् डाइरेक्टर महोदय मुझे हाइल्डेलबर्ग का प्राचीन 'कैसिल' दिखाने ले गये। यह 'कैसिल' पहाड़ी की चोटी पर एक सुन्दर स्थान में स्थित है। यह प्रानीन स्मृति-चिह्न बहुत अच्छी तरह सुरक्षित है और इसे देखकर यात्री-गण मध्य-काल के वैभव का अनुमान कर सकते हैं। इस छोटे नगर में प्रतिवर्ष हजारों यात्री आते हैं और पर्वत के छायादार वृक्षों के नीचे शान्तिपूर्वक कई दिवस व्यतीत करते हैं।

हाइल्डेलबर्ग में दो दिन ठहरने के पश्चात् मैं अपने मित्र श्रीयुत दास गुप्ता से मानहाईम नगर में जा मिला। यह एक बड़ा व्यापारिक नगर है। राइन नदी नगर के बीच से बहती है और उसके दोनों किनारों पर बड़े-बड़े कारखाने हैं। नगर के निकट कुछ प्राकृतिक स्नानागार बने हैं। यहाँ गठिया आदि से पीड़ित लोग

ग्रीष्मकाल में प्रायः स्नान करने आते हैं। यहाँ ११वीं शताब्दी की कई कारुकार्यमय इमारतें अभी तक मौजूद हैं।

मेरा काम केवल दो घंटे का था और मैं अपने मित्र का साथ नहीं दे सकता था, क्योंकि वे एक फर्म के साथ व्यस्त थे। इसलिए मैं स्वयं बाहर घूमने निकला। जर्मन एक शब्द भी नहीं बोल सकता था, इसलिए कुछ घंटों इधर-उधर घूमने के बाद घर लौटते समय मैं राह भूल गया। बड़ी कठिनाई के बाद मैं एक टैक्सी ड्राइवर को कठिनाई समझा सका कि मुझे कहाँ जाना है। वह तुरन्त मुझे स्टेशन ले गया। चूँकि यह होटल शहर का एक प्रसिद्ध होटल था और उसकी बनावट अतीव आधुनिक तरीके की थी, इसलिए मोटरवाला जल्दी मेरा गन्तव्य स्थान समझ गया। होटल इस स्टेशन के प्रधान द्वार के ठीक सामने था। श्रीयुत दास गुप्त मेरे आसरे में बहुत चिन्तित हो रहे थे और सोचते थे कि मैं कहाँ चला गया। होटल के पोर्टर ने कहा कि मैं सड़कों का एक मानचित्र अँगरेजी में आसानी से प्राप्त कर सकता था। खैर, बहुत थक जाने के कारण हमने जल्दी खाना खाया और म्युनिच की लम्बी यात्रा के लिए रेल पर सवार हुए। यह आयतन और प्रसिद्धि में जर्मनी का तीसरा शहर है और शिक्षा का एक विख्यात केन्द्र है।

वर्ष के इस विशेष अवसर पर म्युनिच में 'आक्टोबर मेला' की धूम मची थी। यह एक प्रकार से आसपास के जिलों के किसानों का मेला था, जो खलिहान उठ जाने के बाद शहर में दिल बहलाने आते हैं। किसान-स्त्रियाँ अपनी देशी पोशाक से स्थान को बड़ा मनोमोहक बना देती हैं। नगर में खूब भीड़ थी, और कई जगह भटकने के बाद हमें एक दूसरे दर्जे के होटल में मुश्किल से एक कमरा मिला। उत्सव प्रतिदिन आधी रात तक होते रहते हैं। म्युनिच 'मदिरा' के व्यवसाय का बहुत बड़ा केन्द्र है। बड़े-बड़े खेमों में, जिनमें दो-दो हजार मौज मनानेवाले जमा होते हैं, गिलासों से नहीं बल्कि बड़े-बड़े शीशे के लोटों से शराब पीते हैं और सब चिन्ताएँ छोड़ हँसते, परिहास करते और नाचते हैं। कभी-कभी इतनी अधिक भीड़ होती है कि बीस कदम जाने में आधा घंटा से अधिक लग जाता है। रात को हम यह मेला देखने गये और दो घंटे बाद वापस आ गये।

म्युनिच को संसार के सर्वश्रेष्ठ अपने 'टेकनिकल म्युजियम' के लिए गर्व है। ज्योतिष, पदार्थ विज्ञान, रसायन, यंत्र-निर्माण, आवागमन और टेकनिकल विभाग के सैकड़ों अन्य विषयों की दर्शनीय वस्तुएँ यहाँ इकट्ठी की गई हैं। राष्ट्र की देशभक्ति का यह एक स्मरणीय उदाहरण है। हजारों आदमियों—विद्वान्, इंजीनियर, कलाकार, व्यापारी और संस्थाओं ने सेवा या धन के रूप में इसके लिए स्वेच्छापूर्वक त्याग किए हैं। प्रदर्शनी की इमारत ९ एकड़ भूमि में है और उसको घूमकर देखने में लगभग ९ मील चलना पड़ता है। इस संग्रहालय का उद्देश्य ऐतिहासिक दृष्टि से स्वाभाविक और पारिभाषिक विज्ञान का क्रम-विकास इस प्रकार बतलाना है कि वह सर्वसाधारण की समझ में आ जाय। इसके पुस्तकालय में विज्ञान और टेकनोलाजी पर दो लाख प्राचीन और नवीन पुस्तकें संगृहीत हैं।

दो विभाग देखने में हमें तीन घंटे से अधिक मिले। शिक्षा की दृष्टि से यह संग्रहालय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रतिदिन अपने अध्यापकों के साथ हजारों विद्यार्थी यहाँ आते हैं और अध्यापक-गण उन्हें यह बतलाते हैं कि साइंस की क्रमोन्नति कैसे हुई। यहाँ शताब्दियों से मनुष्य की इस श्रम-साध्य उन्नति का क्रम-विकास देखकर नवयुवकों के हृदय में बड़ा उत्साह पैदा होता है।
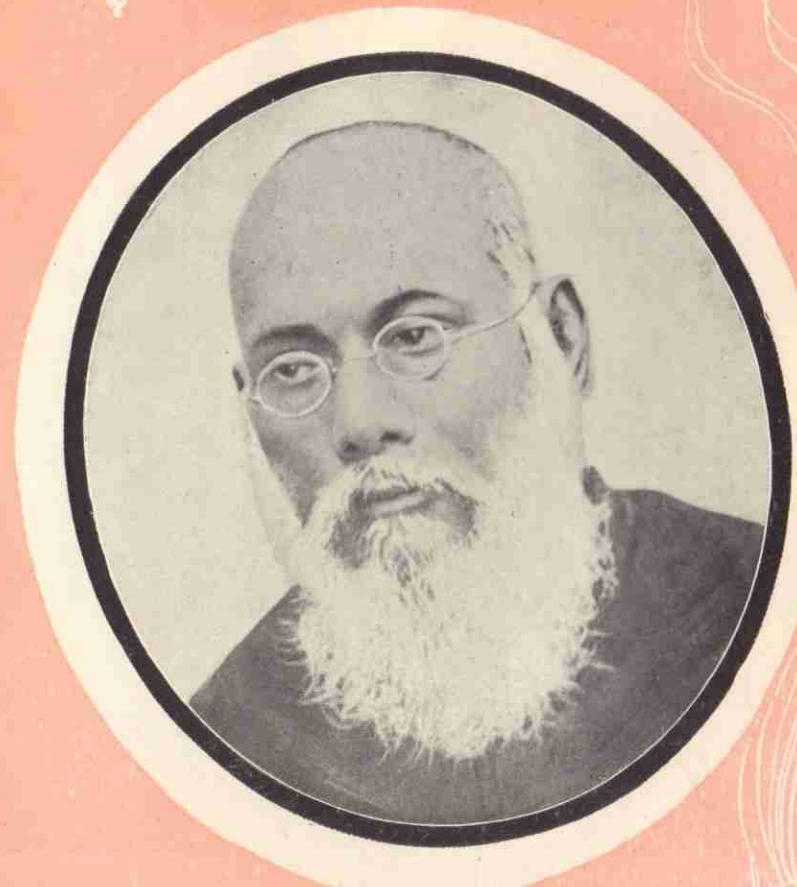
इंडियन प्रेस के प्रधान व्यवस्थापक स्वर्गीय श्री हरिकेशव घोष के पिता, स्वर्गीय श्री चिन्तामणि घोष तथा माता स्व० श्रीमती गोलापमोहिनी घोष
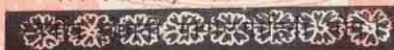
इंडियन प्रेस लिमिटेड का प्रधान कार्यालय, इलाहाबाद।
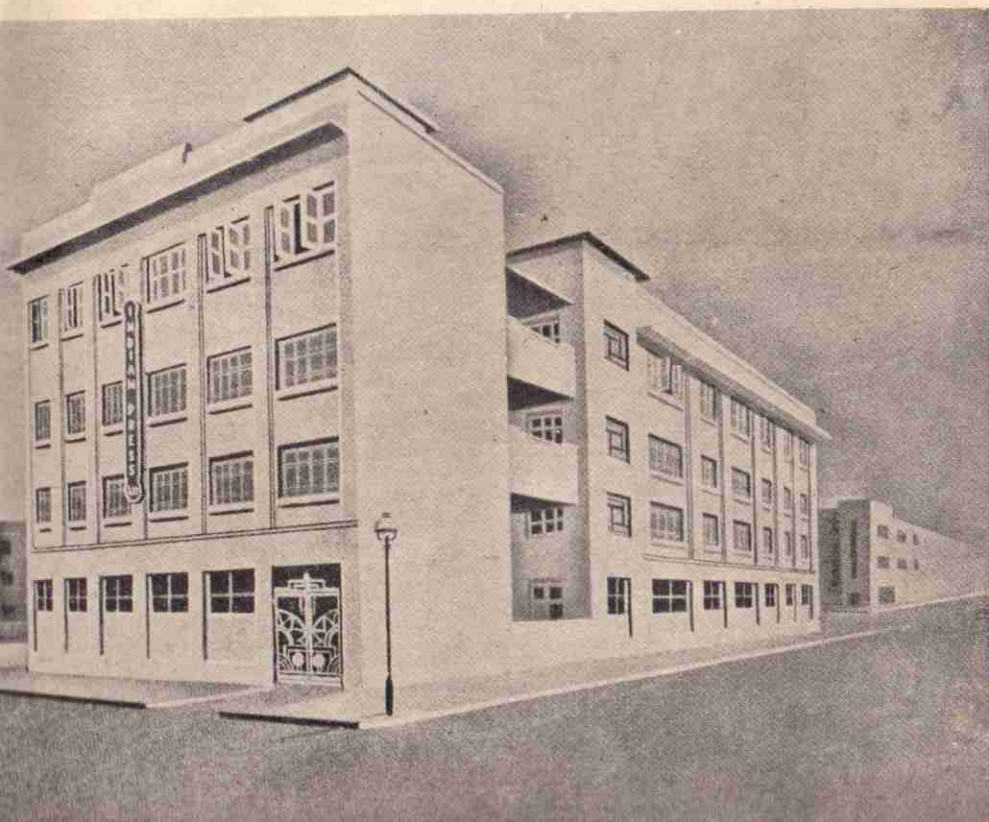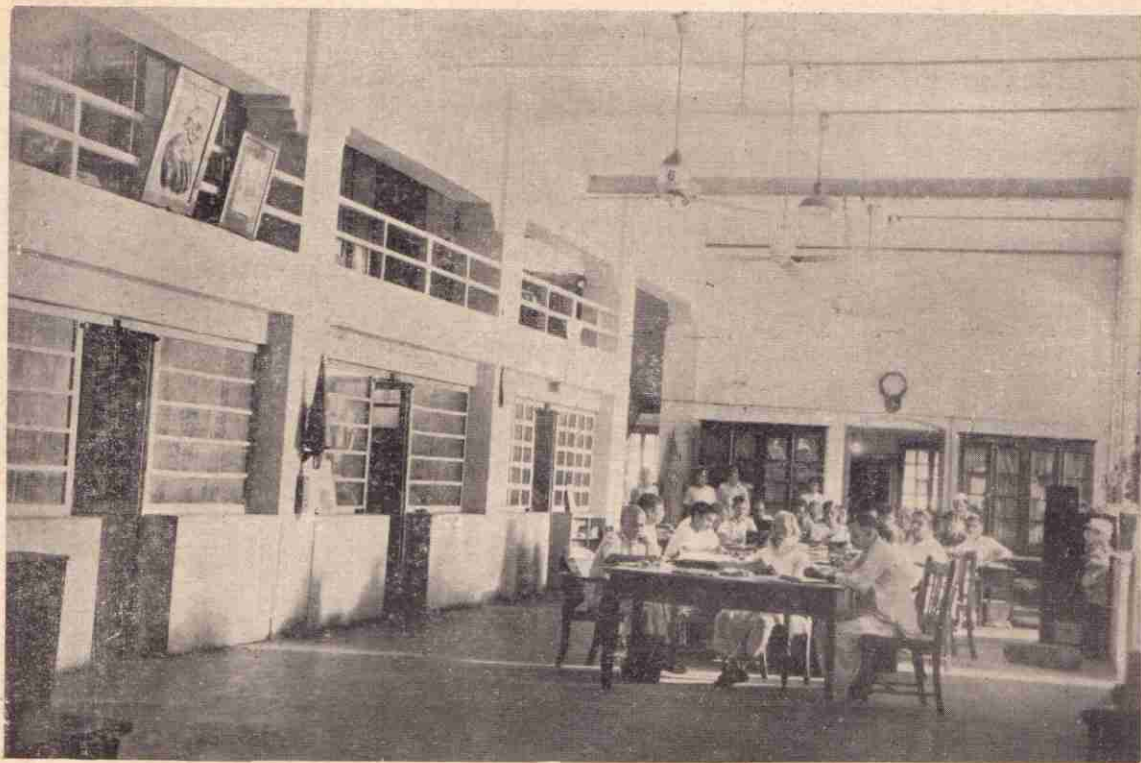
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग कार्यालय का एक दृश्य।
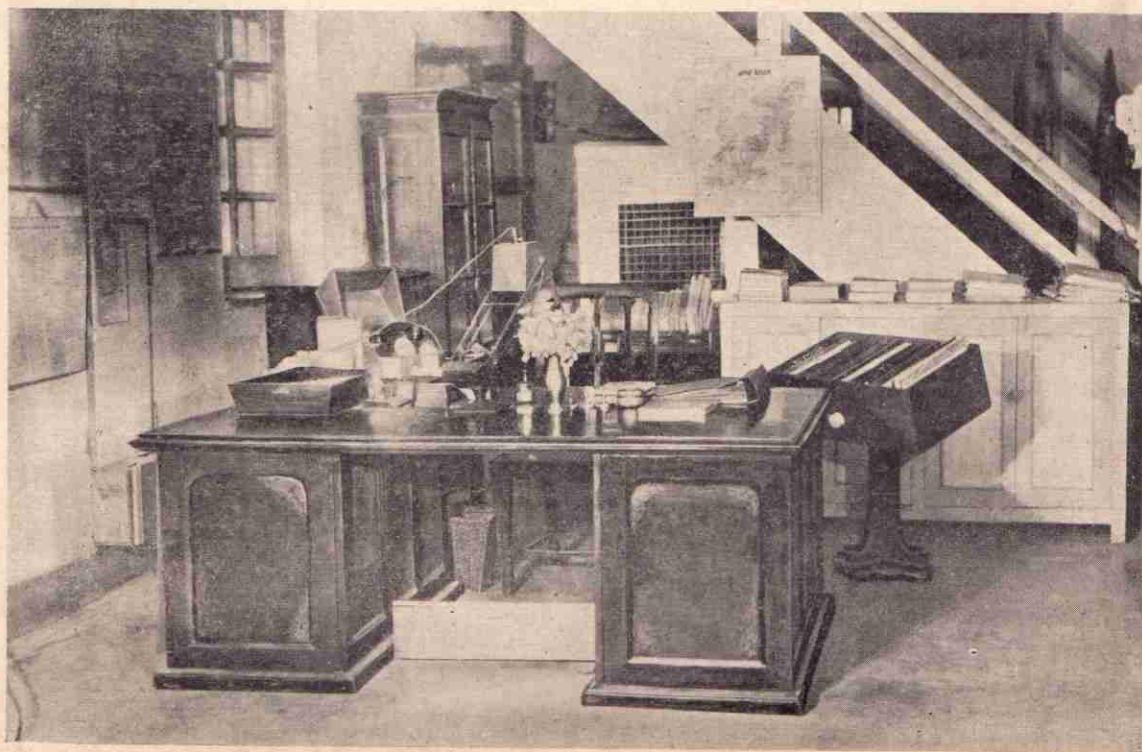
प्रधान व्यवस्थापक स्वर्गीय श्री हरिकेशव घोष की वह मेज, जिस पर वे कार्य-संचालन करते थे।
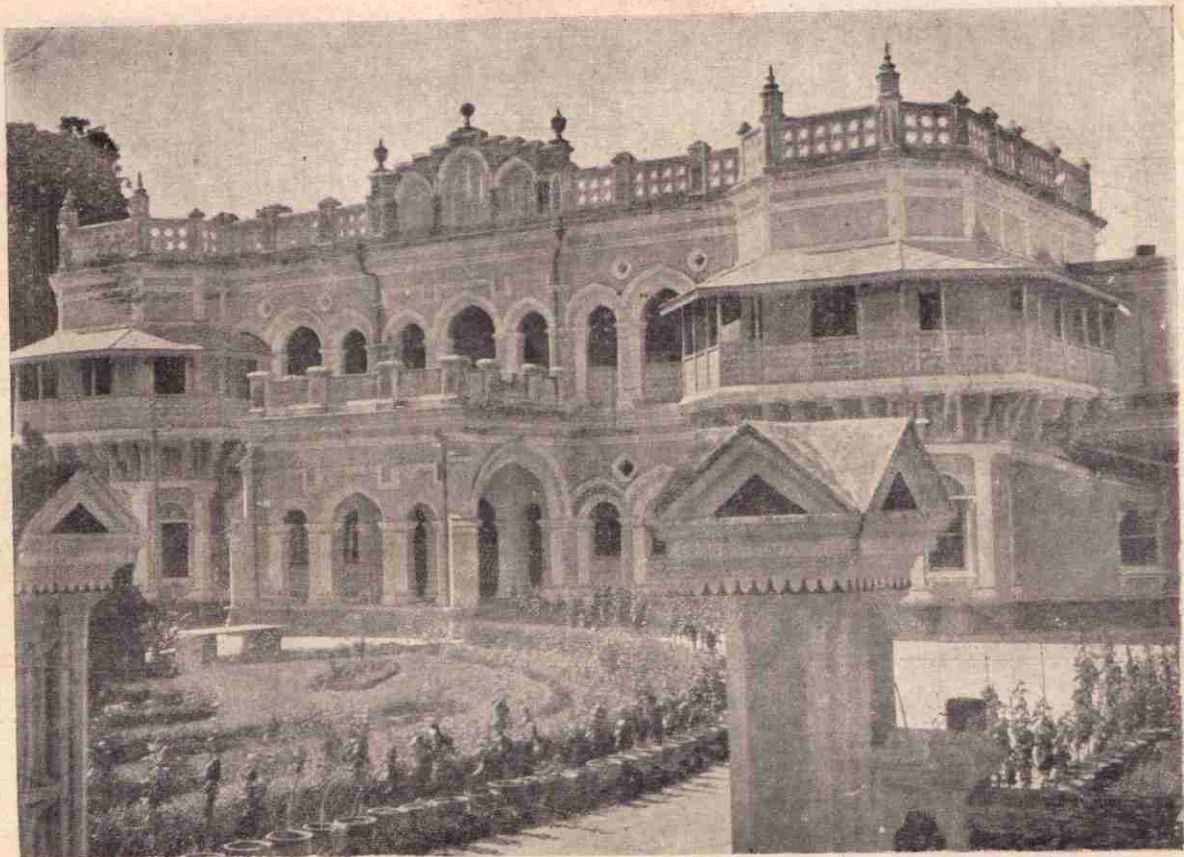
घोष परिवार का निवास-भवन, ५ मालवीय रोड, इलाहाबाद।
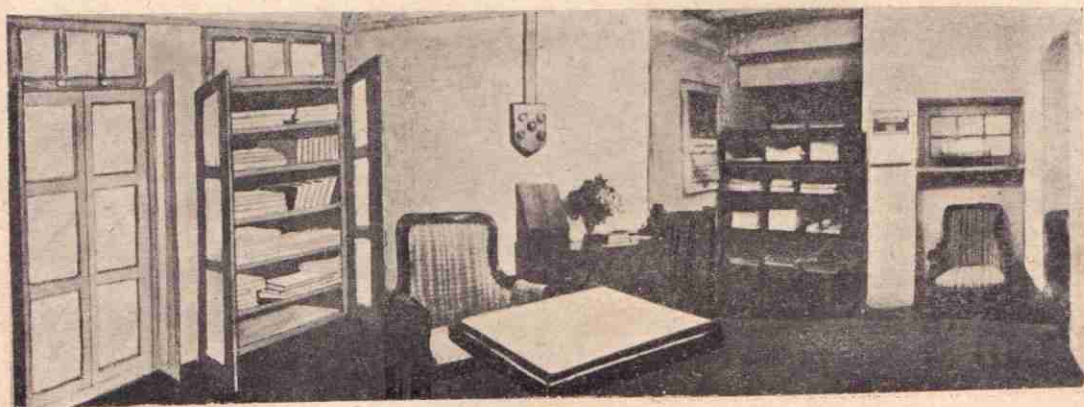
निवास-भवन में श्री हरिकेशव घोष का निजी कक्ष।
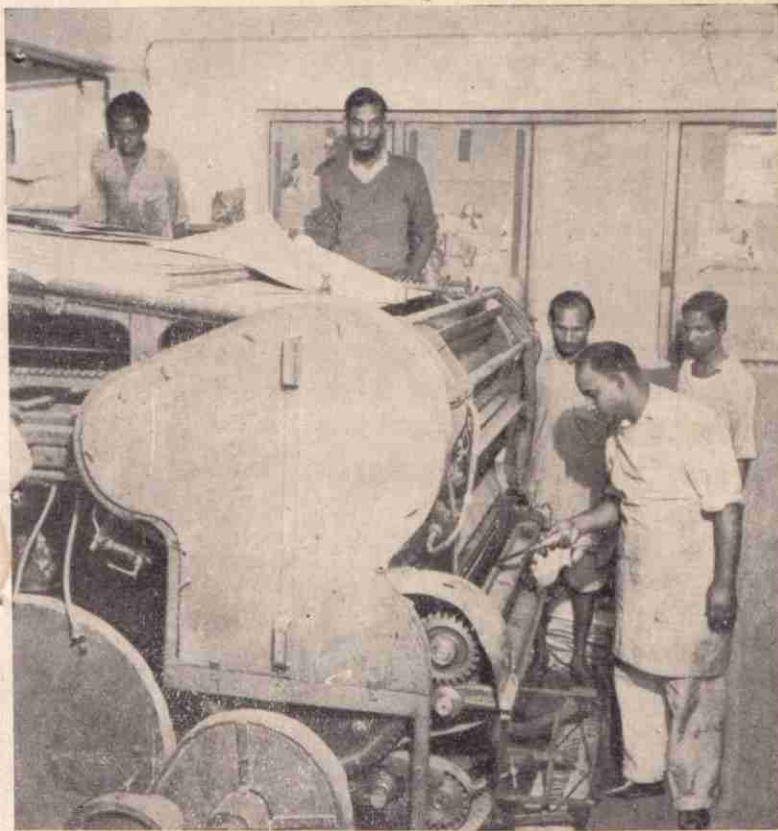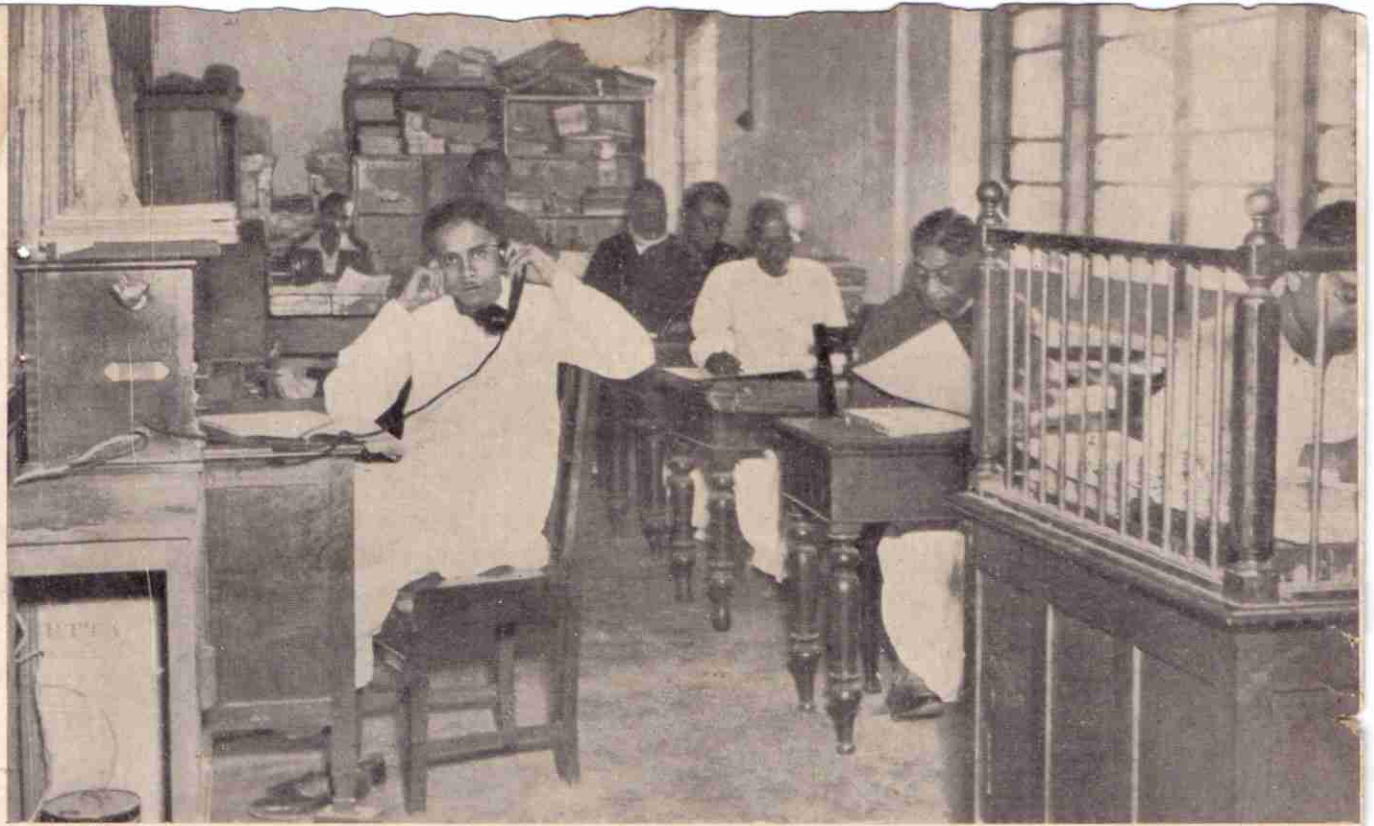
(ऊपर) इंडियन प्रेस लि०, कलकत्ता-शाखा के कार्यालय का एक दृश्य।

(बाई ओर) इंडियन प्रेस लि०, कलकत्ता में फोटोग्रेव्यर मशीन।
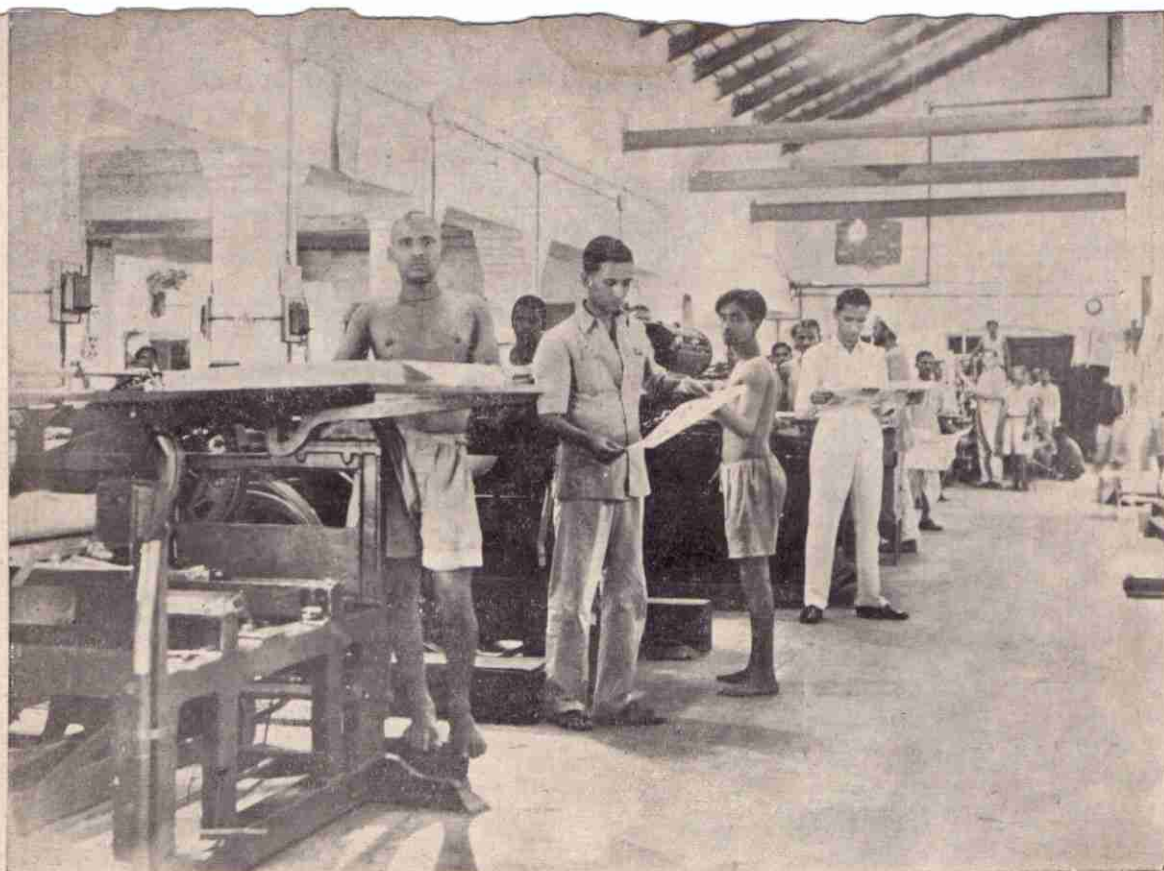
ऊपर : इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग के मशीन-विभाग का एक दृश्य।

नीचे : रोटरी प्रिंटिंग मशीन, जिसे स्व० श्री हरिकेशव घोष जर्मनी से लाये थे।
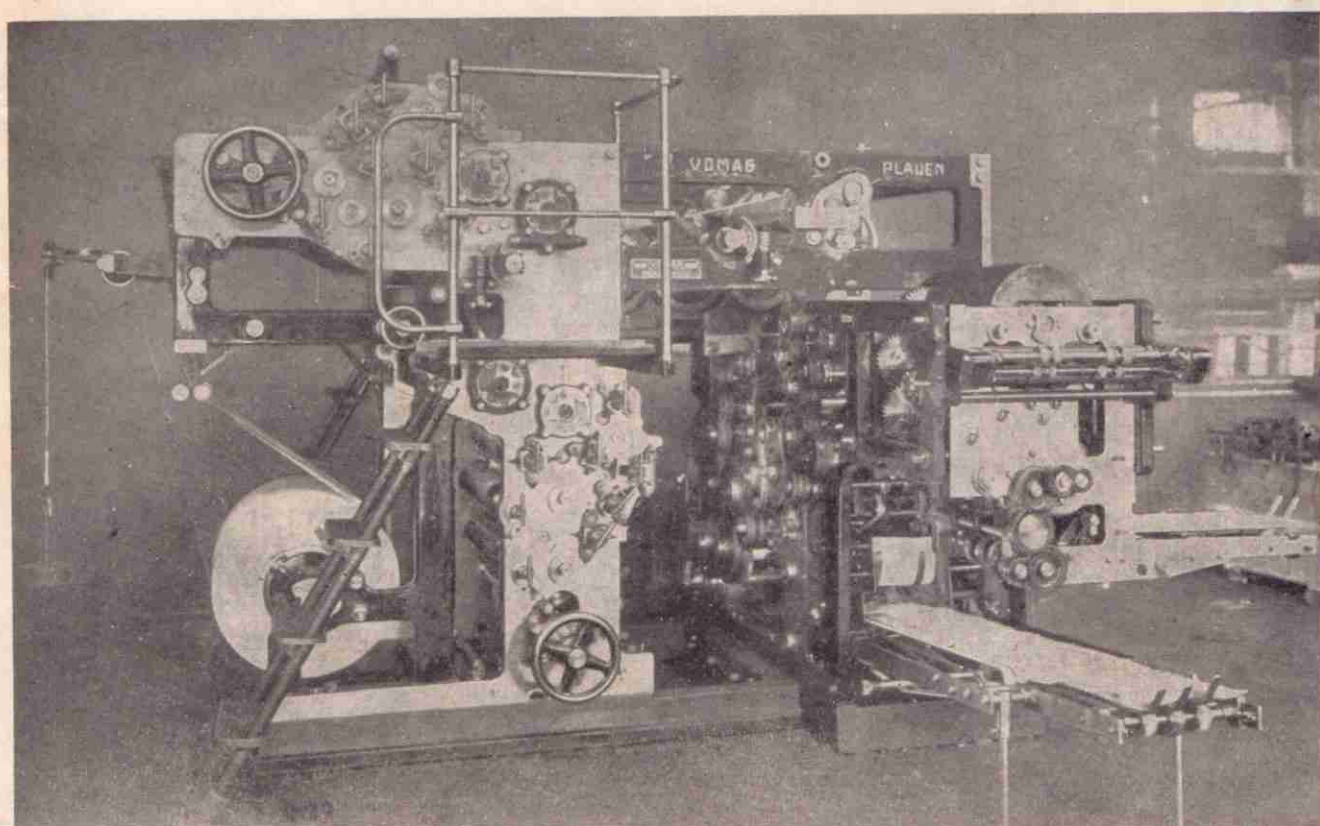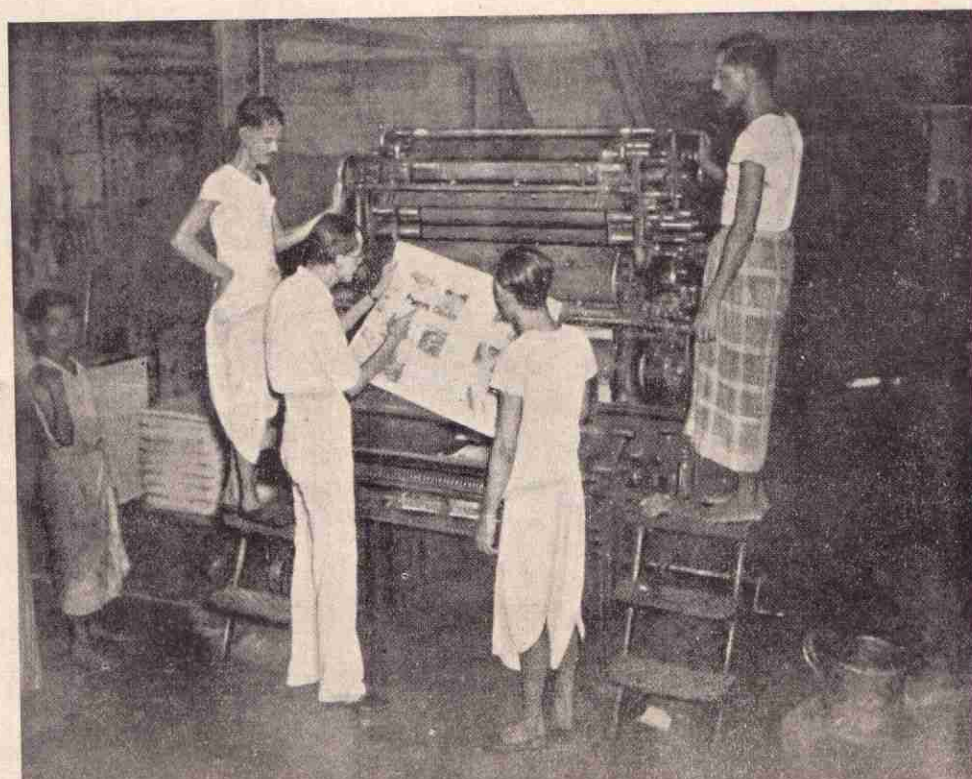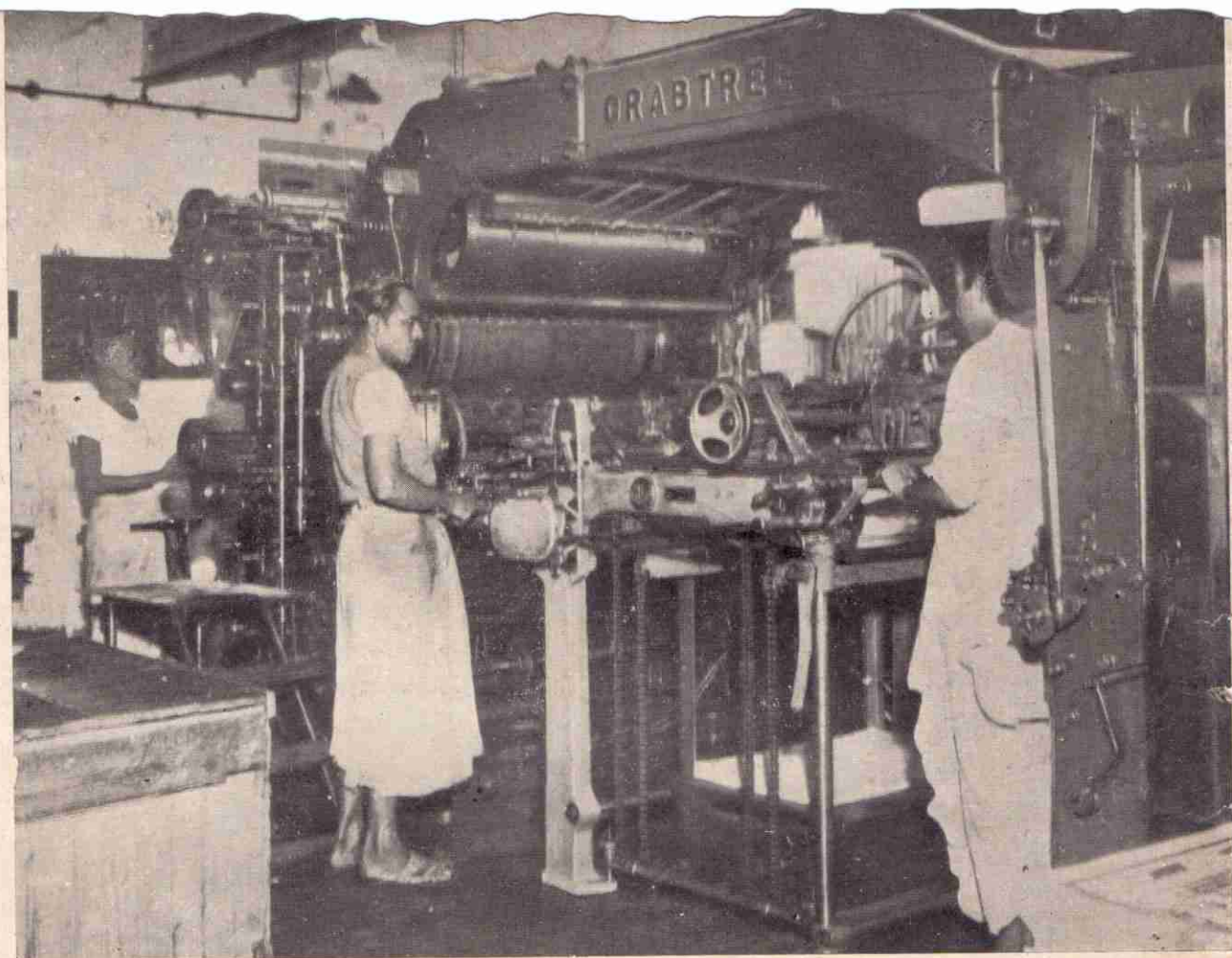
(ऊपर) इंडियन प्रेस लि०, कलकत्ता-शाखा में एक साथ दो रंग छापनेवाली क्रेब्ट्री आफसेट मशीन।

(बाईं ओर) रोलेण्ड आफसेट मशीन।
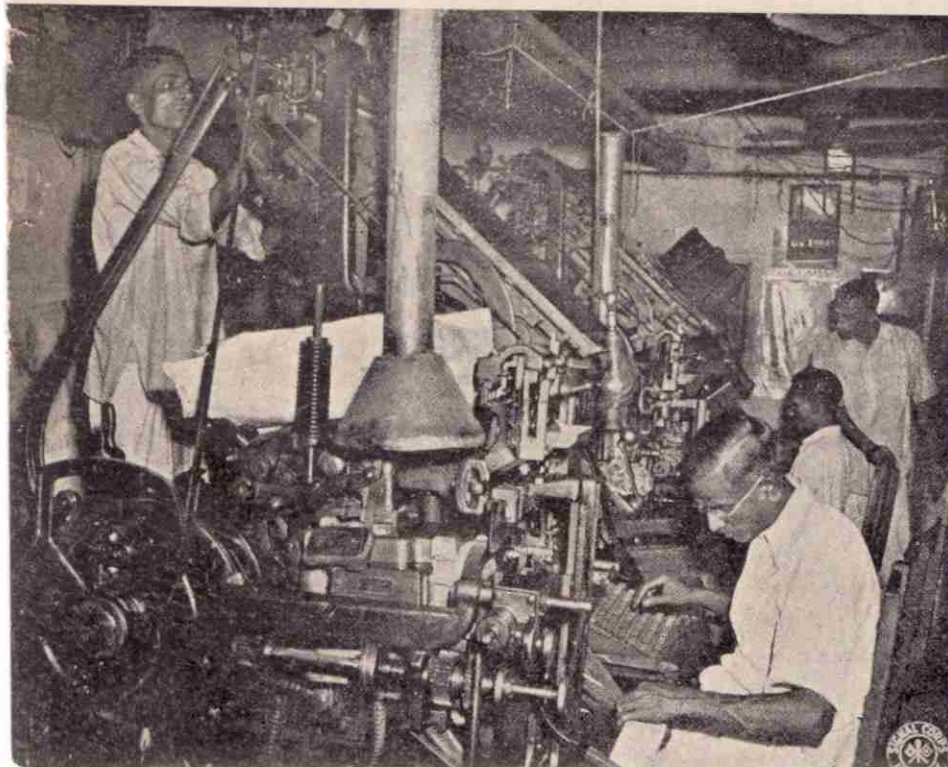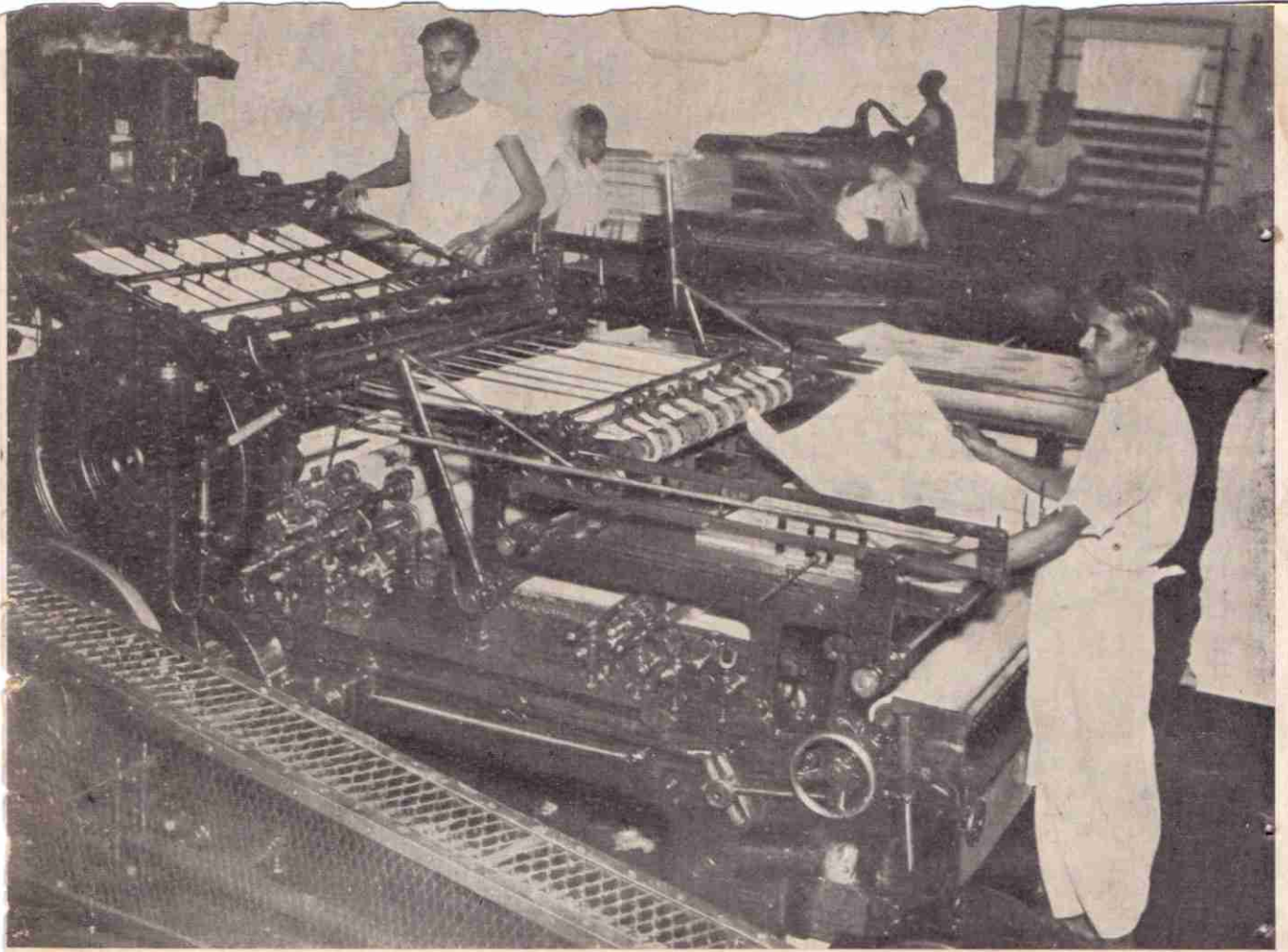
इंडियन प्रेस लि०, कलकत्ता-शाखा में (ऊपर) दो रंगों में एक साथ छपाई करनेवाली मशीन।

(बाईं ओर) इण्टर टाइप और लाइनो मशीन।